स्मृति-सन्दर्भ

सप्तम् भाग

विषयानुक्रमणी तथा श्लोकानुक्रमणी

नागशरण सिंह



नाग प्रकाशक
११ए/यू. ए, जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७

This publication has been brought out with the financial assistance from Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi

नाग प्रकाशक

(१) ११ए/यू. ए. जवाहर नगर, दिल्ली-७
(२) ८ ए/यू. ए. ३ जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७
(३) जलालपुर माफी (चुनार-मिर्जापुर) उ० प्र०

ISBN 81-7081-263-1

थम संस्करण १९९३

मूल्य : रु० ८२-००

ी नागशरण सिंह द्वारा नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली से
ाशित तथा अमर प्रिंटिंग प्रेस, विजय नगर, दिल्ली से मुद्रित।

स्मृति सन्दर्भ

विषयानुक्रमणी तथा श्लोकानुक्रमणी

मनुस्मृति

१. सृष्ट्युत्पत्ति वर्णनम्

२. धर्मतत्त्वविचारवर्णनम् : १२

ब्रह्मचर्य वर्णनम् : १५

कर्तव्याकर्तव्य वर्णनम् : २१

३. स्नातकविवाहकर्म वर्णनम् : ३५

गृहस्थ पञ्चमहायज्ञा : ४१

बलिवैश्यवदेवः : ४३

अतिथि वर्णनम् : ४५

श्राद्धवर्णनम् : ४६

४. गृहस्थाश्रम वर्णनम् : ६१

५. अभक्ष्य वर्णनम् : ८५

भक्ष्याभक्ष्य वर्णनम् : ८९

योऽस्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् ।
एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्विमुच्यते ॥

प्रेत-शुद्धि वर्णनम् : ९०

द्रव्य-शुद्धि वर्णनम् : ९५

शरीर-शुद्धि वर्णनम् : ९७

स्त्री-धर्म वर्णनम् : ९९

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया ।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥

६. वानप्रस्थाश्रम वर्णनम् : १०१

पुत्र प्रत्युदितं सद्भि पूर्वजैश्च महर्षिभिः ।
विश्वजन्यमिमं पुण्यमुपन्यासं निबोधत ॥
भर्तुः पुत्रं विजानन्ति श्रुति द्वैधं तु भर्तरि ।
आहुरुत्पादकं केचिदपरे क्षेत्रिणं विदुः ॥
क्षेत्रभूता स्मृता नारी बीजभूतः स्मृतः पुमान् ।
क्षेत्रबीजसमायोगात्सम्भवः सर्वदेहिनाम् ॥

स्त्रीधर्मपालन वर्णनम् : १७३

दायभाग वर्णनम् : १७९

सम्पत्तिश्राद्धयोरधिकारित्व वर्णनम् : १८१

पुत्रार्थ सम्पत्ति विभाग वर्णनम् : १८३

ऐश्वर्याधिकारिपुत्र वर्णनम् : १८६

अनेक दण्ड वर्णनम् : १९०

राजधर्म दण्ड वर्णनम् : १९३

राज्ञः धर्मपालन वर्णनम् : १९७

प्रायश्चित्त वर्णनम् : २३१

तपमहत्त्वफल वर्णनम् : २३४

१२. कर्मणा शुभाशुभफल वर्णनम् : २३७

कृतकर्मफल वर्णनम् : २४२

धर्मनिर्णय कर्तृक पुरुष वर्णनम् : २४६

नारदीय मनुस्मृति

१. व्यवहार दर्शन विधिः : २५०

२. ऋणादानं प्रथमं विवादपदम् : २५८

१०. क्रीत्वानुशयो नवमं विवादपदम् : २६१

११. समयस्यानपाकर्म दशमं विवादपदम् : २६२

१२. क्षेत्रविवाद एकादश विवादपदम् : २६३

१३. स्त्रीपुंसयोगो द्वादशं विवादपदम् : २६७

१४. दायविभागस्त्रयोदशं विवादपदम् : ३०८

१९. दिव्य प्रकरणम् : ३३०

विशेष — नारदीय-स्मृति में अध्यायक्रम नहीं रहने से प्रकरण ही लिखा गया है।

अत्रिस्मृति

१. आत्मशुद्धिवर्णनम् : ३३६

२. सर्वपाप विमुक्तिः, गायत्रीमन्त्रवर्णनम् : ३३८

३. पूर्वाध्यायरूपं, सर्वपाप प्रायश्चित्तम् : ३३९

४. रहस्यपाप प्रायश्चित्तमगम्यागमन प्रायश्चित्तम् : ३४२

५. विविध प्रकरण वर्णनम् : ३४४

अत्रिस्मृति

स्वर्गसुख प्राप्ति फलवर्णनम् : ३५१

अत्रिसंहिता

धर्मशास्त्रोपदेश वर्णनम् : ३५२

शुद्धिप्रकरणम् : ३६७

शुद्धिस्पर्शादि प्रायश्चित्तम् : ३७१

प्रायश्चित्तम् : ३७३

दान फल वर्णनम् : ३८२

श्राद्धफलवर्णनम् : ३८४

निन्द्यब्राह्मण वर्जनवर्णनम् : ३८६

विशेष—इस संहिता में भी नारदी-स्मृति की तरह छोटे-छोटे प्रकरण हैं।

प्रथम विष्णुस्मृति

१. शौनकम्प्रति राज्ञः प्रश्नोक्तिः, शौनकस्योत्तरम् : ३८९

विष्णुस्मृति

७. सलेखसाक्षिवर्णनम् : ४२३

लिखित का वर्णन, राज साक्षी, गवाही, असाक्षिक वर्णन, संदेहास्पद लेख का निर्णय ।

८. वर्जितसाक्षिलक्षणवर्णनम् : ४२४

जो साक्षी में निषेध हैं उनका वर्णन, कूट साक्षियों का वर्णन, शुद्ध साक्षियों के कहने पर निर्णय करना। जिस विवाद में कूट साक्षी होना निश्चित हो जाय वह विवाद समाप्त कर देना ।

९. समयक्रियावर्णनम् : ४२६

समयक्रिया राजद्रोहादि में शपथ कराने का विवरण, अभियुक्त को दिव्य कराने की प्रक्रिया, सचैल स्नान कराकर तब देवता और ब्राह्मण के आगे शपथ करावे ।

१०. धट (तुला) धर्म वर्णनम् : ४२७

धट या तुला—इसमें पुरुष को बिठावे और उससे यह कहलावे कि ब्रह्म हत्यारे को झूठी गवाही देने में जो नरक होते हैं वह इस तुला में बढ़ें उसके प्रार्थना के मन्त्र बोले । यदि तुला में तौल बढ़ जावे तो उसको सच्चा समझें, यदि घट जावे तो उसे झूठा समझे ।

११. अग्नपरीक्षा वर्णनम् : ४२८

अग्निपरीक्षा—सोलह अङ्गुल के सात मण्डल बनावे और उन मण्डलों को दो हाथ के सूत्रों से वेष्टित कर देवे । पचास पल लोहे को आग में गरम करके उसे हाथ में लेकर सात मण्डलों पर चले फिर लोहे को नीचे रख देवे । जिसका हाथ न जले वह अनपराधी यदि जल जावे तो अपराधी । इसके नीचे अग्नि के मन्त्र लिखे हैं ।

१२. उदकपरीक्षा वर्णनम् : ४३०

उदक (जल में परीक्षा) वहां पर एक आदमी धनुष से एक तीर पानी में डाले । वह आदमी कूदकर उस तीर को लावे । जो पानी के नीचे न दिखलाई दे वह शुद्ध, जो दिखाई दे वह अशुद्ध और मन्त्र वहीं लिखे हैं ।

१३. विषपरीक्षा वर्णनम् : ४३१

विष की परीक्षा—हिमालय के विष को सात जौं के बराबर घी में भिगोकर उसे दिखलावे । जिस पर जहर न चढ़े उसे शुद्ध । इसके प्रकरण में प्रार्थना के मन्त्र लिखे हैं ।

१४. कोषप्रकरण वर्णनम् : ४३१

कोषमान – किसी उग्र देवता के स्नान का उदक तीन अञ्जुली वह पीवे । दो-तीन सप्ताह तक उसके घर में कोई रोग, मरण हो जाय तो उसे अशुद्ध समझे । इसके प्रकरण में प्रार्थना के मन्त्र लिखे हैं ।

१५. द्वादश पुत्र वर्णनम् : ४३२

बारह प्रकार के पुत्र —सबसे पहले औरस, क्षेत्रज, पुत्रिकापुत्र, भाई और पिता के न होने पर लड़की, पुनर्भव, कानीन, गूढ़ोत्पन्न, सहोढ़, दत्तक, क्रीत, स्वयं उपागत, अपविद्ध, परित्यक्त ये बारह प्रकार के पुत्र बतलाये गये हैं । इस अध्याय के अन्तिम श्लोकों में बतलाया है कि पुन्नाम नरक से जो पिता को बचाता है उसे पुत्र कहते हैं ।

१६. जातिवशात्पुत्रभेद वर्णनम् : ४३४

समान वर्णों से जो पुत्र उत्पन्न होते हैं वही पुत्र कहे जाते हैं । अब अनुलोम जो माता के वर्ण से प्रतिलोम ये अनार्य लड़के कहे जाते हैं । उनकी संज्ञा और संकर जाति का विवरण ।

१७. पुत्राभावे सम्पत्ति विभाग(ग्राह्य)वर्णनम् : ४३४

विभाग—अगर पिता विभाग करे तो अपनी इच्छा से कर सकता है । सभी उपार्जित का विभाग करे और पति के विभाग में स्त्री का पूर्ण अधिकार है ।

१८. ब्राह्मणस्य चातुर्वर्णेषु जातपुत्राणां दायविभाग वर्णनम् : ४३६

ब्राह्मण का चारों वर्णों में विवाह होता है और जो बटवारे का कहा गया है वह विभाग बतलाया गया है ।

१९. शवस्पर्शो (दाहसंस्कारार्थ) पुत्रवर्णनम् : ४३८

ब्राह्मण के अग्निदाह का निर्णय किया है ।

२०. दिनरात्रिकालवर्षादीनां वर्णनम् : ४३९

देवताओं का उत्तरायण दिन, दक्षिणायन रात्रि है। सम्वत्सर अहोरात्र है इस प्रकार काल का विभाग बताकर कर्म विपाक बताया गया है और पितृ-क्रिया बताई गई हैं।

२१. अशौचानन्तरं श्राद्धादि वर्णनम् : ४४३

अशौच पूरा होने पर पितृ और अग्निहोत्र वार्षिक श्राद्ध, कुम्भदान आदि का विवरण है।

२२. अशौच निर्णय वर्णनम् : ४४४

अशौच किस जाति का कितने दिन का होता है। किसी का दस दिन का किसी का बारह दिन का।

२३. अन्नद्रव्यादि शुद्धिवर्णनम् : ४४९

वर्तन और अन्नादि की शुद्धि के सम्बन्ध तथा कूप आदि के शुद्धि के विषय—इसमें गाय के सींग का जल और पञ्चगव्य से अन्न में शुद्धि बताई है।

२४. विवाह वर्णनम् : ४५३

ब्राह्मण को चार जाति से विवाह, क्षत्रिय को तीन, वैश्य को दो, शूद्र को एक जाति से विवाह बतलाया है। सगोत्र से विवाह का निषेध। माता से पंचम, पिता से सप्तम कुल में विवाहग्राह्य है। स्त्री के लक्षण और आठ प्रकार के विवाह। अन्तिम में ब्राह्म विवाह का माहात्म्य।

२५. स्त्रीणां सक्षिप्त धर्म वर्णनम् : ४५५

इसमें संक्षिप्त से स्त्रियों के धर्म बताए हैं।

२६. अनेक पत्नीत्वे सति स्वधर्माद्यस्त्री प्राधान्य वर्णनम् : ४५६

जिसकी सवर्णा बहु भार्या हो तो वह धर्म काम ज्येष्ठ पत्नी से करे। हीन जाति की स्त्री से विवाह करने पर उससे उत्पन्न लड़के से दैव कार्य और पितृकार्य नहीं हो सकता।

२७. निषेकादुपनयनपर्यन्तदशसंस्कार वर्णनम् : ४५७

गर्भाधान, पुंसवन संस्कार आदि का वर्णन—उपनयन ब्राह्मण को आठवें, क्षत्रिय को ग्यारहवें और वैश्य को बारहवें वर्ष में करना चाहिए।

२८. गुरुकुले वसन् ब्रह्मचारिणां सदाचार वर्णनम् : ४५८

इसमें ब्रह्मचारी के नियम, गुरुकुल में रहना, गुरु की आज्ञा पर चलना, वेदों को पढ़ना इत्यादि वर्णन किया गया है।

२९. आचार्य (गुरु) कर्तव्यता विधान वर्णनम् : ४६०

इसमें आचार्य, ऋत्विक् के कर्तव्यों का वर्णन है।

३०. वेदाध्ययनेऽनध्यायादि वर्णनम् : ४६१

इसमें श्रावण महीने में उपाकर्म करने का विधान और अन्त में उपाकर्म करने का और शिष्य को उत्पन्न करने वाले पिता से दीक्षा देने वाले गुरु का विशेष महत्त्व और शिष्य के लिए आमरण गुरु सेवा का निर्देश है।

३१. मातापितृ गुरूणाम् शुश्रूषा विधानवर्णनम् : ४६३

मनुष्य के तीन अति गुरु होते हैं—माता, पिता, आचार्य इनकी नित्य सेवा और उनकी आज्ञापालन का वर्णन है।

३२. राजा-ऋत्विक्-अधर्मप्रतिषेधी-उपाध्याय-पितृ-व्यादीना-माचार्यवद्व्यवहारवर्णनम्, तेषां पत्न्योऽपि मातृवत् माननीया-स्तच्छ्रुतिः : ४६४

राजा, ऋत्विक, उपाध्याय, चाचा, ताऊ, मामा, नाना, श्वशुर और ज्येष्ठ भ्राता इनका सम्मान करना चाहिए। अन्त में बतलाया है कि ये क्रम से विद्या, कर्म, अवस्था, बन्धुत्व, धन इनके मान के स्थान हैं।

३३. पुंसां के ते शत्रव स्तद्विचार वर्णनम् : ४६६

काम, क्रोध, लोभ ये तीन मनुष्य के शत्रु हैं और नरक केद्वार बताये गये हैं।

३४. मात्रादि गमन पातक परामर्श वर्णनम् : ४६६

मातृ गमन, दुहिता गमन, स्वसा गमन करने वाले अति पातकी होते हैं। उन्हें आग में जलाना चाहिए।

३५. महापातक परामर्श वर्णनम् : ४६७

महापातक—ब्रह्महत्या, सुरापान, सुवर्णचोरी और गुरुदार गमन और एक वर्ष तक इनके साथ रहता है इनका वर्णन है।

३६. ब्रह्महन्या समाः पातकाः : ४६७

इसमें झूठी गवाही देने वाला, गर्भघाती आदि के पाप बतलाये हैं। जो महापातक के समान पाप होते हैं वे बतलाए हैं।

३७. उपपातक वर्णनम् : ४६६

उपपातक—झूठ कहना, वेदों की और गुरु की निन्दा सुनना इत्यादि उपपात बतलाये हैं।

३८. सकर्तव्यता जातिभ्रंशकरण प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४६६

जातिभ्रंशकरण—जैसे पशु में मैथुन करना इत्यादि।

३९. जीवहिंसाकरणे (संकरीकरणे) दोषस्तत् प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४७०

संकरीकरण—पशु आदि की हिंसा।

४०. अपात्रीकरण (आदानपात्रं) तद्वर्णनम् : ४७०

अपात्रीकरण नीच आदमियों से धन, दान लेना और चक्रवृद्धि आदि से रुपया लेना।

४१. मलिनीकरणं तत्प्रशमनवर्णनम् : ४७०

मलिनीकरण के पाप—पक्षी आदि को मारना।

४२. अकर्तव्या विषये (प्रकीर्ण प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४७१

ब्राह्मण (ब्रह्म नैष्ठिक) के आज्ञा से प्रकीर्ण पातक बड़ा या छोटा जो हो सो प्रायश्चित्त करे।

४३. नरकाणां संज्ञां तेषां वर्णनम् : ४७१

नरक, तामिस्र, अन्धतामिस्रादि—जो पाप करके प्रायश्चित्त नहीं करते उन्हें मरने के बाद इस नरक में जाना पड़ता है।

४४. नरकस्थानां यमयातना निर्णय : ४७३

पापी आदमियों को नरक जाने के अनन्तर तिर्यग् योनि, अति पातकों को स्थावर, और महापातकी को कृमि, उपपातकी को जलज योनि और जातिभ्रंश को जलचर योनि इत्यादि।

जो दूसरे के द्रव्य को हरण करता है उसे अवश्य सर्प की योनि प्राप्त होती है।

४५. नरकोतीर्ण तिर्यग्योन्योर्मनुष्ययोनि वर्णनम्—पापकर्मणा कर्मविपाकेन मनुष्याणां लक्षणानि (चिह्न) वर्णनम् : ४७४

नरक भोगने के बाद और तिर्यग् योनि भोगने के बाद जब मनुष्य योनि में आता है तो उसके क्या निशान हैं। यथा—अतिपातकी कुष्ठी, ब्रह्म-हत्यारा यक्ष्मारोगी, गुरुपत्नीगामी दुष्कर रोग से ग्रसित रहते हैं।

४६. कृच्छ्रादि व्रतविधान वर्णनम् : ४७६

कृच्छ्रव्रत—तीन दिन तक भोजन नहीं करना। सिरसे स्नान करना इसी तरह पर प्राजापत्य—तप्तकृच्छ्र, शीतकृच्छ्र, कृच्छ्रातिकृच्छ्र, उदककृच्छ्र, मूलकृच्छ्र, श्रीफलकृच्छ्र, पराक, सान्तपन, महासान्तपन, अतिसान्तपन, पर्णकृच्छ्र—इनका विधान आया है।

४७. चान्द्रायण व्रतवर्णनम् ग्रासार्थाग्न निर्णय वर्णनम् : ४७७

चान्द्रायण के विधान—इसमें यति चान्द्रायण और सामान्य चान्द्रायणादि का वर्णन आया है।

४८. अन्नदोषार्थ यवेन प्रायश्चित्तम् : ४७८

अपने लिए यव भिगोकर उसकी तीन अंजुली पीवे उससे वेश्या का अन्न, शूद्र के अन्न का दोष हट जाता है।

४९. मार्गशीर्षशुक्लैकादश्युपाख्यान वर्णन, सर्वपाप निवृत्यर्थं वासुदेवार्चन वर्णनम् : ४७९

मार्गशीर्ष शुक्ला ११ में उपवास कर १२ में भगवान् वासुदेव का पूजन पुष्प, धूप आदि से करे। एकादशी व्रत करने से बहुत पाप नष्ट हो जाते हैं। श्रवण नक्षत्र युक्त एकादशी वा पूर्णिमा को एक वर्ष तक व्रत करने से पाप नष्ट हो जाते हैं।

५०. ब्रह्म, गोवधादि प्रायश्चित्तार्थ-वने पर्णकुटी विधान वर्णनम् : ४८०

व्रत का वर्णन—वन में झोपड़ी बनावे और तीन बार स्नान करे और ग्राम-ग्राम में भीख मांगे और घास पर सोवे तथा अपने पाप को कहता जावे। रजस्वला आदि गमन स्त्री आदि पाप नष्ट हो जाते हैं। फल के वृक्षादि, गुल्मादि काटने के पाप भी इस व्रत से नष्ट हो जाते हैं।

५१. सुरापः सर्वकर्मस्वनर्हः मद्यमांसादि निषेधं तच्च सर्व प्रायश्चित्तवर्णनम् : ४८२

सुरापान करने वाला किसी कार्य को या मातृ-पितृ श्राद्ध कर वह एक वर्ष तक कणों को खावे एवं चान्द्रायण व्रत करे। प्याज, लहसुन, वानर, खर, उष्ट्र, गोमांस के भक्षण करने पर भी वही व्रत है। द्विजातियोंको इस व्रत के पश्चात् फिर संस्कार करें। शुष्क मांस के खाने पर भी उपरोक्त

व्रत करे। अभक्ष्य भक्षण करने से जो पाप होते हैं वे सभी इस व्रत से नष्ट हो जाते हैं।

५२. स्वर्णस्तेयिनां तथान्यान्य द्रव्य हर्तॄणां प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४८७

सुवर्णचोरी तथा अन्यान्य द्रव्यचोरी के प्रायश्चित्त का वर्णन है।

५३. अगम्यागमने दोषनिरूपणं प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४८८

अगम्या-गम्य के विषय में प्रायश्चित्त

५४. यः पापात्मा येन सह युज्यते तत्प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४८९

जो जिस पापी के साथ रहता है उसे भी वही प्रायश्चित्त बतलाया है।

५५. रहस्य प्रायश्चित्त विधान वर्णनम् : ४९२

रहस्य पापों का प्रायश्चित, प्रणव का जप, हविष्यांग और प्राणायामादि बतलाया है।

५६. वेदोद्धृतपवित्र मन्त्र वर्णनम् : ४९०

इसमें जप, होम, अघमर्षण, नारायणी सूक्त और पुरुषसूक्त इत्यादि का माहात्म्य बतलाया गया है।

५७. अभोज्यप्रतिग्राह्ययोस्त्याज्य वर्णनम् : ४९४

इसमें त्याज्य मनुष्यों का निर्देश, त्याज्य पुरुषों से दान लेने से ब्राह्मणों का तेज नष्ट हो जाता है।

५८. गृहस्थाश्रमिणस्त्रिविधोऽर्थोपार्जन वर्णनम् : ४९५

इसमें गृहस्थी के तीन प्रकार के अर्थ बतलाये हैं। शुल्क सबल और असित, जो अपनी वृत्ति से धनोपार्जन करते हैं उन्हें शुल्क, दूसरों को ठगकर अपना व्यापार करते हैं उन्हें सबल, तीसरे रिश्वत और सट्टाआदि से रोजगार करने वाले और ब्याज खाने वाले को असित कहते हैं। जिस तरह जो रुपया आता है उसकी गति वैसी ही होती है।

५९. गृहस्थाश्रमिणां कर्तव्यमग्निहोत्रश्च वर्णनम् : ४९६

गृहस्थाश्रमी नित्य हवन करे इस तरह लिखे हुए आचार के अनुसार हवन करने वाले की प्रशंसा की गई है।

६०. सर्वेषां नित्यशौच ब्राह्ममुहूर्तादि कृत्यवर्णनम् : ४९८

६१. दन्तधावन प्रकरण वर्णनम् : ४९९

६२. द्विजातीनां प्राजापत्यादि तीर्थ वर्णनम् ५००

अध्याय ६० से ७१ तक गृहस्थाश्रमी के प्रत्येक दैनिक और पर्व के, घर के उत्सव के, जीवन यात्रा के, आचार, सदाचार, व्यवहार की शिक्षा दी गई है।

अध्याय ७२ से ८६ तक श्राद्ध का वर्णन है।

अध्याय ८७, ८८ में दान वर्णन—उर्ध्वमुखी गाय का दान।

इसमें कार्तिक मास में जितेन्द्रिय व्रत करता हुआ जो स्नान करता है वह मनुष्य सब पापों से छूट जाता है।

मागशीर्ष के चन्द्रमा के उदय में सुवर्ण दान करे उसे रूप और सौभाग्य का लाभ होता है। पौष की पूर्णमा में स्नान औरदान कर कपड़े देवे तो पुष्ट होता है। माघ इत्यादि मासों के पूर्णमासी का व्रत, दान करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

कुआं और तालाब के दान करने वाले सब योनियों में तृप्तरहता है। ब्राह्मण के घर या रास्ते में वृक्ष लगाने से वही फल उसके घर में पुत्र रूप से उत्पन्न होते हैं। जो उनकी छाया में बैठते हैं वे उनके मित्र और सहायक होते हैं। कूपतड़ाग और मन्दिर का जीर्णोद्धार करने वाले को नये बनाने का फल होता है।

सब दान से बड़ा अभय दान है। इसके साथ गोदान, सुवर्ण, लवण, धान्य, आदि दान का महत्व वर्णन आया है। दान केपात्र—गुरु, ब्राह्मण, दुहिता और जामाता हैं।

सम्ववर्त्तस्मृति

ब्रह्मचर्यवर्णनमाचारश्च संक्षेपेण धर्म वर्णनम् : ५४७

कन्याविवाहवर्णनमाशौचवर्णनम्, गोदानमाहात्म्यं : ५५०

आचारव्यवहारयोश्च (दिनचर्या) वर्णनम्, वानप्रस्थ धर्म, यतिधर्म, पापानां प्रायश्चित्तं, सुरापान गोवध और जीवहत्या, प्रायश्चित्तं और अगम्यागमन, दुष्टानां-निष्कृति वर्णनम्, अस्पृश्य-स्पर्श वर्णनम्, अभक्ष्य-भक्ष्ये प्रायश्चित्तं वर्णनम् : ५५६

दक्षस्मृति

अङ्गिरसस्मृति

सवप्रायश्चित्तविधानं, अन्त्यजानां द्रव्यभाण्डेषु जलपानं, अज्ञानवशाज्जलपानं उच्छिष्ट भोजनं नीलवस्त्रधारणं कृत्वा दानादिकरणे प्रत्यवायः, भूमौ नीलवपनाद् द्वादशवर्ष पर्यन्त भूमेरशुद्धिः, गोवधप्रायश्चित्त स्त्रीशुद्धिवर्णनं, अन्नभक्षणेन भेदान्तर पापवर्णनम् द्विविवाहितायाः कन्यायाअन्नभक्षणेन प्रायश्चित्तम्, दोषयुक्त मनुष्यान्न वर्णनम् राजान्नं शूद्रान्नं च तेज वीर्यह्रासकत्वं, सूतकान्नंमलतुल्यं वर्णनं मिति : ५९१

शातातपस्मृति

१. अकृत प्रायश्चित्त वर्णनम् : ५९८

२. कुष्ठ निवारण प्रयोग वर्णनम् : ६०१

सामवेदेन सर्वपाप प्रायश्चित्तम् : ६०३

हन्तृक-फलानाशायोपापवर्णनम् : ६०५

३. प्रकीर्णरोगाणां प्रायश्चित्तम् : ६०७

४. कुलध्वंसकस्य, स्तेयस्य च प्रायश्चित्तम् : ६०९

५. अगम्यागमन प्रायश्चित्तम् : ६१३

६. अनुचित व्यवहारफलम् : ६१६

अगति प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६१८

।। स्मृतिसन्दर्भ प्रथम भाग की विषय-सूची समाप्त ।।

स्मृति सन्दर्भ

द्वितीय भाग

पराशरस्मृति

पराशर संहिता दो उपलब्ध हैं पराशरस्मृति और बृहत्पराशर। पराशर स्मृति में और बृहत्पराशर दोनों में १२ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में दोनों स्मृतियों में एक जैसा वर्णन "कलौपाराशरीस्मृता" है दूसरे अध्याय से बृहत् पराशर में कुछ विशेष बातें और विचार वर्णन किया गया है। पराशरस्मृति किसी देश विशेष, संप्रदाय विशेष, जाति विशेष को लेकर धर्माख्या नहीं करती है, अपि तु मनुष्यमात्र का पथप्रदर्शित यह स्मृति करती है।

१. धर्मोपदेश तथा उनके लक्षण : ६२५

"मानुषाणां हितं धर्मं वर्तमाने कलौयुगे
शौचाचारं यथावच्च वद सत्यवतीसुत !"

[वर्तमान समय में मनुष्यमात्र का जिससे हित हो वह धर्म कहिए और ठीक-ठीक रीति से आचारादि की रीति भी बतला दीजिए—ऋषियों के प्रश्न करने पर व्यासजी ने उत्तर दिया कि कलियुग के सार्वभौम धर्म के विकास करने में अपने पिता पराशरजी की प्रतिभा शक्ति की सामर्थ्य कही। पराशरजी निरन्तर एकान्त बदरिकाश्रम की तपोभूमि में आसीन हैं। तपोमय भूमि में तपस्यारूपी साधन के बिना कलियुग के धर्म, व्यवहार, मर्यादा पद्धति का पर्षदीकरण अबंध सूचित किया ऋषियों ने इस बात पर विचार किया कि कलियुग के मनुष्य किसी धर्म मर्यादा की पर्षद बुलाने की क्षमता नहीं रख सकते हैं यावत् तपोमय जीवन से इन्द्रियों की उपरामता न हो जाए अतः इन्द्रिय भोग विलासिता के जीवन वाले वेद शास्त्रपारंगता प्राप्त करने पर भी धर्म, न्याय विधि को नहीं बना सकते हैं। अतः विधि, नियम रूपी धर्म व्यवहार के लिए तपस्या तथा वनस्थली में राग, द्वेष, आदि का विकास परमावश्यक है। पराशर जी के आश्रम पर व्यास प्रमुख सब ऋषि गए

पराशर जी ने मानवीय सदाचार द्वारा आश्रम में आए हुए सब का स्वागत किया। व्यासजी ने पितृभक्ति से पराशरजी को प्रणाम कर निवेदन किया—
१-१५

'यदि जानासि मे भक्ति स्नेहाद्वा भक्तवत्सल ?
धर्मं कथय मे तात ! अनुग्राह्योह्यं तव" ॥

(पुत्र पिता से सर्वोच्च वस्तु क्या चाहता है यह समुदाचार इस प्रश्न से सरलता से ज्ञात हो रहा है) व्यासजी कहते हैं कि भगवन् ! यदि मेरी भक्ति को आप जानते हैं या मेरे स्नेह को तो मुझे धर्म का उपदेश कीजिए जिससे मैं आपका अनुगृहीत होऊंगा। पुत्र पिता से सबसे बड़ा धन धर्म मांगता है यह भारत की संस्कृति है (एक ओर व्यासजी की पिता की धर्म जिज्ञासा, दूसरी ओर संसार में देखो पैतृक धन संपत्ति पर न्यायालयों में पुत्र पिता पर अभियोग चलाते हैं) इससे सांस्कृतिक जीवन, असांस्कृतिक जीवन का सरलता से ज्ञान हो जाएगा। संस्कृति उसे कहते हैं जिससे धर्म का ज्ञान माता, पिता, गुरु, बन्धुजनों को पूज्य मर्यादामय व्यवहार से कृति हो। व्यासजी ने विनम्र जिज्ञासा की—मनु, वसिष्ठ, कश्यप, गर्ग, गौतम, उशना, हारीत, याज्ञवल्क्य, कात्यायन, प्रचेता, आपस्तम्ब, शंख, लिखित आदि धर्मशास्त्र प्रणेताओं के धर्म निबन्ध सुनने पर भी वर्तमान कलियुग की धर्म-मर्यादा बनाने में अपने को समर्थ समझकर आपके पास इन ऋषियों के साथ आया हूं कलियुग में धर्म को नष्टप्राय देख रहा हूं। अतः आपका तपोमय जीवन ही इस युग धर्म की व्यवस्था दे सकता है। १६-२६

युग चतुष्टय की व्यवस्था धर्म मर्यादा का तारतम्य । २९

दान के प्रकरण में सेवा दान नहीं है वह सेवा का मूल्य है। सत्ययुग में अस्थि में प्राण रहते थे, त्रेता में मांस में, द्वापर से रुधिर में और कलियुग में अन्न में प्राण रहते हैं। ३०

दीर्घ समय तक तपस्या की क्षमता कलियुग के जीवन में नहीं है और अन्न की सावधानी पर ध्यान दिलाया जैसा अन्न खाएगा, उसी प्रकार उसके जीवन की सम्पूर्ण घटना होगी। कलियुग के जीवन की प्रवृत्ति बनाकर ध्यान दिलाया है। 　　३१-३७

आचार धर्मवर्णनम् : ६२६

"आचार भ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुख"।

मनुष्य आचार से च्युत है तो उसे धर्मपराङ्मुख समझना चाहिए। सदाचार विहित धर्म मर्यादा को नहीं जान सकता।

"सन्ध्यास्नानं जपो होम स्वाध्यायो देवतार्च्चनम्।
वैश्वदेवातिथेयञ्च षट्कर्माणि दिने दिने॥ (३९)
षट्कर्माभिरतो नित्यं देवताऽतिथिपूजकः।
हुतशेषन्तु भुञ्जानो ब्राह्मणो नावसीदति"॥ (३८)

षट् कर्म का निरूपण, अतिथि सत्कार वैश्वदेव कर्मादि का निरूपण और अतिथि का लक्षण 　　३८-५८

राजा को प्रजा से सर्वस्व शोषण का निषेध 　　५८-६५

२. गृहस्थाश्रमधर्मवर्णनम् : ६३१

गृहस्थी के धर्माचार का निर्देश 　　१

"षट्कर्म निरतो विप्रः कृषिकर्माणि कारयेत्।
हलमष्टगवं धर्म्यं षड्गवं मध्यमं स्मृतम्॥
चतुर्गवं नृशंसानां द्विगवं वृषघातिनाम्। 　　३
क्षुधितं तृषितं श्रान्तं बलीवर्दं न योजयेत्॥
हीनाङ्गं व्याधितं क्लीबं वृषं विप्रो न वाहयेत्। 　　४
स्थिराङ्गं नीरुजं दृप्तं वृषभं षण्डवर्जितम्॥
वाहयेद्दिवसस्यार्धं पश्चात् स्नानं समाचरेत्"। 　　५

षट्कर्म सम्पन्न विप्र को कृषि कर्म में जुट जाने का आदेश है, किस प्रकार भूमि में हल से जुताई करे, कितने बैलों से हल जोते तथा बैलों को हृष्टपुष्ट बनाना उसका धर्मकार्य और कितने समय तक बैलों को खेती पर जोते जाए इसका

३. अशौच व्यवस्था वर्णनम् : ६३३

४. अनेकविधप्रकरण प्रायश्चित्तम् : ६३९

५. प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६४२

१०. अगम्यागमन प्रायश्चित्तवर्णनम् : ६६६

११. अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्त वर्णनम् : ६७०

शुद्धि-वर्णनम् : ६७३

वृहद पाराशर स्मृति

इसमें १२ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में पराशर संहिता के क्रमानुसार ही विभिन्न अध्यायों में वर्णित आचार प्रायश्चित्त आदि विषयों का वर्णन किया गया है।

१. वर्णाश्रमधर्म वर्णनम् : ६८२

वर्णाश्रम धर्म कलियुग में किस प्रकार से होता है, इस प्रश्न को लेकर व्यास आदि ऋषियों का पराशरजी के पास जाना — १-२०

पराशरजी ने कहा कि वेद और धर्मशास्त्र इन दोनों का कर्ता कोई नहीं है। ब्रह्माजी को जिस प्रकार वेदों का स्मरण हुआ था उसी प्रकार युग-प्रति-युग में मनुजी को धर्मस्मृतियों का स्मरण हुआ। पराशरजी ने कलियुग की विप्लव दशा में खेद प्रगट किया कि धर्म दम्भ के लिए, तपस्या पाखण्ड के लिए एवं बड़े-बड़े प्रवचन लोगों की प्रवंचना (ठगी) के लिए किए जाते हैं। गायों का दूध कम हो जाता है, कृषि में उर्वरा शक्ति कम हो जाती है, स्त्रियों के साथ केवलमात्र रति की कामना से सहवास करते हैं न कि पुत्रोत्पत्ति के लिए। पुरुष स्त्रियों के वशीभूत होते हैं। राजाओं को वंचक अपने वश में कर लेते हैं। धर्म का स्थान पाप ले लेता है। शूद्र ब्राह्मणों का तथा ब्राह्मण शूद्रवत् आचरण करने लगते हैं। धनी लोग अन्याय मार्ग पर चलते हैं। इस प्रकार कलियुग की विषमता पर अत्यन्त खेद प्रगट किया है — २१-३५

धर्मविषयवर्णनम् : ७८६

इसमें आचार वर्णन दिखया और युगों का नाम बताया है। सतयुग को ब्राह्मण युग, त्रेता को क्षत्रिय युग, द्वापर को वैश्य युग तथा कलियुग को शूद्र युग बताया है। वर्णाश्रम धर्म की क्षमता उस भूमि में बताई है जिसमें

कृष्णसार मृग स्वभावतः स्वतंत्रता पूर्वक विचरण करते हैं। हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य देश को पावन देश बताया है और अन्य देश जहां से नदियां साक्षात् समुद्रगामिनी हैं उन्हें भी तीर्थस्थान बताया है। इसमें पराशरजी ने अपने पुत्र व्यास को द्विज कर्म और षट्कर्म वर्ण धर्म की प्रशंसा और गो बृषभ का पालन पशुपालन विधि

षट्कर्म वर्णधर्माश्च प्रशंसा गोवृषस्य च।
अवोह्य-वाह्यौ यौ तत्र क्षीरं क्षीरप्रयोक्त्रिणा॥
अमावस्या निषिद्धानि ततश्च पशुपालनम्॥

२. आचारधर्मवर्णनम् : ६८८

नित्यषट्कर्म, सन्ध्याकृत्य तथा सदाचार कृत्यवर्णनम् ६८९

"कर्मषट्कं प्रवक्ष्यामि, यत्कुर्वन्तो द्विजातयः।
गृहस्था अपि मुच्यन्ते संसारे बन्धहेतुभिः"॥

आचारवर्णनम् : ६८९

सदाचार नित्यकर्म वर्णनम् : ६९९

श्राद्धे तर्पण वर्णनम् ७०४ :

कर्तव्यवर्णनम् : ७०९

चित्तप्रसाव बलरूप तपांसिमेधा,
मायुष्यशौच सुभगत्व मरोगितां च।
ओजस्वितां त्विषमदात् पुरुषस्यचीर्ण,
स्नानं यशो-विभव-सौख्यमलोलुपत्वम् ॥

३. ओंकार मन्त्र वर्णनम् : ७१०

४. गायत्रीमन्त्र पुरश्चरण वर्णनम् : ७१४

यस्याः शिरसि ब्रह्माऽऽस्ते स्कन्धदेशे शिवः स्थितः ।
पृष्ठे नारायणस्तस्थौ श्रुतयश्चरणेषु च ॥
या अन्या देवताः काश्चित्तस्या लोमसुताः स्थिताः ।
सर्वदेवमया गावस्तुष्येत्तद्भक्तितो हरिः ॥

स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं,
संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम् ।
ता एव दत्तास्त्रिदिवं नयन्ति,
गोभिर्नतुल्यं धनमस्ति किञ्चित् ॥

समहत्त्व वृषभ पूजन वर्णनम् : ७४०

हल (वेध) करण वर्णनम् : ७४१

कृषि महत्त्व धर्म वर्णनम् : ७४७

कृषिकृच्छुद्धिकरण तथा कृषिकर्मकरण स सीतायज्ञ वर्णनम् : ७५०

"कृषेरन्यतमोऽधर्मो न लभेत्कृषितोऽन्यतः ।
न सुखं कृषितोऽन्यत्र यदि धर्मेण कर्षति" ।।

कृषि के तुल्य दूसरा कोई धर्म नहीं कोई व्यवहार इतना लाभदायक नहीं। यदि धर्मानुकूल कृषि की जाए तो बड़ा सुख है । १५६-१६५

६. कन्या विवाह वर्णनम् : ७५५

कन्याओं के आठ प्रकार के विवाह होते हैं। अपनी जाति में वर के लक्षण देखकर वस्त्राभूषण से सुसज्जित कर जो कन्या दी जाती है उसको ब्राह्म विवाह कहते हैं। लड़के का लक्षण, तथा नपुंसक का पहचान। यज्ञ करते हुए यज्ञ करने वाले को वस्त्राभूषण से सुसज्जित जो कन्या दी जाती है इसे दैव विवाह कहते हैं। वर कन्या के समान हो और गुणवान, विद्वान हो ऐसे पुरुष को दो गाय के साथ जो कन्या दी जाती है वह आर्ष विवाह होता है। कन्या और वर स्वेच्छा से धर्मचारी हो वह मनुष्य विवाह होता है। जिस जगह पर वर से रुपए की संख्या लेकर कन्या दी जाती है उसे दैत्य विवाह कहते हैं। जहां वर कन्या दोनों अपनी इच्छा पूर्वक विवाह कर ले उसे गान्धर्व विवाह कहते हैं। जहां हरण करके कन्या ले जाई जावे उसे राक्षस विवाह कहते हैं। सोई हुई कन्या को जो मद्य इत्यादि के नशे में जबरदस्ती ले जाया जाए उसे पैशाच विवाह कहते हैं १-१७

विवाह के पहले जिन बातों का विचार करना चाहिए उनका निर्देश किया गया है। १ वर, २ कन्या की जाति, ३ वयस, ४ शक्ति, ५ आरोग्यता, ६ वित्त सम्पत्ति, ७ सम्बन्ध बहुपक्षता तथा अर्थित्व १८

विवाहे वरगुण वर्णनम्

वर के लक्षण १९-२१

सगोत्र की कन्या से विवाह २२

जहां कन्या नहीं देनी चाहिए २३-२७

उन लड़कियों के लक्षण लिखे हैं जिनके साथ विवाह नहीं करना है और कन्यादान करने का जिनका अधिकार है उनका वर्णन २८-३२

लक्ष्मीस्वरूपा स्त्री वर्णनम् : ७५८

गृहस्थधर्म वर्णनम्

वेदविद्विप्रस्य कलाज्ञस्य वर्णनम् : ७६३

षोडश संस्कार माह्निकवर्णनम्

ब्रह्मचर्य वर्णनम् : ८६८

गृहस्थाश्रमे पुत्र वर्णनम् : ७७१

आचार वर्णनम् : ७७३

शौच वर्णनम् : ७७४

प्रतिग्रह (दान) वर्णनम् : ७७५

त्याज्य वर्णनम् : ७७८

अभक्ष्य वर्णनम् : ७८५

८. शुद्धि वर्णनम्: ८२९

प्रायश्चित्त वर्णनम् : ८३५

९. व्रतोपवासविधि वर्णनम् : ८६२

१०. सर्वदान विधि वर्णनम् : ८६६

हयगज दान विधि वर्णनम् : ८८१

भूमिदान वर्णनम् : ८८३

"अश्वत्थमेकं पिचुमन्दमेकं न्यग्रोधमेकं दश चिंचिणीश्च ।
षट् चम्पकं तालशतत्रयं च पञ्चाम्रवृक्षै नरकं न पश्येत्" ॥

११. विनायकशान्तिविधि वर्णनम् : ९०३

ग्रहशान्तिविधि वर्णनम् : ९०६

अद्भुत शान्ति वर्णनम् : ९११

रुद्रपूजाविधि वर्णनम् : ९१४

रुद्रशान्ति वर्णनम् : ९१९

प्रकार—किस स्वरूप में तथा किस जन्म में किस देवता का ध्यान करना इत्यादि का वर्णन। मृत्यु के अनन्तर जीव की दो मार्ग की गति का वर्णन, एक धूम मार्ग दूसरा प्रकाश (अर्चि) मार्ग। एक से ब्रह्म की प्राप्ति और एक से स्वर्ग की प्राप्ति। ब्रह्मयोग की प्राप्ति के साधन का वर्णन ब्रह्म का अभ्यास, ध्यान और प्रत्याहार का वर्णन तथा यह बताया है कि "मृत्युकाले मतिर्यास्यात्तां गतियाति मानवः"। इसलिए मुमुक्षु को नित्य ऐसा अभ्यास करना चाहिए जिससे अन्त समय ब्रह्म ज्ञान का अभ्यास बना रहे। २४३-३७८

लघुहारीत स्मृति

४. गृहस्थाश्रम धर्मवर्णनम् : ६८१

५. वानप्रस्थाश्रम धर्मवर्णनम् : ९८८

६. संन्याश्रम धर्मवर्णनम् : ९८९

७. योगवर्णनम् : ९९२

वृद्ध हारीत स्मृति

६. भगवतः यात्रोत्सवर्णनम् : ११२७

महापातकादि प्रायश्चित्त वर्णनम् ११४३

रहस्य प्रायश्चित्तवर्णनम् ११५३

महापापादि प्रायश्चित्त प्रकरण वर्णनम् ११६०

७ नानाविधोत्सव विधानवर्णनम् : ११६६

८. विष्णु पूजा विधिवर्णनम् : १२०१

पौराणिक तथा स्मृति के मन्त्रों से भगवान् विष्णु का पूजन और नवधा भक्ति का वर्णन, ध्यान जप, मन्त्र जप का वर्णन तप्तचक्रांक धारण का माहात्म्य और वैष्णव धर्म वालों की प्रशस्ति बताई है।

''दानं दमः तपः शौचं आर्जवं शान्तिरेव च
आनृशंसं सतां संग पारमैकान्त्य हेतवः।
वैष्णवः परमैकान्तो नेतरो वैष्णवःस्मृतः ॥

पूजा का माहात्म्य और भिन्न-भिन्न प्रकार से जो भगवान् विष्णु की पूजा उत्सव यज्ञ दान बताये हैं, इन सबका तात्पर्य यह है कि भक्त पर विष्णु भगवान् की कृपा हो जाय जिस पर वैष्णव संस्कारों से विष्णु भगवान् की कृपा या आशीर्वाद हो जाता है उनका जीवन-चरित्र ऐसा होता है—दान करना, दम इन्द्रियों का दमन, तप तपस्या, शौच पवित्रता, आर्जव सरलता, शान्ति क्षमा, आनृशंसं सत्य वचन सज्जनों का संग परमेकान्त में रहना से वैष्णव के चिह्न हैं ९१-३५१

बृहत् हारीत स्मृति में स्मृति-प्रतिपाद्य आचार;व्यवहार प्रायश्चित्त के समुचित निर्णय के अतिरिक्त वैष्णवाचार, वैष्णवोपासना विष्णु इष्टी, विष्णु पूजन सांग सावरण; वैष्णव पूजा उत्सव; रथयात्रा एकादश्यादि व्रतोद्यापन; मण्डप-रचना आदि का सुचारु विधान निरूपण किया है ।

स्मृति संदर्भ

तृतीय भाग

याज्ञवल्क्य स्मृति

याज्ञवल्क्य स्मृति में तीन अध्याय हैं। प्रथमाध्याय में संस्कार आश्रम, ग्रह शान्ति आदि, द्वितीयाध्याय में राजधर्म, व्रतधर्म राजसभा, वादिप्रतिवादि का निर्णय, व्यवहार के भेद, गृहस्थ धर्म, दण्डनीति, दायभाग आदि, तृतीयाध्याय में सूतक, अशौच, पाप, पापों का प्रायश्चित्त, वानप्रस्थ और संन्यास के धर्मों का वर्णन है।

१. आचाराध्यायः—उपोद्घात प्रकरण वर्णनम् : १२३५

ब्रह्मचारिप्रकरण वर्णनम् : १२३६

विवाह प्रकरण वर्णनम् : १२४०

श्राद्धप्रकरणवर्णनम् : १२५५

विनायकादिकल्पप्रकरणवर्णनम् : १२६०

ग्रहशान्तिप्रकरणवर्णनम् : १२६२

राजधर्म प्रकरण वर्णनम् : १२६३

२. व्यवहाराध्यायः

सामान्यन्याय प्रकरणम्···१२६९

हस्ताक्षर कर दे एवं अपना तथा अपने पिता का नाम लिख दे। लेख बिना साक्षी के भी हो सकता है जो अपने हाथ से लिखा हुआ हो किन्तु वह बलपूर्वक लिखाया हुआ न हो। रुपया जितना देता जाए उस कागज के पीछे लिखता जाय। धन चुक जाने पर उस कागज को फ़ाड़ देवे या साक्षी के सामने ऋणी को वापस दे दें ८६-९६

दिव्य प्रकरणम्...१२७९

जब कोई साक्षी आदि प्रमाण न मिले तब दिव्य कराया जाता है।

दिव्य कितने प्रकार के होते हैं —

१—तुला, २—अग्नि, ३—जल, ४—विष, ५—कोश। ये दिव्य बड़े मामलों में किये जाते हैं छोटे व्यवहार में नहीं। १ तुला—तराजू बनाकर तोला जाता है जो तोलने पर ऊपर या नीचे जाता है उसकी विधि पुस्तक में लिखी है। २ अग्नि—लोहे के गोले को गरम कर दोनों हाथों में लेकर चलना होता है जो शुद्ध हो उसके हाथ नहीं जलते हैं। ३ जल—नाभी मात्र गहरे जल में तीर डालकर धुलाना पड़ता है। ४ विष--शुद्ध को खिलाने पर उसे जहर नहीं लगता। ५ कोश—किसी देवता का जल पिलाने से उसको अगर चौदह दिनों तक अनिष्ट नहीं हुआ तो शुद्ध समझा जाता है। ९७-११५

दायविभाग प्रकरणम् १२८१

पिता को अपनी इच्छा से विभाजन करने का अधिकार है ११६-११८

पिता के बाद भाई अपने आप विभाग किस प्रकार से करे और जो धन अविभाज्य है उसका वर्णन ११९-१२१

भाईयों का बटवारा और भाईयों के लड़कों का विभाग उसके पिता के नाम से होगा। जिन-जिन भाईयों का संस्कार नहीं हुआ उनका पैतृक धन से संस्कार और निर्वाह—बहनों को अपने हिस्से से चौथाई देकर विवाह करे १२२-१२७

जाति विभाग से बटवारा १२८-१३०

बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन १३१-१३५

सीमाविवादप्रकरणवर्णनम्—१२८५

स्वामिपालविवादप्रकरणवर्णनम्—१२८६

अस्वामिविक्रयप्रकरणवर्णनम्—१२८७

के धन को दूसरा आदमी बेच लेवे तो धनवाले को मिल जाय और खरीददार अपना मूल्य ले जावे। खोया हुआ या गिरा हुआ द्रव्य किसी को मिल जाय तो उस वस्तु को पुलिस में जमा न करने पर पाने वाला दोष का भागी होता है। एक मास तक कोई न लेवे तो वह धन राजा का हो जाता है १७१-१७७

दत्ताप्रदानिकप्रकरणवर्णनम् -- १२८८

अपने घर में जिस वस्तु को देने से विरोध न हो तथा स्त्री और बच्चों को छोड़कर गृहपति सब दान में दे सकता है। सन्तान होने पर सब दान नहीं कर सकता है तथा दी हुई वस्तु फिर दान नहीं हो सकती। १७८-१७९

क्रीतानुशयप्रकरणवर्णनम् : १२८८

क्रीतानुशय अर्थात् मूल्य लेने पर वापस किया जा सकता है। दस दिन तक बीज (अन्न) लौटाया जा सकता है। लोहे की चीजें एक दिन, बैल लेने पर पांच दिन, रत्न की परीक्षा आठ दिन तक, गाय तथा अन्य जीव जन्तु तीन दिन तक, सोना आग में तपाने पर घटता नहीं है और चांदी दो पल कम हो जाएगी इस प्रकार खरीदी हुई वस्तु तीन दिन तक वापस की जा सकती है १८०-१८४

संवित् व्यतिक्रम (अपने निश्चय को तोड़ना) जैसे बल पूर्वक किसी को पकड़कर गुलाम बना लिया हो।

निजधर्माविरोधेन यस्तु सामयिको भवेत्।
सोऽपि यत्नेन संरक्ष्यो धर्मो राजकृतश्च यः॥

अपने धर्म से मिला हुआ जो समय का धर्म और राजा के धर्म को भी पालन करना चाहिए। जो समुदाय का धन ले और जो अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ दे उसका सब कुछ छीनकर देश से निकाल देवे १८५-१९५

वेतनदानप्रकरणवर्णनम् : १२९०

जो पहले वेतन ले ले और समय पर उस काम को छोड़ दे उस से दूना धन लेना चाहिए १९६-२०१

द्यूतसमाह्वयप्रकरणवर्णनम् : १२६१

चोरों को पहचानने के लिए जूआ किसी स्थान पर करवाया जाता है और उसमें जीतने वाले से राजा के लिए दस रुपया ले लेना चाहिए २०२-२०६

वाक्पारुष्यप्रकरणवर्णनम् : १२६१

वाक् पारुष्य (अपशब्द कहने का दण्ड) इसी प्रकार पातक तथा उपपातक को दण्ड के उपयोग हैं २०७-२१४

किसी पर लाठी चलाना या किसी चीज से पीड़ा पहुंचाना पशुओं के अंगच्छेदन करना, पशु की इन्द्रिय काटना, और पेड़ों की टहनियों को काटना २१५-२३२

साहस प्रकरण वर्णनम् : १२६४

बलपूर्वक किसी की वस्तु को छीनना इसको साहस कहते हैं। जो जितने मूल्य की वस्तु छीन कर ले जावे उसको उससे दूना दण्ड दिलवाना चाहिए तथा छिपाने पर चार गुना दण्ड। स्वच्छन्दता से किसी विधवा स्त्री के साथ गमन करने वाला या बिना किसी कारण किसी को गाली देने वाला और झूठी शपथ करने वाला तथा जिस काम के योग्य न हो उसको करने को तैयार हो जाना एवं दासी के गर्भ को नष्ट कर देना, पशु के लिङ्ग को काट देना, पिता पुत्र गुरु और स्त्री को छोड़ने वाले को सौ पल दण्ड का विधान बताया है। धोबी दूसरे के कपड़ों को अपने पास रखे तो उसको तीन पल दण्ड। पिता और पुत्र की लड़ाई में जो गवाही देवे उसे तीन पल दण्ड। तराजू और बाटों को जो छल कपट से बना कर व्यवहार करे तो उसे पूरा दण्ड। जो कपट को सत्य कहे और सत्य को कपट कहे उसे भी साहस प्रकरण का दण्ड। जो वैद्य झूठी दवा बनावे उसको भी दण्ड। जो कर्मचारी अपराधी को छोड़ देवे उसको दण्ड। जो मूल्य लेकर वस्तु को नहीं देता है उसको भी दण्ड २३३-२६१

सम्भूयसमुत्थानप्रकरणम् : १२६७

कई आदमी मिलकर जो व्यापार करते हैं उनको उस व्यापार में

लाभ और हानि बराबर उठानी पड़ेगी। या उन लोगों ने पहले जो प्रतिज्ञा कर ली हो २६२-२६८

स्तेयप्रकरणवर्णनम् : १२९८

चोर को पकड़ने वाले को पहले उसके पैरों के चिह्न से या पहले जो चोरी में पकड़े गए हों, जुआरी, वेश्यागामी तथा शराबी और बात में अटपट करे तो उनको पकड़ लेना चाहिए। चोरी में पूछने पर जो सफाई नहीं दे उसे चोरी का दण्ड दिया जाता है। चोर को भिन्न भिन्न प्रकार से ताड़ना देकर चोरी पूछ लेनी चाहिए।

विषाग्निदां पतिगुरुनिजापत्यप्रमापिणीम्।
विकर्णकरनासोष्ठीं कृत्वा गोभिः प्रमापयेत् ॥

विष देनेवाली, अग्नि लगानेवाली, पति, गुरु और अपने बच्चों को मारनेवाली स्त्री के नाक कान काटकर जल में बहा देना चाहिए।

क्षेत्रवेश्मवनग्रामविवीतखलदाहकाः।
राजपत्न्यभिगामी च दग्धव्यास्तु कटाग्निना ॥

खेत, मकान और ग्राम इनको जलाने वाले को और राजा की स्त्री के साथ गमन करने वाले को आग में जला देना चाहिए २६९-२८५

स्त्रीसंग्रहणप्रकरणवर्णनम् : १३००

किसी स्त्री के केशों को पकड़ने या करधनी या स्तन मरदन करना या अनुचित हंसी करना ये चिह्न व्यभिचार के समझे जायेंगे। स्त्री के ना करने पर जबरदस्ती हाथ लगावे तो सौ पल और पुरुष के ना करने पर दुगुना दण्ड। किसी अलंकृत कन्या को हरण करे उसको कड़ा दण्ड यदि लड़की की इच्छा हो तो दण्ड नहीं होता है। पशु के साथ व्यभिचार करने वाले को सौ पल दण्ड। नौकरानी के साथ व्यभिचार करने वाले को दण्ड। जो वेश्या पैसा लेकर बाद में रोके तो उसे दूना दण्ड। किसी लड़के से या किसी साधुनी के साथ अप्राकृतिक मैथुन करने वाले को चौबीस पल दण्ड। राजा की आज्ञा में रहकर जो कम या विशेष लिखे उसको दण्ड। छल से खोटे सिक्के

सोने को बेचने वाले तथा मांस के बेचने वाले को अङ्ग हीन करना चाहिए जो स्त्री अपने जार को चोर कहकर भगा देवे उसे पांच सौ पल दण्ड देना चाहिए। राजा के अनिष्ट कहने वाले को या राजा के भेद को खोलने वाले की जिह्वा काट लेनी चाहिए　　२८६-३१०

३. आशौचप्रकरणवर्णनम् : १३०३

दो वर्ष से कम उम्र के बच्चे को भूमि में गाड़ देना चाहिए। बच्चे के मरने पर सातवें या दसवें दिन दूध देना चाहिए　　१-६

किसी के मरने पर यदि उसी दिन घर में दूसरे का जन्म हो जाए तो पहले के सूतक से वह शुद्ध हो जाएगा। राजाओं को और यज्ञ में बैठे हुए ऋषियों को सूतक नहीं लगता है।　　७-३४

आपद्धर्मप्रकरणवर्णनम् : १३०७

आपत्ति में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कर्म से निर्वाह कर सकता है। परन्तु मांस तिल आदि आपत्ति में भी न बेचे।

लाक्षालवणमांसानि पतनीयानि विक्रये।
पयोदधि च मद्यञ्च हीनवर्णकराणि च॥

अर्थात् लाख, लवण और मांस बेचने से पतित हो जाता है। कृषि, शिल्प, नौकरी, चक्रवृद्धि, इक्का हांकना और भीख मांगना इनसे आपत्ति काल में जीवन निर्वाह कर सकता है　　३५-४४

वानप्रस्थधर्मप्रकरणवर्णनम् : १३०८

वानप्रस्थ स्त्री को अपने साथ ले जाए या अपनी सन्तान के पास छोड़ दे। वानप्रस्थ इन्द्रियों को दमन करने वाला, प्रतिग्रह न लेने वाला, स्वाध्याय करने वाला होना चाहिए। चान्द्रायण आदि से समय व्यतीत करे, वर्षा में ठण्डी जगह रहे, हेमन्त में गीले कपड़ों से रहे अर्थात् जितनी शक्ति हो उसी हिसाब से वन में तपस्या करता रहे　　४५-५५

यतिधर्मप्रकरणवर्णनम् १३०९

यति सम्पूर्ण प्राणीमात्र का हित करनेवाला, शान्त और दण्ड धारण करनेवाला हो। यति के सब पात्र बांस और मिट्टी के होते हैं इनकी शुद्धि जल से हो जाती है। यति को राग

द्वेष का त्याग कर अपने आप की शुद्धि जिससे आत्मज्ञान का विकास हो ऐसा करना चाहिये ।

सत्यमस्तेयमक्रोधो ह्रीः शौचं धीर्धृतिर्दमः ।
संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सार्व उदाहृतः ॥

सत्य, अस्तेय, अक्रोध, पवित्रादि में सब धर्म बतलाये हैं ४६-६६

अध्यात्म ज्ञान का प्रकरण आया है । जैसे तप्त लोह पिण्ड से चिनगारी निकलती है उसी प्रकार उस प्रकाश पुंज आत्मा से यह समष्टि व्यष्टि संसार रूपी चिनगारी निकलती है । आत्मा अजर अमर है शरीर में आने से इसे जन्म लेना कहते हैं । सूर्य की तपन से वृष्टि फिर औषधि तथा अन्न होकर शुक्र हो जाता है । स्त्री पुरुष के संयोग से यह पञ्च-धातुमय शरीर पैदा होता है । एक एक तत्त्व से शरीर की एक एक चीज का बनना लिखा है । चौथे महीने में पिण्डाकार बनता है तथा पाचवें में अंग बनने लग जाते हैं । छठे महीने में बाल, नख, रोम और सातवें आठवें में चमड़ा, मांस बनकर स्मृति पैदा हो जाती है । इस प्रकार जन्म मरण के दु:ख को दिखाया गया है । मनुष्य शरीर में कितनी नस कितनी धमनीं तथा मर्मस्थान हैं इन सबका वर्णन कर शरीर को अस्थिर अनित्य नाशवान बतला कर मोक्ष मार्ग में लगने का उपदेश किया गया है । योगशास्त्र, उपनिषदों के पठन एवं वीणा वादन से मन की एकाग्रता बताई है ।

वीणवादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।
तत्त्वज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ॥

वीणा वादन के तत्त्व को जाननेवाला और ताल के ज्ञानवाला मोक्ष मार्ग पा लेता है । इस प्रकार मोक्ष मार्ग के साधन और संसार के अनित्य सुखों के वैराग्य का वर्णन तथा कुण्डलिनी योग, ध्यान, धारणा और सत्य की उपासना एवं वेद का अभ्यास वताकर जीवन यात्रा का श्रेय नीचे लिखे श्लोक में स्पष्ट किया है—

न्यायागतधनस्तत्त्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः ।
श्राद्धकृत् सत्यवादी च गृहस्थोऽपि हि मुच्यते ॥

न्याय से आये हुए धन से जीवन बितानेवाला, तत्त्व ज्ञान में जिसकी निष्ठा हो, अतिथि सत्कार तथा श्राद्ध करनेवाला, सत्यवादी गृहस्थी भी इस जन्ममरण से छूट जाता है ६७-२०५

प्रायश्चितप्रकरणवर्णनम् १३२३

पापी महापापी कर्म के अनुसार नरक भोगने के अनन्तर जब मनुष्य योनि में आते हैं तब ब्रह्महत्यारा जन्म से ही क्षय रोगी होता है। परस्त्री को हरने वाला, ब्राह्मण के धन को हरने वाला ब्रह्मराक्षस होता है। जो पाप को समझने पर भी प्रायश्चित्त नहीं करते है वे रौरव नरक में जाते हैं। इस प्रकार महानरकों का वर्णन आया है। महापापी चार हैं— ब्रह्म हत्यारा, सोने को चुराने वाला, गुरु की स्त्री से गमन करने वाला और मद्य पीनेवाला तथा जो इनके साथ रहता है वह भी महापातकी होता है। इसके बाद आगे के श्लोकों में उपपातकों की गणना की है। महापातकी को आमरणान्त प्रायश्चित्त बतलाया है अन्य पापों की शुद्धि के लिये चान्द्रायण आदि व्रत बतलाये हैं। गर्भपात और भर्तृहिंसा स्त्री के लिए महापाप है। शरणागत को मारने वाले, बच्चों को मारनेवाले, स्त्री के हिंसक और कृतघ्न की कभी शुद्धि नहीं होती है। सान्तपन कृच्छ्र, पर्णकृच्छ्र, पादकृच्छ्र, तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, कृच्छ्रातिकृच्छ्र, तुला पुरुष, चान्द्रायण व्रत और कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रत बतलाये गये हैं। ऋषिणों ने याज्ञवल्क्य से धर्मों को सुनकर यह कहा कि जो इसको धारण करेगा वह इस लोक में यश को प्राप्त कर अन्त में स्वर्गलोक को प्राप्त होगा। जो जिस कामना से धारण करेगा उसकी कामनायें पूर्ण सफल होंगी। ब्राह्मण इसको जानने से सत्पात्र, क्षत्रिय विजयी, वैश्य धनधान्य सम्पन्न, विद्यार्थी विद्यावान् होता है। इसको जानने और मनन करने से अश्वमेध यश के फल को प्राप्त होता है २०६-३३४

कात्यायन स्मृति

आपस्तम्बस्मृति के प्रधान विषय

—o—

लघुशङ्खस्मृति

शङ्खस्मृति

१७. क्षत्रियादिवधे-यवाद्यपहारे-व्रतवर्णनम् : १४४७

गोश्चक्षीरं विवत्सायाः संधिन्याश्च तथा पयः ।
संधिन्यमेध्यं भक्षित्वा पक्षन्तु व्रतमाचरेत् ॥ २९ ॥
क्षीराणि यान्यभक्ष्याणि तद्विकाराशने बुधः ।
सप्तरात्रं व्रतं कुर्याद्यदेतच्चपरिकीर्तितम् ॥ ३० ॥

१८. अघमर्षण, पराक, वारुणकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, सान्तपनादिव्रत : १४५३

—०—

लिखितस्मृति

१. इष्टापूर्तकर्मवृषोत्सर्गगयापिण्डदानषोडश श्राद्धानांवर्णनम् : १४५५

शङ्खलिखित स्मृति

१. वैश्वदेवमकृत्वैवभुञ्जानस्यकाकयोनिवर्णनम् : १४६४

परान्नं परवस्त्रं च परयानं परास्त्रियः ।
परवेश्मनि वासश्च शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥

वशिष्ठ स्मृति

२१. ब्राह्मणीगमने शूद्रवैश्यक्षत्रियाणां प्रायश्चित्त १५२४

प्रतिलोम विवाह में उग्र प्रायश्चित्त, यथा शूद्र पुरुष ब्राह्मणी के साथ सहवास करे उस शूद्र को अग्नि में जला देना। इस प्रायश्चित्त के देखने से विचार होता है शिष्ट शान्ति प्रधान धर्म प्रवक्ता होने पर भी प्रतिलोम विवाह पर अपने उग्र विचार को प्रकट करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि प्रतिलोम सन्तान से संस्कृति का नाश हो जाता है। संस्कृति के नाश से राष्ट्र का नाश अवश्यम्भावी है १-३६

२२. अयाज्ययाजनादि प्रायश्चित्त १५२७

यज्ञ करने में जिन असंस्कृत पुरुषों का अधिकार नहीं है और लोभवश जो ब्राह्मण उनसे यज्ञ करावें उस यज्ञ से सृष्टि में उत्पात होने के कारण उन ब्राह्मणों को प्रायश्चित्त करने को लिखा है १-१०

२३. ब्रह्मचारिणः स्त्रीगमने प्रायश्चित्त १५२८

ब्रह्मचारी को स्त्री समागम होने से पातित्य का प्रायश्चित। भ्रूण हत्या, कुत्ता के काटने पर, पतित चाण्डाल से सम्बन्ध करने पर कृच्छ्र व्रत, चान्द्रायणादि व्रतों की व्यवस्था बताई है १-४३

२४. कृच्छ्रातिकृच्छ्रविधिवर्णनम् : १५३२

कृच्छ्रातिकृच्छ्र चान्द्रायण की परिभाषा १-८

२५. रहस्यप्रायश्चित्तवर्णनम् : १५३२

अविख्यापितदोषाणां पापानां महतां तथा।
सर्वेषां चोपपापानां शुद्धि वक्ष्याम्यशेषतः॥

गुप्त रखे हुए जो अपने पाप हैं उन रहस्य पापों का पृथक् पृथक् प्रायश्चित्त बताए हैं १-१२

२६. साधारणपापक्षयोपायविधान : १५३४

प्राणायाम, सन्ध्या, जप, सावित्री जप, पुरुष सूक्त आदि से पापों के क्षय होने का वर्णन किया है। धर्मशास्त्र के पढ़ने से पापक्षय होता है ऐसा बताया है १-२०

—o—

औशनस संहिता

औशनस स्मृति

१. ब्रह्मचारिणांक्रमागतकर्तव्यवर्णनम् : १५४६

इस अध्याय में शौनकादि ऋषियों ने भार्गव को विनम्र भाव से प्रणाम कर धर्मशास्त्र का निर्णय पूछा। उत्तर में औशनस ने सांस्कृतिक जीवन का स्तर विधिवत् उपनयन वेदाध्ययन से प्रारम्भ कर मनुष्य के आचरण का चित्रण वैज्ञानिक भित्ति पर किया जिस प्रकार के संस्कृत जीवन से मनुष्यता का सच्चा विकास हो जाए १-६४

२. ब्रह्मचारिप्रकरण शौचाचारवर्णनम् : १५५६

किस किस समय आचमन कर शुद्ध होना चाहिए यहां से प्रारम्भ कर ब्रह्मचारी के सम्पूर्ण कर्म शौचाचार ब्रह्मचारी की शिक्षा पद्धति का सुचारु निरूपण किया है।

३. ब्रह्मचारिप्रकरणे शौचाचारवर्णनम्

विद्या पढ़ने की विधि, गुरु के प्रति व्यवहार, ब्रह्मचारी के धर्म, वेदाध्ययन की आवश्यकता स्वाध्यायी ब्रह्मगति को प्राप्त करता है। भोजन की विधि, पञ्च प्राणाहुति की विधि, प्रातः कृत्य का विधान, पिण्डदान का माहात्म्य बताया है। अमावास्या अष्टका आदि श्राद्धकाल, पात्र ब्राह्मणश्राद्धकाल, अस्थि संचयन, गया श्राद्ध माहात्म्य किस अन्न से पितरों की कितने काल तक तृप्ति होती है। श्राद्ध में किस किस अन्न को वर्जित किया है। पिण्डोदक नवश्राद्ध आदि का विस्तृत वर्णन किया है १-१४७

४. श्राद्धप्रकरणवर्णनम् : १५७४

श्राद्ध में कैसे ब्राह्मणों को आमन्त्रण करना तथा उनके लक्षण। मूर्ख ब्राह्मणों को भोजन कराने पर पितरों का पतन आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है १-३६

५. श्राद्धप्रकरणवर्णनम् : १५७८

पिण्डदान विधि और उसके मन्त्र विस्तार से बताए गए हैं १-९९

२. कर्तव्यकर्म, शरीरशुद्धि, नित्यकर्म, पञ्चमहायज्ञ तथा भोजन आदि अनेक प्रकरणवर्णनम् : १६२६

नित्यकम का विधान, देव यज्ञ, पितृ यज्ञादि, पञ्च यज्ञ, जप करने की विधि तथा जपमाला कैसी और किस वस्तु की होनी चाहिए यह बताया गया है। तीर्थस्नान एवं अघमर्षण सूक्त का माहात्म्य। शिवपूजन मन्त्र, वैश्वदेव कर्म भूतबलि, अतिथि का पूजन, भोजन करने का नियम,काल, ग्रहण काल में भोजन करने का निषेध, शयन का नियम, कैसी शय्या होनी चाहिए तथा किस ओर सिर करना इत्यादि मानवाचार का विशदीकरण किया गया है १-९२

—०—

वेदव्यास स्मृति

१. धर्माचरणदेशप्रयुक्त-वर्ण-षोडशसंस्कारवर्णनम् : १६३१

वण विभाग अनुलोम प्रतिलोमों की भिन्न-भिन्न जाति की संज्ञा उनके कर्म गर्भाधानादि संस्कार यज्ञोपवीत धारण काल जाति परत्व एवं ब्रह्मचारी के व्रत १-४१

२. विवाहविधि, गृहस्थधर्म, स्त्रीधर्माभिधान आदि

यदि स्नातक द्वितीयाश्रम (गृहस्थाश्रम) में जाना चाहे तो विधिवत् सवर्ण कन्या के साथ विवाह करे अन्य से नहीं। पुरुष विवाह करने पर ही पूर्ण शरीरधारी होता है १-१८

स्त्री के कर्तव्य का वर्णन आया है, यथा—

पत्युः पूर्वं समुत्थाय देहशुद्धिं विधाय च।
उत्थाप्य शयनाद्यानि कृत्वा वेश्मविशोधनम्॥

पति के जागने से प्रथम शयन से उठकर घर की शुद्धि, वस्त्रादिकों को यथास्थान में रखे १९-४१

—०—

देवल स्मृति

प्रायश्चित्तवर्णनम् १६५५

समुद्र तट पर ध्यानावस्थित देवल से ऋषियों ने पूछा कि महाराज! म्लेच्छों के साथ जिनका सम्पर्क हो गया है अर्थात् जो पुरुष बलात् या स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन कर चुका है उसको क्या करना चाहिये जिससे वह पुनः अपनी जाति में पावन हो जाय। इसके उत्तर में ऋषि देवल ने उन सबका प्रायश्चित्त विभिन्न प्रकार से बताया प्रारम्भ में अपेय पान अभक्ष्य भक्षण से सब प्रकार के सांसर्गादि पातित्य कर्मों में पृथक्-पृथक् प्रायश्चित्त कर सबकी शुद्धि बताई है। प्रायश्चित्तों के करने पर अन्त में गङ्गा स्नान से शुद्धि बताई है। इस स्मृति में जाति शुद्धि, देह शुद्धि और समाज शुद्धि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है	१-९०

—०—

प्रजापति स्मृति

इस स्मृति में एक ही श्राद्ध कर्म का पूर्णाङ्ग पूर्ण विधि से वर्णन किया गया है। शुक्राचार्य के कथन से श्राद्धकल्प में उथल पुथल हो गई थी। श्राद्ध कर्म के न करने से द्विजाति बलहीन और राक्षस बल हरण करने वाले हो गये थे। अतः श्राद्ध कल्प पर प्रजापति श्राद्ध के सम्बन्ध में श्राद्ध के भेद, श्राद्ध विधि, श्राद्ध के मन्त्र सम्पूर्ण कहे हैं। इस स्मृति के अध्ययन से श्राद्ध कर्म की आवश्यकता तथा सम्पूर्ण विधि मालूम हो जायगी। श्राद्ध के नियम, श्राद्ध काल, आभ्युदयिक श्राद्ध का माहात्म्य, श्राद्ध की सामग्री, श्राद्ध में पुण्य पाठ, श्राद्ध करने से पितरों की तृप्ति एवं श्राद्धकर्ता दीर्घायु, पुत्रवान्, धनवान, ऐश्वर्यवान् होता है।	१-१९८

लाघ्वाश्वलायन स्मृति

१. आचारप्रकरणवर्णनम् १६८३

पितर उस सन्तान से जैसे निराश होते हैं वैसे ही वह सन्तान भी अधोगति को प्राप्त होती है। जो माता पिता का विधिवत् अर्थात् श्राद्ध करने की विधि बताई है जैसे योग्य ब्राह्मण श्राद्ध में निमन्त्रित किए जाते हैं उस पूर्ण विधि से जो श्राद्ध करता है उसके पितर तृप्त होते हैं। वह पुरुष आत्मनिष्ठ होकर स्वयं इस संसार से तर जाता है एवं दूसरों को भी तार देता है १-३१

—०—

बौधायन स्मृति

१. सशिष्ट धर्म वर्णन

बौधायन स्मृति में धर्म की प्रधानता अर्थ की गौणता प्राचीन वैदिकाचार का वर्णन है। इसमें मुख्य तीन प्रश्नों का निर्णय है। प्रथम प्रश्न —"उपदिष्टो धर्मः प्रति वेदम्" "तस्यानुव्याख्यास्यामः" "स्मार्तो द्वितीयः" "तृतीयः शिष्टागमः"। "उपदिष्टो धर्मः प्रतिवेदम्" इसकी व्याख्या १२ अध्यायों में क्रमशः वर्णन की गई है। "शिष्टागम" की परिभाषा स्वयं बौधायन ने की है। "विगतमत्सरनिरहंकारकुम्भीधान्या अलोलुपदम्भदर्पलोभमोहक्रोधविवर्जिताः" धर्म का ज्ञान वेदों से होता है। वेद के अभाव में स्मृति ग्रन्थों से शिष्ट पुरुषों द्वारा परिषद् का निर्णय। परिषद् का निर्णय इस प्रकार बताया है—

चातुर्वैद्यं विकल्पी च अङ्गविद् धर्मपाठकः।
आश्रमस्थास्त्रयो विप्राः पर्षदेषा दशावरा॥

वेदस्मृत्यादिज्ञान से रहित परिषद् को प्रमाणित नहीं बताया है। यथा—

यथा दारुमयोहस्ती यथा चर्ममयोमृगः।
ब्राह्मणश्चानधीयानस्त्रयस्ते नामधारकाः॥

उत्तर तथा दक्षिण में जो आचार हैं उन पर विप्रतिपत्ति और आर्यावर्त की सीमा का वर्णन । यह धर्मशास्त्र यज्ञ संस्कारादि आर्यावर्त ब्रह्मावर्त के लिए ही है १-३७

२. ब्रह्मचारी धर्म

ब्रह्मचारी के नियम अष्टम वर्ष में ब्राह्मण का उपनयन तथा ऋतु परत्व उपनयन काल, वसन्त में ब्राह्मण, ग्रीष्म में क्षत्रिय एवं शरद् में वैश्य का उपनयन समय, मौञ्जी बन्धन, भैक्ष्यचर्या एवं ब्रह्मचारी को शिक्षा, अवकीर्णी का दोष, ब्रह्मचर्य का माहात्म्य । धर्म क्या है ? १-५५

३. स्नातकधर्म

धर्म के निर्णय तथा स्नातक के नियम एवं व्रत १.१३

४. कमण्डलुचर्याभिधान : १७७५

स्नातक के शौचाचार, कमण्डलु से जल के प्रयोग का विधान एवं रीति बताई गई है १-२८

५. शुद्धिप्रकरण : १७७७

प्रथम प्रश्न के ही प्रसंग में इस अध्याय का वर्णन किया है । शुद्धि का विधान है । यथा—

अद्भिः शुध्यन्ति गात्राणि बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ।
अहिंसया च भूतात्मा मनः सत्येन शुध्यति, इति ॥

यहां से शरीर , बुद्धि, देह और मनकी शुद्धि बताकर यज्ञोपवीत धारण की रीति तथा उसकी शुद्धि पादप्रक्षालनादि, नदी में स्नान की रीति, वस्तु भाण्डादि की शुद्धि, अविज्ञात भौतिक जीवों की षट् प्रकार की शुद्धि, आसन, शय्या और वस्त्र की शुद्धि के सम्बन्ध में, शाक, फल, पुष्पों की प्रक्षालन से ही शुद्धि बताई है ।

अशौच में सपिण्डता को लेकर दस दिन में शुद्धि होती है । कुत्ते के काटने पर प्राणायामादि से शुद्ध एवं अभक्ष्य का वर्णन । गाय का दूध गाय से सूतने पर दस दिन के अनन्तर शुद्ध होता है । इस प्रकार सब बातों की शुद्धि करनी धर्म का अङ्ग बताया है १-१६३

प्रायश्चित्तप्रकरण : १८००

दायविभागवर्णनम्

सन्ध्योपासनाविधि : १८१७

मध्याह्नस्नानविधि तथा ब्रह्मयज्ञाङ्गतर्पण : १८२०

पञ्चमहायज्ञविधि तथा आश्रमधर्मनिरूपण : १८२७

शालीनयायावराणामात्मयाजिनां प्राणहुति व्याख्यानं : १८३०

श्राद्धाङ्गाग्नौकरणादिविधिनिरूपणम् : १८३३

सत्पुत्रप्रसंशा : १८३६

सत्पुत्र का वर्णन किया है "पुत्रेण लोकाञ्जयति" अच्छी सन्तान से पिता स्वर्गादि लोक में विजयी होता है "सत्पुत्रमुत्पाद्याऽऽत्मनं तारयति" सत्पुत्र की महिमा कही है १-१६

संन्यासविधिवर्णनम् : १८३७

संन्यास की विधि—संन्यास का धर्म विस्तार से निरूपण कर इसी के परिशिष्ट १७ सूत्रों में उसका विधान, "शालीन यायावरों" का आचार, संन्यासी के त्रिदण्ड का माहात्म्य बताया है १-८६

शालीनयायावरादीनांधर्मनिरूपणम् : १८४४

शालीन और यायावरों की वृत्ति तथा धर्म का निरूपण किया है। शाला में आश्रय करने से शालीन एवं श्रेष्ठ वृत्ति के धारण करने से यायावर। इनकी नौ प्रकार की वृत्ति बताई है। जैसे—१. षण्निवर्तनी, २. कौद्दाली, ३. कुल्या, ४. संप्रक्षालनी ५. समूहा, ६. पालिनी, ७. शिलोञ्छा, ८. कापोता, ९. सिद्धा इनके अतिरिक्त दशम वृत्ति भी बताई है। आहिताग्नि तथा यायावर की वृत्ति का वर्णन है १-२०

षण्निवर्तन्यादिवृत्तीनांस्वरूपकथनम् : १८४६

षण्निवर्त्तन्यादि वृत्तियों का स्पष्टीकरण है, षण्निवर्तनी, कौद्दाली आदि का विशदीकरण है तथा शिलोञ्छ वृत्ति की परिभाषा १-३८

पचमानकापचमानकभेदेनवानप्रस्थस्यद्वैविध्य वर्णनम् : १८४९

दो प्रकार के वानप्रस्थ—पचमानक और अपचमानक के लक्षण तथा उनके धर्म, वन में रहने का माहात्म्य १-२५

मृगैः सहपरिस्पन्दः संवासस्ते(स्त्वे)भिरेव च।
तैरेव सदशीवृत्तिः प्रत्यक्षं स्वर्गलक्षणम्॥

ब्रह्मचारिणअभक्ष्यभक्षणेप्रायश्चित्त : १८५१

ब्रह्मचारी को स्त्री के सहवास तथा निषेध पदार्थों के भक्षण से प्रायश्चित्त का निरूपण १-११

—०—

गौतम स्मृति

५-६ गृहस्थाश्रमवर्णनम् : १८८७

गृहस्थाश्रम में गृहस्थ के कर्तव्य और गृहस्थाश्रम का वर्णन।

७. आपद्धर्मवर्णनम् : १८८९

आपतकाल में वर्णाश्रमी दूसरे वर्ण के कर्म को भी कर सकता है।

८. संस्कारवर्णनम् : १८८९

संस्कृत जीवन की गरिमा—

द्वौलोके धृतव्रतौ राजा ब्राह्मणश्च बहुश्रुतस्तयो श्चतुर्विधस्य मनुष्य-जातस्यान्तः सञ्ज्ञानाञ्चलन पतनसर्पणामायत्तंजीवनं प्रसूतिरक्षणम-संकरोधर्मः।

जिसका संस्कार होता है उसमें सभी उदात्तगुणों का आधान होने से ब्राह्मी तनु की प्राप्ति का अधिकार आ जाता है।

९. कर्तव्याकर्तव्यवर्णनम् : १८९०

स्नातक गृहस्थ-जीवन का प्रवेशार्थी है वह विधि विहित विद्या का साङ्गोपांग अध्ययन कर भविष्य के गुरुतर उत्तरदायित्व को वहन कर आदर्श रूप से कर्तव्य पालन करता हुआ अपना, समाज का राष्ट्र का हित सम्पादन करता है—स्नातक की आदर्श दिनचर्या उसके नियम और आचार का वर्णन।

सत्यधर्मा आर्यवृत शिष्टाध्यापक शौचशिष्टः
श्रुतिनिरतः स्यान्नित्यमहिंस्रो मृदुदृढकारी दमदान
शील एवमाचारो मातापितरौ पूर्वापरान्सम्बन्धान्
दुरितेभ्यो मोक्षयिष्यन् स्नातकः शश्वद्ब्रह्मलोकान्न च्यवते।

१०. वर्णानांवृत्तिवर्णनम् : १८९३

ब्राह्मणक्षत्रियादि वर्णों की पृथक्-पृथक् आजीविका वृत्ति।

११. राजधर्मवर्णनम् : १८९४

राजधर्म का निर्देश—

न्यायपूर्वक प्रजापालन राजा का परम धर्म है।

१२. विविध पापकरणे दण्डविधानवर्णनम् : १८९६

भिन्न-भिन्न पापकर्म के दण्ड विधि का निरूपण।

—o—

वृद्धगौतम स्मृति

३. दानप्रकरणवर्णनम् : १९३१

ज्ञानी को दान देने की बहुत प्रशस्ति गाई है—

पापकर्म समाक्षिप्तं पतन्तं नरके नरम् ।
त्रायते दानमप्येकं पात्रभूतेकृते द्विजे ॥ ७९ ॥

बीजयोनि विशुद्धा ये श्रोत्रियाः संयतेन्द्रियाः ।
श्रुत्वान्नविरला नित्यन्ते पुनन्तीह दर्शनात् ॥ ८४ ॥

स्वयं नीत्वा विशेषेण दानन्तेषां गृहेष्वथ ।
निधापयेत्तुमद्भक्त्या तद्दानं कोटिसम्मितम् ॥ ८५ ॥

४. विप्राणां गुणदोषवर्णनम् : १९४०

शीलमध्ययनं दानं शौच मार्दवमार्जवम् ।
तस्माद्विद्वान् विशिष्टान्वै मनुराह प्रजापतिः ॥ २४ ॥

भूर्भुवः स्वरिति ब्रह्म यों वेद परमद्विजः ।
स्वदारनिरतो दान्तः स च विद्वान्सभूसुरः ।
सन्ध्यामुपासते विप्रा नित्यमेव द्विजोत्तमाः ॥ २५ ॥

ते यान्तिनरशार्दूल ब्रह्मलोकमसंशयम् ।
सावित्रीमात्रसारोऽपि वरोविप्रः सुयन्त्रितः ॥ २६ ॥
नायन्त्रितश्चतुर्वेदी सर्वाशीसर्वविक्रयी ।

विप्र प्रशंसा—

विप्रप्रसादाद्धरणीधरोऽहं
विप्रप्रसादादसुराञ्जयामि ।
विप्रप्रसादाच्चसदक्षिणोऽहं
विप्रप्रसादादजितोऽहमस्मि ॥ ५७ ॥

५. जीवस्यशुभाशुभकर्मवर्णनम् : १९४६

युधिष्ठिर का प्रश्न—मनुष्य लोक और यमलोक का क्या प्रमाण है ? और मनुष्य किस प्रकार यमलोक से तर जाते हैं ? प्रेतलोक और यमलोक की गति किस प्रकार है ? १-९

यमलोक आदि का वर्णन और जीव की गति तथा कौन यमलोक और स्वर्गलोक को जाते हैं । सब प्राणी यमलोक में किस प्रकार दुःख भोगते हुए जाते हैं १०-५८

युधिष्ठिर का प्रश्न—किस दान के करने से जीव यमलोक के मार्ग से छुटकारा पाकर सुख प्राप्त करते हैं ५९-६१

अनेक प्रकार के दान और वृक्षादि लगाने और जिन श्रेष्ठ कर्मों से मनुष्य स्वर्ग को जाता है उनका विस्तार पूर्वक वर्णन । ६२-१२१

६. सर्वदानफलवर्णनम् : १९५८

सम्पूर्ण प्रकार के दानों का फल और कैसे ब्राह्मण को दान देना चाहिए । दानपात्र ब्राह्मण के लक्षण तथा तपस्या का फल १-४

ऐसे ब्राह्मणों के लक्षण जिन्हें दान देने से मनुष्य दुःखों से छूट जात है । यथा—

ये क्षान्तदान्ताश्च तथाभिपूण
जितेन्द्रियाः प्राणिवधेनिवृत्ताः ।
प्रतिग्रहे सङ्कुचिता गृहस्था-
स्ते ब्राह्मणस्तारयितु समर्थाः ॥

सत्पात्र और पूज्य ब्राह्मण के शुभलक्षण—

ब्राह्मणो यस्तु मद्भक्तौ मद्याजीमत्परायणः ।

मयि सन्न्यस्त कर्मा च स विप्रस्तारयिष्यति ।।

७. वृषदानमहत्त्ववर्णनम् : १६७५

वैशम्पायन से पूछा कि दान धर्म को सुनने पर मुझे जिज्ञासा हुई है कि आप और-और धर्मों को भी बतलाइये १-४

दश गौ के दान के समान एक बैल का दान पुष्ट बैल का दान हजार गोदान के समान कहा गया है ।

वशधेनु समोऽनड्वानेकोऽपि कुरुपुंगव ।

मेदोमांस विपुष्टांगो नीरोगः पापवर्जितः ।।

इसके दान करने से ब्राह्मण खेत को जोत सकते हैं और ज्ञानपूर्वक अन्नोत्पादन कर सुन्दर स्वथ्य दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न कर सृष्टि की उत्तरोत्तर उन्नति करते हैं ।

अनेक प्रकार के दान जैसे मन्दिरों में भजन कीर्तन, प्याऊ लगाना, वृक्षारोपणवर्णन ५-१३३

८. पञ्चमहायज्ञवर्णनम् : १६८७

युधिष्ठिर के प्रश्न पञ्चयज्ञ विधान पर १-७

पञ्चमहायज्ञ करने की आवश्यकता ८-१८

युधिष्ठिर का स्नानविधि पर प्रश्न १९

स्नान करने की विधि और स्नान के साथ क्या-क्या करना चाहिए । सन्ध्या देवर्षि पितृतर्पण करके ही जल से निकलना चाहिए । बिना तर्पण किए वस्त्र निष्पीड़न करने से देवता, ऋषि और पितर शाप देते हुए निराश होकर लौट जाते हैं । २०-७२

अतर्पयित्वा तान्पूर्वं स्नानवस्त्रन्नपीडयेत् ।

पीडयेद्यदितन्मोहाद्देवाः सर्षिगणास्तथा ।।

पितरश्च निराशास्तं शप्त्वा यान्तियथागमम् ।।

विभिन्न प्रकार के पुष्पों द्वारा पूजा करने के माहात्म्य पर प्रश्न ? ७३

चढ़ाने योग्य पुष्पों का वर्णन और वर्जित पुष्पों का निषेध ७४-८३

९. कपिलादानप्रशंसावर्णनम् : १९९९

कपिलाह्यग्निहोत्रार्थे विप्रार्थे च स्वयम्भुवा।
सर्वतेजः समुद्धृत्यः निर्मिता ब्रह्मणापुरा ॥ २३ ॥
गो सहस्रञ्चयोदद्यादेकाञ्चकपिलांनरः।
समन्तस्यफलम्प्राह ब्रह्मा लोकपितामहः ॥

१०. कपिलागोप्रशंसावर्णनम् : २००७

यस्यैताः कपिलाः सन्ति गृहे पापप्रणाशना।
तत्रश्रीविजयः कीर्तिः स्थिताः नित्यं युधिष्ठिर॥

दैवं पूर्वाह्णिकं कर्म पैत्रिकं चापराह्णिकम्।
कालहीनं च यद्दानं तद्दानं राक्षसं विदुः॥

११. ब्रह्मघातकलक्षणवर्णनम् : २०१९

१२. धर्मशौचविधिवर्णनम् : २०२३

१३. भोजनविधिवर्णनम् : २०२८

१४. आपद्धर्मवर्णनम् :

१५. धर्ममहत्त्व : २०३९

१६. चान्द्रायणविधि : २०४८

१७. द्वादशमासेषु धर्मकृत्य : २०५३

१८. एकभुक्तपुण्यफल : २०५९

१९. दानफल : २०६४

२०. तीर्थलक्षण : २०६९

२१. भक्त्यार्चन विधि : २०७४

४. गोवधप्रायश्चित्त : २११०

५. श्राद्धकालेपत्न्यांरजस्वलायांनिर्णय : २११६

—०—

अरुणस्मृतिः

१. प्रतिग्रह : २११६

"जपोहोमस्तथा दानं स्वाध्यायादिकृतं शुभम् ।
दातुर्नप्रथते विप्र अतो न स्वर्गमाप्नुयात् ॥"

ब्राह्मण को अनुचित दान लेने के प्रायश्चित्त करने का वर्णन

प्रतिग्रहेण विप्राणां ब्राह्मंतेजः प्रशाम्यति ।

—०—

पुलस्त्यस्मृतिः

१. वर्णाश्रमधर्म : २१३४

पुलस्त्य ऋषि ने कुरुक्षेत्र में जो वर्णाश्रमधर्म बतलाया उसका वर्णन। यथा—

"अहिंसा सत्यवादश्च सत्यं शौचं दया क्षमा ।
वर्णिनां लिंगिनाञ्चैव सामान्यो धर्म उच्यते ।"

—०—

बुधस्मृतिः

१. चातुर्वर्ण्यधर्म : २१३७

—०—

वशिष्ठस्मृतिः (२)

१. वर्णाश्रमाणांनित्यमित्तिककर्म : २१३९

२. वैष्णवानां नामकरणसंस्कार : २१४३

३. वैष्णवानां निष्क्रमणान्नप्राशनसंस्कारवर्णनम् : २१४७

४. गृहस्थधर्म : २१६५

५. स्त्रीधर्म : २१७८

६. नित्यनैमित्तिकविधि : २१८६

७. विष्णुस्थापनविधि

—०—

बृहद्योगीयाज्ञवल्क्यस्मृतिः

१. मन्त्रयोगनिर्णय : २२४८

२. ओंकारनिर्णय : २२५१

३. व्याहृतिनिर्णय : २२६७

४. गायत्रीनिर्णय : २२७०

५. ओंकारगायत्रीन्यास : २२७८

६. सन्ध्योपासननिर्णय : २२७९

७. स्नानविधि : २२८३

८. प्राणायाम : २३०१

९. ध्यानविधि : २३०७

ज्ञानं प्रधानं न तु कर्महीनं कर्मप्रधानं न तु बुद्धिहीनम् ।
तस्माद्द्वयोरेव भवेतसिद्धिर्नह्येकपक्षो विहग: प्रयाति ।। २९ ।।
गवां सर्पिः शरीरस्थं न करोत्यगपोषणम् ।
निःसृतं कर्मचरितं पुनस्तस्यैवभेषजम् ।। ३० ।।
एवं सति शरीरस्थः सर्पिर्वत् परमेश्वरः ।
विना चोपासनादेव न करोति हितं नृषु ।। ३१ ।।

१०. सूर्योपस्थान : २३२६

११. योगधर्म : २३२८

१२ विद्याऽविद्यानिर्णय : २३३४

—o—

ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता

१ चतुर्वेदानां शाखा : २३३९

२ नित्यनैमित्तिककर्म : २३४४

७. श्राद्ध वर्णन

८. ब्रह्मचारिधर्म : २४११

९. तिथिनिर्णय : २४४७

१०. विनायकादिशान्तिवर्णन : २४५२

११. दानविधि : २४६७

१२. प्रायश्चित्तवर्णन : २४७४

१३. आशौच : २४८१

—o—

काश्यपस्मृतिः

प्रायश्चित्त : २४८५

—o—

व्याघ्रपादस्मृतिः

स्मृतिमहत्त्व : २४९१

कपिलस्मृति

—o—

वाधूलस्मृति

स्नानविधि २६२७

स्नान मूला: क्रिया: सर्वा: सन्ध्योपासनमेव च ।
स्नानाचारविहीनस्य सर्वा: स्यु: निष्फला: क्रिया: ।। ६७ ।।

गृहस्थधर्म २६३७

—o—

विश्वामित्रस्मृति

१. नित्यनैमित्तिककर्मणां वर्णनम् : २६४५

२. आचमनविधि : २६५७

विधिवदाचमनस्यैवफल : २६५६

६. द्विविधजपलक्षणम् : २६८१

कराङ्गन्यासवर्णनम् : २६८५

मुद्राविधिवर्णनम् : २६८७

उपस्थानविधि : २६९०

८. देवयज्ञादिविधान, वैश्वदेवकालनिर्णय, पञ्चसूनापनुत्त्यर्थं वैश्वदेव, वैश्वदेवमाहात्म्य : २६९२

—०—

लोहितस्मृति

द्वादशविधपुत्राः : २७१७

एकपुत्रस्य स्वीकरणनिषेधः २७२७

विधवास्वीकृतपुत्रदण्डम् २७२८

दौहित्रप्रशंसा २७२९

प्रत्याब्दिकाकरणे प्रत्यवायः २७३४

श्राद्धद्रव्याभावेऽनुकल्पः २७३५

—o—

नारायणस्मृति

—०—

शाण्डिल्यस्मृति

धर्म के कार्य में निरन्तर लगना प्रिय बोलना, सत्य एवं पर-
हितकारी वचनों का उच्चारण करना ऐसी बहुत-सी शुद्धियों
का वर्णन। शिर, कण्ठ आंख और नासिका के मल को दूर
करना यही सर्वाङ्गीण शुद्धि बतलाई है १८-३९

ज्ञानकर्मभ्यां हरिरेवोपास्य इतिवर्णनम् : २७९७

धर्म की हानि नहीं करनी चाहिये, संग्रह ही करे। धर्म एवं अधर्म का सुख
व दु.ख के कारण हैं। यही सनातन धर्म शास्त्र है अन्य सब भ्रामक हैं
तथा तामस व राजस हैं, यही सात्त्विक है। वेद, पुराण एवं उपनिषदों में
"इदं हेयमिदं हेयमुपादेयमिदं परम्" यही बतलाया है। साक्षात्परब्रह्म
देवकी पुत्र श्री कृष्ण की आराधना सर्वोत्तम है। देव; मनुष्य और पशु
आदि का विस्तार उन्हीं से है।

साक्षाद्ब्रह्म परं धाम सर्वकारणमव्ययम्।
देवकीपुत्र एवान्ये सर्वे तत्कार्यकारिणः॥
देवा मनुष्याः पशवो मृगपक्षिसरीसृपाः।
सर्वमेतज्जगद्धातुर्वासुदेवस्य विस्तृतिः॥

ज्ञान एवं कर्म से भगवान की ही आराधना सर्वोत्तम है। वही ज्ञान
है, वही सत्कर्म है एवं वही सच्छास्त्र है। जो भगवान् के
चरणारविन्दों की सेवा नहीं करते हैं वे शोचनीय हैं ४०-५९

सात्विकराजसतामसगुणानां वर्णनम् : २७९९

प्रकृति त्रिगुणात्मिका है एवं जगत् की कारणभूता है। सम्पूर्ण संसार
देव, असुर और मनुष्य इसी के विकार हैं। इस प्रकार सात्त्विक
राजस और तामस गुणों का संक्षेप से वर्णन ६०-७०

देश शुद्धि का वर्णन—जहां म्लेच्छ पाषण्डी न हो धार्मिक तथा
भगवद्भक्तिपरायण मनुष्य रहते हों और हिंसक जन्तुओं से
शून्य हो वह स्थान शुद्ध है ७१-८२

भगवत्पूजनविधिवर्णनम् : २८०१

सात प्रकार की शुद्धि कर भगवत्पूजापरायण होना चाहिए। प्रथम
शरीर को तपस्यादि से शुद्ध करे अशक्त हो तो दान करे और
दोनों में ही असमर्थ हो तो नामसंकीर्तन करना चाहिए। ८३-९५

उपवास, दान, भगवद्भक्तों के सेवन, संकीर्त्तन, जप, तप और
श्रद्धा द्वारा शुद्धि होती है ९६-१०१

३. उपादानविधिवर्णनम् : २८१३

४. इज्याचारवर्णनम् : २८२६

५. रात्रावन्त्ययामे योगकृत्यवर्णनम् : २८५१

—०—

कण्वस्मृति

धर्मसार धर्मकर्त्तव्य नित्यनैमित्तिककर्म : २८६०

—०—

दाल्भ्यस्मृति

षोडशश्राद्धवर्णनम् : २९३३

शस्त्रहतकानां श्राद्धवर्णनम् : २९४१

द्वौमासौ पाययेद्वत्सं द्वौ मासौ द्वौस्तनौ दुहेत्।
द्वौमासौ चैकवेलायां शेषं कालं यथेच्छया ॥१११॥

शुद्धाशुद्धिवर्णनम् : २९४७

—o—

आङ्गिरसस्मृति

पूर्वाङ्गिरसम्

आङ्गिरसम्प्रति ऋषीणाम्प्रश्न : २९४९

श्राद्धापाकानन्तरमाशौचे निर्णयः : २६५१

शिखानिर्णयवर्णनम् : २६५५

अनाथप्रेतसंस्कारेऽश्वमेधफलवर्णनम् : २९६३

स्त्रीणां पुनर्विवाहे प्रायश्चित्तवर्णनम् : २९६९

स्त्री के पुनर्विवाह में दोष जैसे—

पुनर्विवाहिता मूढैः पितृभ्रातृमुखैः खलैः ।
यदि सा तेऽखिलाः सर्वे स्युर्वै निरयगामिनः ॥१९३॥
पुनर्विवाहिता सा तु महारौरवभागिनी ।
तत्पतिः पितृभिः सार्धं कालसूत्रगगो भवेत् ।
दाता चाङ्गारशयननामकं प्रविपद्यते ॥१९४॥

यदि मूर्ख एवं दुष्ट पिता व भाई आदि के द्वारा फिर स्त्री विवाहित की जाय तो वे सब नरकगामी होते हैं और वह स्त्री महारौरव नरक में जाती है, व उसका विवाहित पति अपने पितरों के साथ कालसूत्र नामक नरक में गिरता है एवं देने वाला अङ्गारशयन नाम वाले नरक में जाता है। पुनर्विवाह के दोष निवारणार्थ प्रायश्चित्त का कथन १९३-२०४

गृहस्थस्य रात्रावुष्णोदकस्नानवर्णनम् : २९७५

औपासनाग्नौ श्राद्धेऽप्रमादवर्णन : २९९१

श्राद्धार्हदिव्यशाकवर्णन : ३००३

निमन्त्रणार्हविप्राणांवर्णन : ३०२५

परिवेषणपौर्वापर्य वर्णन : ३०३३

आङ्गिरस (२) उत्तराङ्गिरसम्

१ धर्मपर्षत्प्रायश्चित्तवर्णन : ३०६६

२ परिषद उपस्थानलक्षणम् : २०६७

प्रायश्चित्तविधानम् : ३०६८

४ परिषल्लक्षण : ३०६९

५ प्रायश्चित्तनियन्तृकथनम् : ३०७१

६. प्रायश्चित्ताचारकथनम् : ३०७२

७. पापपरिगणनम् : ३०७३

८. शूद्रान्नस्यगर्हितत्ववर्णनम् : ३०७५

९. अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्त : ३०७७

१०. हिंसाप्रायश्चित्तकथनम् : ३०७९

समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः ।
अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥

—o—

भारद्वाजस्मृति

—o—

स्मृति सन्दर्भ : भाग षष्ठ

मार्कण्डेयस्मृति

मार्कण्डेयस्मृति १८७

—o—

लौगाक्षिस्मृति

लौगाक्षिस्मृति १८९

॥समाप्तमिदं सूचीपत्रम् । शमस्तु ॥

—०—

स्मृति सन्दर्भ : श्लोकानुक्रमणी

संकेत सूची

१. मनुस्मृति	(मनु)	२९. प्रजापति स्मृति	(प्रजा)
२. नारदीय मनुस्मृति	(नारद)	३०. बौधायन स्मृति	(बौ)
३. अत्रिस्मृति	(अत्रि)	३१. लध्वाश्वयालयन	(आश्व)
४. अत्रिसंहिता	(अत्रिस)	३२. गौतम स्मृति	(गौ)
५. विष्णु स्मृति माहात्म्य	(विष्णु मं.)	३३. वृद्ध गौतम स्मृति	(वृ.गौ.)
६. विष्णु स्मृति	(विष्णु)	३४. यम स्मृति	(य)
७. सम्वर्त स्मृति	(सम्वर्त)	३५. लघुयम स्मृति	(ल. य.)
८. दक्ष स्मृति	(दक्ष)	३६. बृहद्यमस्मृति	(वृ.य.)
९. आंगिरस स्मृति	(आंगिरस)	३७. अरुण स्मृति	(अ)
१०. शातातप स्मृति	(शाता)	३८. पुलस्त्य स्मृति	(पु.)
११. पराशर स्मृति	(पराशर)	३९. बुध स्मृति	(बु य)
१२. वृहतपाराशर स्मृति	(वृ परा)	४०. वसिष्ठ स्मृति (२)	(व–२)
१३. लघु हारीत स्मृति	(ल हा)	४१. वृहदयोगी याज्ञवल्क्य	(बृ. या.)
१४. वृद्ध हारीत स्मृति	(व. हा.)	४२ ब्रह्मोक्त याज्ञवल्क्य	(ब्र. या.)
१५. याज्ञवल्क्य स्मृति	(या)	४३. काश्यप स्मृति	(का)
१६. कात्यायन स्मृति	(कात्या)	४४. व्याघ्रपादस्मृति	(व्या)
१७. आपस्तम्ब स्मृति	(वृ. हा)	४५. कपिल स्मृति	(क)
१८. लघुशंखस्मृति	(या)	४६. वाधूल स्मृति	(वा)
१९. शंख स्मृति	(शंख)	४७. विश्वामित्र स्मृति	(विश्वा)
२०. लिखित स्मृति	(लि.)	४८. लोहित स्मृति	(लो)
२१. शंख लिखित स्मृति	(शं. लि.)	४९. नारायण स्मृति	(नारा)
२२. वसिष्ठ स्मृति–१	(व–१)	५०. शाण्डिल्य स्मृति	(शाण्ड)
२३. औशनस संहिता	(औ. सं.)	५१. कण्व स्मृति	(कण्व)
२४. औशनस स्मृति	(औ. स्मृ.)	५२. दाल्म्य स्मृति	(दा)
२५. वृहस्पति स्मृति	(वृह)	५३. आंगिरस स्मृति पूर्व	(आंपू)
२६. लघुव्यास संहिता	(ल. व्या)	५४. आंगिरस स्मृति उत्तरार्ध	(आंगि–उ)
२७. व्यास स्मृति	(औ. सं.)	५५. मार्कण्डेयस्मृति	(मा)
२८. देवल स्मृति	(देवल)	५६. लौगाक्षी स्मृति	(लौ)

स्मृति सन्दर्भ : : श्लोकानुक्रमणी

अ

अकृत्यकरणाद् वाऽपि वृ हा ८.१६८
अकृत्यमपि कुर्वाणो वाधू ७४
अकृत्यमानकरणम् वृगौ ४.२१
अकृत्यं वैष्णवैः वृ हा ८.१६६
अकृत्रिमा भगवति शाण्डि ४.६९
अकृत्वपार्वणं श्राद्ध व २.६.३७७
अकृत्वा तु समीपे तु आं पू ९५७
अकृत्वा देवयज्ञ च आश्व १.१४५
अकृत्वा नित्यकर्माणिं आं पू २६०
अकृत्वा पादशौचन्तु संर्वत १५
अकृत्वा पादयो औ २.१०
अकृत्वा प्रेतसंस्कारं आं पू १४२
अकृत्वा भस्ममर्यादां व्या १४३
अकृत्वा भैक्षचरणमसमिध्य मनु २.१८७
अकृत्वा मातृयागंञ्च औ ५.९९
अकृत्वा वैश्वदेवं तु विश्व ८.४६
अकृत्वा वैश्वदेवस्तु पराशर १.४९
अकृतेवा वैष्णवीमिष्टिं व २.६.४१६
अकृत्वा शान्तिक कर्म आश्व ३.१९
अकृत्वा समिधाधानं औ ९.६६
अकृत्वैन तदा श्राद्ध आं पू ६७
अकृत्वैव तु संकल्पं कण्व २९३
अकृत्वैव निवृत्तिं आंउ ८.९
अ कृष्टं मूलफलं व–१९.३
अकेशीर्वा सकेशीर्वा कण्व ५९९
अक्काक्षिमालाममयं दंडं भार १२.२३
अक्रिया करणी कार्यसमे विष्णुम ३८
अक्रिया त्रिविधा प्रोक्ता कात्या ३.१
अक्रोधनमनुत्सिक्तमति शाण्डि १.१०३
अक्रोधनान् सुप्रसादान् मनु ३.२१३
अक्रोधनाः शौचपराः मनु ३.१९२
क्रोधनाः सत्यपरा वृ.गौ. १२.२१
अक्रोधनेः शौचपरैरिति प्रजा ६३
अक्रोधश्चात्वरोतीव पुनः कपिल २५१
अक्लिन्नवासाः स्थलगः संवर्त २१२
अक्लिन्नेनाप्याभिन्नेन आप २.१३
आक्लिष्टमाच्छिद्मलोमकं.वृ परा१०.१२४
अक्लेशेन चरेत् तृप्तो शाण्डि ३.४९
अक्लेशेन् सुमुक्तिर्य शाण्डि ४.२१५
अक्षताभि समुऽपाभि नारद ६.४१
अक्षतायां क्षतायांच ब्र. या.७.३७
अक्षतायां क्षतायां च लोहि १८४
अक्षतायां क्षत्रायां वा या २.१३३
अक्षतारोपणं कुर्यात् आश्व १५.२४
अक्षता वा क्षता चैव या १.६७
अक्षताश्चेत्यभिहितास्ते भार १४.६
अक्षताः सर्षपाश्चैच व २७.९०
अक्षतास्तु यवाः प्रोक्ता कात्या २८.१
अक्षभंगादिविपदि कात्या ८.२४
अक्षमाला प्रकर्तव्या वृ परा ४.४२
अक्षमाला वशिष्ठेन मनु ९.२३
अक्षमाला स्रग्धरा च वृ परा २.१५
अक्षयान् लभेत भोगान् वृ परा १०.२६२
अक्षय्यं तु ततोऽन्नेन कपिलं ७२२
अक्षय्यासनपाद्येषु व्या २६३
अक्षय्योदकदानं तु कात्या ४.७
अक्षरप्रतिलोमू यास्मिन्न भार ९.४२
अक्षरं चाजरं चैवमनुत्प बृ. या. २.११०
अक्षरं परमं व्योम वृ हा ७.३२६
अक्षराणि च दैवत्यं बृ. या. ४.६३
अक्षवर्धशलाकाद्यैर्देवनं नारद १७.१
अक्षार लवणं भैक्ष अत्रि स ६०
अक्षारलवणं शुद्ध व २४.६७
अक्षारलवणान्नाः मनु ५.७३
अक्षारलवणां रूक्षां व १२७.११
अक्षारलवणाशी स्यात् वृ परा १२.१४९
अक्षिकर्ण चतुष्कञ्च या ३.९९
अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टं मनु १०.७१
अक्षेत्रेभ्यश्च एतेभ्यो बृ ह ९.७५
अक्ष्णोः पञ्चदशं व २ ६.१५६

अग्निष्टोमोऽतिपूर्वश्च कण्व ४१५
अग्निदो गरदश्चव व १.३.१९
अग्निष्वात्तान् सोमापाश्च बृ.या. ७.७९
अग्निष्वात्तारम सर्वे ब्र. या. ४.६३
अग्निसंरक्षणे शक्ति आश्व १.६१
अग्नि सोम स्तथावायु ब्र.या. ८.३१६
अग्निस्तु नामधेयादौ कात्या १८.१७
अग्निस्तुविश्रवस्तमं आश्व ३.६
अग्निहीनाश्च ये विप्रा ब्र. या. ७.५५
अग्निह्वीनास्तु ये विप्रा ब्र.या. २.२
अग्निहोत्रजयाभूत्या भार १३.५
अग्निहोत्रापरो विद्वान् औ ४.६
अग्निहोत्रफलावेदा व्या ३६८
अग्निहोत्रं तपः सत्यं दा ९
अग्निहोत्रं तपः सत्यं लघुशंख ५
अग्निहोत्रं तपः सत्यं लिखित ५
अग्निहोत्रं त्यजेद् आप १०.१४
अग्निहोत्री तपस्वी व्यास ४.४३
अग्निहोत्री स एव आंपू ६२५
अग्निकार्यं ततकुर्य्यान् संवर्त ८
अग्निकुण्ड प्रमाण वृ परा ११.३७
अग्निकुण्डात्परैर्मन्त्रै वृ.गौ. १०.२७
अग्निचित्कपिला सत्री बृ.गौ. १४.३७
अग्निदग्धानग्निदग्धान् मनु ३.१९९
अग्निदान् भक्तदाश्चैव मनु ९.२७८
अग्निदाश्चैव ये तेषां वृ परा ८.५६
अग्निनात्मनि वैतानांत मनु ६.२५
अग्निपक्वाशनो वा मनु ६.१७
अग्निपरीक्षा वर्णनम् विष्णु ११
अग्निपुच्छामग्निखुरा वृ.गौ. ९.८
अग्निप्रकारमंत्रोऽयं वृ हा. ३.३९०
अग्निप्रपतनं केचिद् वृ हा ६.२४५
अग्निप्रवेशं यश्चापि वृ.गौ. ७.११७
अग्निमध्योद्भवां दिव्यां वृ.गौ. ९.७
अग्निमात्मनि संस्थाप्य संवर्त १०२

अग्निमूर्धेति मंत्रोऽत्र वृ परा ११.३१७
अग्नि नरो दीर्घतिभि वृ हा ५.१३०
अग्निं न वेति सूक्तेन वृ हा ५.४०६
अग्निं सोमं तथा सूर्यं वृ परा ११.२५१
अग्निं वाऽऽहारयेदेनमप्सु मनु ८.११४
अग्निरिव कक्षं दहति बौधा १.२.४९
अग्निरेव सहस्रारः वृ हा २.३८
अग्निर्ज्वलति चान्नार्थ वृ परा ५.११०
अग्निर्ये देवानामव वृ हा ७.८
अग्निर्वायुः सहस्रांशु मार १७.९
अग्निवर्णा सुरां पीत्वा वृ हा ६.२९२
अग्नि वाय्वंभ संयोगाद् वृ परा १२.२३५
अग्निवायुर्रविभ्यस्तु मनु १.२३
अग्निशक्रिपतृणाञ्च वृ.गौ. ७.३२
अग्निशब्दं चतुर्थ्येक वृ परा ७.२०५
अग्निनष्टोमसहस्रञ्च वृ गौ. ९.७१
अग्निष्टोमस्त्वनुष्ठेयः कपिल ९८३
अग्निष्टोमातिरात्राणां का १५
अग्निष्टोमादिभियज्ञैर्ये वृ गौ. ६.१०१
अग्निष्वात्तोपहूताश्च वृ परा २.१८२
अग्निसंस्थापन कृत्वा व २.७.७०
अग्नि सर्पादि मृत्यूनां वृ परा ७.१४६
अग्नि सर्पादिमृत्यूनां वृ परा ७.१४८
अग्नि सोमः समस्तौ वृ परा ४.१६३
अग्निस्थापन विचार विष्णु ६७
अग्निहीनास्तु ये ब्र.या. २.१३५
अग्निहोत्रादिपरिभ्रष्टः बृ. गौ. २१.११
अग्निहोत्रप्रकारन्तु बृ. गौ. १५.२४
अग्निहोत्रफला वेदाः बृ.गौ. १५.४५
अग्निहोत्रं च जुहुयाद् मनु ४.२५
अग्निहोत्रं तप सत्यं अत्रि स ४३
अग्निहोत्रं पृथा राजन् बृ.गौ. २१.५
अग्निहोत्रं वनेवासः बृ.गौ. २१.४
अग्निहोत्रं समादाय मनु ६.४
अग्निहोत्रव्रतपरान् बृ.गौ. २१.७

अजातदन्ता ये बाला	पराशर ३.१६
अजातदन्ता ये बाला	वृ परा ८.४५
अजातपुत्रस्तैनैव पुत्र्ययं	लोहि २२५
अजातव्यंजना लोम्नी	कात्या २८.४
अजानन् यस्तु विब्रूया	आ ६.१३
अजानन् यो द्विजो नित्य	वृ परा ४.१९०
अजानन् यो नरो ब्रूयात्	वृ परा ८.८४
अजानन् सम्यग्	वृ परा ८.१९३
अजानन् हृदयानतःस्थं	शाण्डि १.६६
अजानानां च दात्रृणा	आं उ ६.१४
अंजाभिघातने चैव	शाता २.५२
अजां च महिषीञ्चैव	अ ३५
अजावयो गृहं च कनिष्ठस्य	व १.१७.४१
अजाविकं सैकशफं न	मनु ९.११९
अजाविकाश्वमहिषी	ब्र.या. १३.२०
अजाविके तथा रुद्धे	नारद ७.१६
अजाविके तु संरुद्धे वृकैः	मनु ८.२३५
अजाविको माहिष्श्च	बृ.य. ३.२६
अजाश्व मुखतो मेध्यं	या १.१९४
अजाश्वा मुखतो मेध्या	व १.२८.९
अजितोऽस्मीति वक्तारं	लोहि ७०६
अजिनमेकवस्त्र च योगे	शाण्डि ४.२०२
अजिनं दण्डकाष्ठञ्च	ल हा ३.५
अजिनं मेखला दण्डो	पराशर १२.३
अजिह्नो अशरणो	व १.१०.२१
अजीवंस्तु यथोक्तेन	मनु १०.८२
अजीगर्तः सुत हन्तुं	मनु १०.१०५
अजीर्णविमने स्नान	आंपू १७३
अजीर्णः स्यात्तदा	आंपू २९१
अजीवन्तः स्वधर्मेण	व १.२.२७
अजेतुलायां मिथुने	भार २.४०
अजैकवादहिवर्वुध्न्य	ब्र.या. १०.११३
अजैकपादहुर्बुध्नयो	वृ परा २.१९०
अज्ञ सभायां विदुषां	लोहि ७१४
अज्ञातग्रामताताद्दिर्शा	आंपू १०५०
अज्ञातदोषादुष्टा या	नारद १३.९८
अज्ञातपितृको यस्तु	नारद १४.१७
अज्ञातपूर्व गणिका	भार ७.११५
अज्ञाताख्यज्ञातिरंडाकृता	कपिल ५८८
अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	पराशर ८.१४
अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	बृ.य. ४.२९
अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	वाधू १७६
अज्ञात्वाऽस्यविधि विप्रः	भार १५.३
अज्ञात्वैतानि होमानि	भार १९.३८
अज्ञानतमसाऽन्धानां	बृह १२.३३
अज्ञानतः स्नानमात्र	दा ९८
अज्ञानतिमिरान्धस्य	अत्रि १.१
अज्ञानतिमिरान्धस्य	आप ८.१७
अज्ञानाच्च कृतं	बृ.य ५.१२
अज्ञानाच्चरितो पापे दृष्टवा	शाण्डि २.५४
अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि	लोहि ६५०
अज्ञानात्तान्तु यो गच्छेत	पराशर १०.१२
अज्ञानस्तु द्विजश्रेष्ठ	यम ७८
अज्ञानात् पिवते तोयं	अत्रिस २५१
अज्ञानात् पिवते तोयं	अंगिरस ७
अज्ञानात् प्राप्य विण्मूत्र	पराशर १२.२
अज्ञानात् प्रास्य विण्मूलं	अत्रि स ७५
अज्ञानात् प्राश्य विण्मूत्र	औ ९.४२
अज्ञानात् प्राश्य विण्मूत्र	मनु ११.१५१
अज्ञानात्त सुरा पीत्वा	या ३.२५४
अज्ञानाद् भुक्ति शुद्ध्यर्थं	औ ९.५६
अज्ञानाद् भुंजते विप्राः	पराशर ११.१५
अज्ञानाद् ब्राह्मणो भुक्त्वा	लघुयम २६
अज्ञानाद् ब्राह्मणोऽश्नीयात्	अत्रिस १७४
अज्ञानाद्यादिवा ज्ञानात्कृत्वा	मनु ११.२३३
अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा	आश्व २४.२८
अज्ञानाद्वारुणी पीत्वा	मनु ११.१४७
अज्ञानाभिगतौ स्त्रीणां	वृ परा ८.२४८
अज्ञाना मिच्छया ज्ञानं	विष्णु म ९१
अज्ञानेन प्रमादेन	भार ६.१७६

अतः शुद्धिं प्रवक्ष्यामि	पराशर ३.१
अतश्च भ्रूमहत्याया	व १.५.११
अतः सम्यग्विधिं ज्ञात्वा	भार १५.५
अतस्तस्य तेषां तु	वृ परा २.७६
अतस्तु विपरीतस्य	मनु ७.३४
अतस्मिन् तत्त्वमारोप्य	आंपू १२३
अतः स्यात्कर्ममध्येऽपि	कण्व ३२७
अतः स्वल्पीयसि द्रव्ये	मनु ११.८
अतिकृच्छ्रं चरेत्पूर्वं	अत्रि ५.६६
अतिकृच्छ्रं पराकञ्चत्र्यब्दं	वृ हा ६.३८९
अतिक्रमं मृताहस्य	आश्व २४.२९
अतिक्रान्तं तु कर्तव्यो	व २.६.४३६
अतिक्रान्ते दशाहे च	मनु ५.७६
अतिक्रान्ते दशाहे तु	अत्रि ५.२९
अतिक्रामन्ति ये कालं	विश्वा ६.१५
अतिक्रामेत् प्रमत्त या	मनु ९.७८
अतिक्षुदैककालेषु	आंपू २१३
अतिगुह्यमिदं शास्त्र	कपिल ५६०
अतिगुह्यमिदं शास्त्र सर्व	लोहि ५७६
अतिमानादतिक्रोधात्	पराशर ४.१
अतिमानादतिक्रोधात्	वृ परा ८.५०
अतिचातुर्यतोऽतीव	आंपू ५८२
अतिदाहे चरेत् पादं	पराशर ९.२९
अतिदाहेऽति वाते च	पराशर ९.२८
अतिदीर्ण तक्रं	वृ हा ४.११७
अतद्व्रतकृतं कर्माकृत	लोहि ४३२
अतिथित्वेऽपि वर्णेभ्यो	या १.१०७
अतिथिन्तं विजानीयान्	व २.६.१९२
अतिथिं च गुरुञ्चैव	व २.५.६०
अतिथिं चाननुज्ञाप्य	मनु ४.१२२
अतिथिं श्राद्ध रक्षार्थं	प्रजा १९५
अतिथिं श्रोत्रियं तृप्त	या १.११३
अतिथिः यस्य भग्नाशो	वृ गौ ६.८९
अतिथिर्यस्य भग्नाशो	पराशर १.५३
अतिथिन्स्तर्पयित्वाऽथ	व २.६.२३०
अतिथींश्च लभेमहि	ब्र.या. ४.१३९
अतिथेऽमरदेहस्त्वं	वृ परा ४.२०४
अतिथौ तद्दिनभ्रान्त्या	आंपू ९४८
अतिथ्याराधानादीनि	नारा ५.१६
अतिपक्वमपर्वताक्षेमंदग्धं	कपिल २२१
अतिपक्वाअपक्वा	भार १४.५१
अतिपक्वान्यपक्वानि	भार १४.१५
अतिपापादतिखलादति	कपिल ९८२
अतुलादिपदैश्चपि संयुक्त	कपिल ९१६
अतृप्ता एव नोते	आंपू १०९३
अतिरात्रात्परं तस्या	कण्व ४९२
अतिरात्रोऽप्तोर्यामश्च	कण्व ४९४
अतिरिक्तं न दातव्य	आप १.१२
अतिरोचनकं दिव्यं तृतीयं	वृ हा २.१०५
अतिर्यगुपेयात	व १.१२.१९
अतिलोम्नीं च निर्लोम्नी	ब्र.या. ८.१५७
अतिवादंस्तितिक्षेत	मनु ६.४७
अतिवालातिदोहाम्यां	आप १.२४
अतिवाहातिदोहाभ्यां	दा १०३
अतिवाह्यातिदोहाभ्यां	लघु शंख ५३
अतिवेला यदि भवेत्	शाण्डि ४.१७१
अतिवैदग्ध्यमापन्नां अत्यन्त	लोहि ६७२
अतिसूक्ष्मा अतिस्थूलाः	भार ७.२२
अतीत व्यवहारान्	बौधा २.२.४३
अतीतानागतेम्यश्च	बृ. या. ८.५५
अतीते दशारात्रे तु	शंख १५.१२
अतीत्य वीरजामाशु	वृ हा ७.३२२
अतीन्द्रियः नमस्तुम्यं	विष्णु म ५६
अतीन्द्रियः सुदुष्पारः	विष्णु १.५१
अतैजसानामेव भूतानां	बौधा १.५.५०
अतैजसानि पात्राणि	मनु ६.५३
अतोऽजयन्मुनयो लोका	भार १८.१२२
अतो देवा इति जपन्	व २.७.९८
अतो देवोतिसूक्तेन	वृ हा ७.२९८
अतोदेवेति सूक्तेन	वृ हा ८.२३१

अत्राहं कथयिष्यामि	ल हारी १.३
अत्रिर्भृगुःकुत्ससशङ्गा	भार १९.९
अत्रिर्वशिष्ठः काश्यप	भार १७.७
अत्रेति चानुमंत्र्याथ	आश्व २३.७५
अत्रेन्दुराद्ये प्रहरे	कात्या १६.७
अत्रेर्विष्णो साम्वर्ता	पराशर १.१४
अत्रैव गायेत्सामनि	व १.२३.४२
अत्रैव पितृयज्ञश्च	आंपू ६१५
अत्रोक्तं सर्वमंत्राणां	भार ५.५२
अत्रोचुरपरे केचित्	वृ परा १०.९५
अत्रौरसः प्रकृथितः धर्म	लोहि ७९
अर्थिनामिष्टदानेन सर्वदा	शाण्डि १.२७
अत्वरः सुमनाः क्रोधकामं	शाण्डि ४.२७
अथ ऊद्ध्वँ दन्तजन्म	औ ६.१६
अथ कमण्डलचर्या	बौधा १.४.१
अथ कमण्डलुचर्या	बौधा १.१२.१६
अथकर्णवेधं धः वर्षे तृतीये	ब्र.या. ८.३५६
अथ कल्पं प्रवक्ष्यामि	भार १९.१
अथ कश्चित्प्रमादेन	औ ७.३
अथकिं बहुनोक्तेन	वृ परा १०.२२३
अथ कृष्णायसीं दद्यात्	औ ९.९
अथ कृतापसव्ययो	शंख १३.८
अथ खल्वयं पुरुषो	व १.२२.१
अथ गोघ्नस्य वक्ष्यामि	वृ परा ८.१२४
अथ चप व्रजेद् विद्वान्	वृ हा ८.२१४
अथ चान्द्रायण विधि	व १.२३.३९
अथ चेत्त्वरते कर्तुं	व १.२७.१७
अथ चेदद्भिकच्छिष्टी	बौधा १.५.३१
अथ चेदनृतं ब्रूयुः	नारद १२.७
अथ चेदन्नेनोच्छिष्टी	बौधा १.५.३०
अथ चेन्न लभेतान्यां	कात्या ६.१५
अतचेन्मंत्रविद्युक्तः	अत्रि स ३४८
अथ चेन्मंत्रविद्युक्त	लघु शंख २२
अथ चेन्मंत्रविद्युक्तः	लिखित २८
अथ चेनमंत्रविद्युक्तः	व १.११.१७
अथ चेन्मंत्र विद्युक्तो	बृ. म. ३.३९
अथ चैव द्विजः कुर्यात्	आश्व २३.१
अथ तद् विन्यासो वृद्धि	कात्या १४.१
अथ तेषां क्रमेणैव	शाता ६.१६
अथ त्रयाणां वक्ष्यामि	आंउ १.२
अथ देयमदेयंच दत्त	नारद ५.२
अथ द्विराचमेदेवं सदैव	भार १६.७
अथ द्विजोऽभ्यनुज्ञातः	संवर्त ३५
अथ नावं सुविस्तीर्णां	वृ हा ७.२५३
अथ नित्योत्सवे पूजा	वृ हा ६.५१
अथ नैमित्तिकं वक्ष्ये	व २.६.२३२
अथ पंगुजड़ोन्मत्तमूका	कपिल ३४४
अथ पतनीयानि	बौधा २.१.५०
अथ परिविविदानः	व १.२०.९
अथ पश्चिम संध्यायां	भार ६.१३६
अथपादादिमूर्ध्वातं	भार ६.८२
अथ पिण्डावशिष्टान्नं	औ ५.५०
अथ पुत्रादिनाप्लुत्य	कात्या २१.८
अथ पुष्पांजलि कृत्वा	ल हा ४.४९
अथ पूजा प्रवक्ष्यामि	भार ११.४
अथ प्रक्षालयेत्पादौ	वृ.गौ. ७.२७
अथ भागवतीमिष्टिं	वृ हा ७.२०४
अथ भ्रातृणा दायविभागः	व १.१७.३९
अथ मासे चतुर्थे तु	व २.३.१
अथ मूलमनाहार्यं	मनु ८.२०२
अत यज्ञोपवीतस्य	भार १५.१
अथ यज्ञोपवीतस्य	भार १६.१
अथ यदर्वाचीनं	व १.२.९
अथ यदि दशरात्रा	बौधा १.५.१२४
अथ राजधर्माः	विष्णु अ ३
अतर्ववेदिनं तद्वदुत्तरे	वृ परा ११.२८२
अथर्वाङ्गिरसस्तुष्टै	भार ४.२६
अथर्वाशिरसि प्रोक्तमूर्ध्व	वाधू १०३
अथर्वेदस्योपवेदं	ब्र.या. १.४७
अथ वक्ष्यामि गायत्र्या	भार १२.१

अथातो नृपतेर्धर्म	वृ परा १२.१
अथातो भोज्याभोज्यं	व १.१४.१
अथातो यमधर्मस्य	बृ.य. १.१
अथातो ह्रस्य धर्मस्य	यम १
अथातो हिमशैलाग्रं	पराशर १.१
अथातो हिमशैलाग्रं	वृ परा १.२
अथात्तरोर्ध्वकाष्ठासु	भार २.१०
अथवात्मानं हृत्कमले	व २.६.६५
अथात् संप्रवक्ष्यामि	वृ परा ११.३१४
अथादाय स पुष्पाणि	वृ. गौ. ८.४७
अथादायाद बन्धूनां	व १.१७.२८
अथाऽऽदित्यनुपतिष्ठत	बौधा २.५.२०
अथाद्भिस्तर्पयेद्देवान्	कात्या १२.१
अथद्भुतानि जायन्ते	वृ परा ११.८८
अथानवेक्षयेत्पापः सर्व	कात्या २२.१
अथानित्वमभाग्यत्वं	वृ परा ५.१८८
अथान्नप्राशनं कुर्यात्	व २.३.९
अथान् यत् किंचित्	वृ परा ७.३२५
अथान्यत् पापमृत्यूनां	वृ परा ७.३०२
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ४.६९
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ८.१७५
अथान्यत्संवक्ष्यामि	वृ परा १०.१०४
अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि	वृ परा १०.२४९
अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि	वृ परा ११.२९७
अथान्यत्स सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा १२.२७७
अथाप उपस्पृश्यत्रि	बौधा २.५.१०
अथापरः कृच्छ्रविधि	व १.२३.३६
अथापरं भ्रूणहत्यायां	व १.२३.३२
अथापरेद्युरभ्यज्य	आश्व १०.३
अथापि तस्य यो वह्नि	लोहि १२१
अथाऽपि तस्याऽकरणेसद्यः	कपिल १६३
अथापि न सेन्द्रियः	बौधा २.१.६८
अथापि नांद्यांतस्यापि	कपिल ३६५
अथापि ब्राह्मणाय वा	व १.४.८
अथापि भाल्लाविनो	व १.१.१३

अथापि मुख्यसार्थ निश्चयैः	कपिल ९
अथापि यमगीता	व १.१८.१०
अथापि वक्ष्यामि विधेः	वृ परा १०.३३६
अथापि वः प्रवक्ष्यामि	कण्व ८
अथापि सम्यक्कुर्वीत	कण्व ६८७
अथवोऽभिप्रपद्यते	बौधा २.५.४
अथाप्यत्र भाल्लविनो	बौधा १.१.२९
अथाप्यत्रान्नगीतौ	बौधा २.३.२१
अथाप्यत्रोशनसश्च	बौधा २.२.८९
अथाप्युदाहरन्ति	बौधा १.१.८
अथाप्युदाहरन्ति	बौधा १.१.३३
अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.६
अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.१०,१३
अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.३०
अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.३१
अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.५[illegible]
अथाप्युदाहरन्ति	व १.३.१[illegible]
अथाप्युदाहरन्ति	व १.३.५२
अथाप्युदाहरन्ति	व १.४.२९
अथाप्युदाहरन्ति	व १.४.२४
अथाप्युदाहरन्ति	व १.५.३
अथाप्युदाहरन्ति	व १.१६.१२,१५,२५
अथाप्युदाहरन्ति	व १.१७.६०
अथाप्युदाहरन्ति	व १.१२.२०,३७
अथायमर्थ गायत्र्य	भार १०.१
अथार्चनोक्तद्रव्याणां	भार १४.१
अथार्द्धोधद्वयं कुर्यास्त्रीषि	ब्र.या. ८.२५५
अथार्हमिहियैरात्मा	शाण्डि ४.२०८
अथाव वन्धीते मद्य	ब्र.या. ८.११९
अथास्य ज्ञातयः परिषद्	बौधा २.१.४[illegible]
अथास्याः सविदा देवता	शंख १२.९
अथेदमूर्ध्वपुण्ड्रन्तु	वृ हा २.६९
अथैकविंशतिदर्भान्न	व २.३.२७
अथैतस्याः प्रवक्ष्यामि	भार ९.१
अथैतानि द्विजेभ्यो	वृ.गौ. १०.६६

अनडुत्सम्प्रदानस्य	वृ गौ. ७.३
अनडुत्सहितां गाश्च	पराशर ४.६
अनडुहां सहस्राणां	व १.२९.१९
अनड्वान् ब्रह्मचारी	व १.६.१९
अनड्वाहं च वस्त्र च	वृ परा ११.१६७
अनड्वाहौ च यो दद्यात्	संवर्त ७०
अनधीत्य द्वयं मंत्र	वृ हा २.१३४
अनधीत्य द्विजो वेदान्	मनु ६.३७
अनधीत्यैव यो वेदं	कण्व ४२७
अनध्यायदिनं वर्षं सोमारो	व २.३.१५७
अनध्यायं प्रकुर्वीत	व २.३.१५८
अनध्याये तु योऽधीते	ब्र.या. ८.७२
अनध्यायेऽप्यधीमानो	शाता ६.१५
अनध्यायेष्वधीयानाः	शंख १४.४
अनध्यायो विनाशेच	औ ३.७८
अननतकृत पापो पि	वृ परा ५.१६७
अनन्तगरुडादीनामयं	वृ हा ७.२२१
अनन्त दीपारेखादि	वृ हा ४.५१
अनन्तभोगिपर्य्यंके	वृ हा ४.९
अनन्तं चाप्रमेयं च	बृह १२.४०
अनन्तं नयते स्थानं	बृ.या. २.११९
अनन्तरं विप्रभुक्तेः	आंपू १०९६
अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य	मनु ९.१८७
अनन्तरः स्मृतः पुत्र	नारद १३.१०६
अनन्तरासु जातानां	मनु १०.७
अनन्तःर्गर्भिणं साग्रं	कात्या २.१०
अनन्तर्गर्भिणं साग्रं	प्रजा १०५
अनन्तं विहगाधीशं	वृ हा ७.७७
अनन्तविहागाधीश	वृ हा ४.६३
अनन्त विहगेशानां	वृ हा ३.१५०
अनन्ता जायते तृप्ति	ब्र.या. ४.११
अनन्तान् भगवान् मंत्रान्	वृ हा ३२८
अनन्ताः पुत्रिणां लोका	व १.१७.२
अनन्तारमपस्तस्य	ब्र.या. २.१७३
अनन्ता रश्मयस्तस्य	या ३.१६६
अनन्ताश्च यथा भावाः	या ३.१३२
अनन्निरस्पृशेन्नोधं	ब्र.या. २.१९०
अनन्यचित्तो भुंजीत	व्यास ३.६५
अनन्यचेतसो शांता	ल व्यास १.२८
अनन्यदर्शी सततं	औ ३.२०
अनन्यदेवता भक्त्या	वृ गौ. ८.९३
अनन्यपूर्विकां लध्वीं	व्यास २.३
अनन्यमनसं शांतं	आप १.३
अनन्यविषयं कृत्वा	या ३.१११
अनपत्यः कूटसाक्षी	औ ४.३३
अनपत्यस्य पुत्रस्य	मनु ९.२१७
अनपत्यस्य पुत्रार्थं	वृ परा ११.२९८
अनपत्या च या नारी	व्या ६०
अनुपत्यातु या नारी	आंगिरस ७०
अनपत्येषु प्रेतेषु न	वृ परा ७.३५३
अनभि संधिकृते	व १.२०.१
अनभ्यस्ताक्षरेणापि न समः	कपिल ६८०
अनभ्यासेन वेदानाम्	मनु ५.४
अनयन् नादायित्वा	नारद ७.६
अनयन् वाहकोऽप्येवं	नारद ७.९
अनया निखिलाश्चापि	लोहि ७.१९
अनया सदृशी ज्ञानं न	विश्वा १.४४
अनया सह तीर्थेषु	प्रजा ३
अनयैवावृता नारी	कात्या २३.७
अनयोर्नान्यथेत्यवक्तं	वृ हा ३.८४
अनर्क्षरार्जवेपश्चात्	व २.४.१८
अनर्चनीया रुद्राद्या	वृ हा ८.२६३
अनर्चयित्वा मूढात्मा	वृ हा ८.३१०
अनर्चयित्वा यः अश्नाति	वृगौ ६.६३
अनर्चितं वृथामांसम	मनु ४.२१३
अनर्च्चितम् वृथामांसं	या १.१६६
अनर्चिते पद्मनाभे	वृ हा ६.४३४
अनर्थशीलां सततं	नारद १३.९५
अनर्पितं भगवते स्वाराध्यायं	शाण्डि ४.७६
अनलादर्शनं यावत्	व्या ३७०

अनिन्द्येषु च विप्रेषु	व २.३.७१
अनियतकेशवेशाः	व १.२.२६
अनियता वृत्रि	व १.२.२५
अनियुक्तः सुतो यस्तु	औ ५.९१
अनियुक्ता तु या नारी	नारद १३.८४
अनियुक्तासुतश्चैव	मनु ९.१४३
अनियुक्तो भ्रातृजायां	या ३.२८७
अनिरुद्धञ्च मां प्राहु	वृ गौ. ८.८९
अनिरुद्धो वामनश्च	वृ हा ५.११९
अनिर्दशाया गौः क्षीर	मनु ५.८
अनिर्दशाहगोक्षीर	वृ हा ४.११६
अनिर्दशाहसंधीनीक्षीरं	बौधा ५.१५६
अनिर्दशाहगोक्षीर	व २.६.१८१
अनिर्दशाहगोः क्षीर षष्ठयां	वृ हा ८.१२६
अनिर्दशाहां गां सूतां	मनु ८.२४२
अनिर्दशाहे पक्वान्नं	व १.४.२६
अनिर्दिष्टस्य पापस्य	वृ परा ८.११५
अनिर्दशञ्च प्रेतान्न	वृ गौ. ११.१८
अनिर्देश्यपरामाणम	विष्णु १.४०
अनिलं रेचयेद्योगी	वृ परा १२.२१८
अनिवर्त्यानि घोराणि	कपिल ९६५
अनिवेदिते तदर्धं	वृ परा ५.१६४
अनिवेद्य तु यो राज्ञः	नारद १.४०
अनिवेद्य नृपे शुद्ध्यै	या ३.२५७
अनिष्ट ध्वंसिनी माया	वृ हा ७.१९७
अनिष्टा प्रतिकूला वा	वाधू १४८
अनिष्टा तु पितृंश्राद्धे	कात्या १.१७
अनिष्टाव नवयज्ञेन	कात्या १८.२०
अनिनष्ट्रा नवयज्ञेन	कात्या २५.१८
अनीतवान् विधिरिमान्	वृ परा ७.१८२
अनुकूलफलत्रीयस्तस्य	दक्ष ४.५
अनुकूला नवाग्दुष्टा	दक्ष ४.१२
अनुक्तनिष्कृतीनां तु	मनु ११.२१०
अनुक्तमन्त्रैः काश्चित्तु	आपू ८०३
अनुक्तविधिनामन्त्र प्राणायामं	विश्व ३.५७
अनुक्तवृत्तिस्त्वाज्ञातः	वृ परा ७.९
अनुगच्छेद्यथा प्रेत	अत्रि ५.३७
अनुगम्येच्छया प्रेतं	पराशर ३.४८
अनुगम्येच्छया प्रेतं	मनु ५.१०३
अनुगृह्नामि अहं तस्य	वृगौ १.४९
अनुग्रहाय सौलभ्यकारणाय	कपिल ९९४
अनुग्रहार्थं विप्राणां	व १.२३.३८
अनुच्छिष्टमसंदुष्टं	व्यास ३.५२
अनुच्छिष्टेन शूद्रेण	पराशर ७.२२
अनुच्छिष्टेन संसाष्टे	यम ४२
अनुच्छिष्टेन संस्पृष्टे	लघु यम १५
अनुच्छिष्टेन संस्पृष्टौ	आंगिरस ११
अनुच्छिष्टोऽपि यत्	वृ परा ८.२५९
अनुज्ञातश्च गुरुणा	शंख ३.३
अनुज्ञारहितायाश्च	शाण्डि ३.१२३
अनुडुत्सहितां गांच	अत्रि स २२४
अनुतापाद्य दा पुंसां	बृ.य. ४.२८
अनुतीर्थमप उत्सिञ्चति	बौधा २.५.२०९
अनुतीर्थमपि अत्सिंचति	बौधा २.३.३
अनुत्पन्नप्रजायास्तु	नारद १३.८०
अनुद्धतजनैर्युक्तो योग	शाण्डि ५.४४
अनुद्धृत्य तु यः स्नायात्	बृ.या. ७.११०
अनुपघ्नन्पितृद्रव्यं	मनु ९.२०८
अनुपासित सिद्धस्तु	औ ९.६५
अनुपृष्ठमसीत्यादि	व २.४.४२
अनुपोष्य च रात्रिश्च	वृगौ. ७.१३०
अनुपोष्य च रात्रिञ्च	वृ गौ ७.१३२
अनुबन्धं परिज्ञाय	मनु ८.१२६
अनुब्राह्मणमेवं च सप्ता	कण्व ५२९
अनुभावी तु यः कश्चित्	मनु ८.६९
अनुभूय च दुःखास्ताश्चिरं	नारद २.१९७
अनुमन्ता विशसिता	मनु ५.५१
अनुमासिकमोक्तारं	आपू ७६०
अनुयाजप्रयाजांश्च	बृ.गौ. १५.६५
अनुरक्तः शुचिर्दक्षः	मनु ७.६४

अनेन विधिनाश्रांध	मनु ३.२८१
अनेन विधिना श्रांद्धं	व्या १८९
अनेन विधिना सर्वाः	मनु ६.८१
अनेन विधिना स्नात्वा	शंख ९.१४
अनेन विधिनोत्पन्नो	आश्व १५.४९
अनेन विप्रो वृत्तेन	मनु ४.२६०
अनेन भवति स्तेनः	नारद १८.१०५
अनेनैव गृहोद्यान	नारद १२.१२
अनेनैव विधानेन	ब्र.या. ४.४१
अनेनोक्तप्रकारेण धारये	भार १६.९
अनोकानामन्येषां सम	भार १८.२१
अनेनियुद्धिरित्य	वृ परा ११.३४१
अनौरसेषु पुत्रेषु	या ३.२५
अनौरसेषु पुत्रेषु	शंख १५.१३
अनौषधमभैषज्यं	वृहस्पति ४६
अन्तः पूर्णमधः पूर्णमूर्ध्वं	लोहि ५९१
अन्तप्रज्ञ बहिप्रज्ञ	वृ परा ३.१४
अन्तः प्रज्ञो बहि प्रज्ञो	बृ.या. २.२३
अन्तः प्रविष्टेषु तदा	वृ हा ६.३९४
अन्ताभिगमने त्वंक्य	या २.२९७
अन्तरं कुशविन्यस्य तूष्णीं	ब्र.या. ८.२६०
अन्तरं शुद्ध्यते यस्मात्	वृ परा १२.२४२
अन्तराच्छाद्य कौपीनं	वाधू ९९
अन्तराच्छाद्य कौपीनं वाससी	शाण्डि२.३९
अन्तरा जन्ममरणे	या ३.२०
अन्तरा तु दशाहस्य	पराशर ३.३५
अन्तरिक्षकरं विद्धि	वृगौ १.५३
अन्तरिक्षमथो स्वाहा	विश्वा ५.३७
अन्तरिक्षमधश्चैव	बृह ९.१६०
अंतरिक्ष नंखस्पृष्टं	भार ४.२४
अन्तरिक्षे मृताये	दा १५१
अन्तरेण चात्वालोत्कारो	बौधा १.७.१४
अन्तरेऽस्मिन्निमे लोक	बृह ९.१९
अन्तर्गत जलेमग्नो	ल व्यास २.२१
अन्तर्गतशवे ग्रामे	मनु ४.१०८
अन्तर्जलं च कतमै	बृ.या.१.१५
अन्तर्जला खेयतोया	आंपू ९३३
अन्तर्जलात् त्रिरावृता	ल व्यास २.२३
अन्तर्जले जपेन्मग्नस्त्रि	बृ.या. ७.२७
अन्तर्जानुः शुचौदेश	या १.१८
अन्तर्जानुः शुचौ देश	वाधू २१
अन्तर्जानुः शुचौ देशे	शंख १०.५
अन्तर्दशाहे भुक्त्वान्नं	आंउ ९.१
अन्तर्दशाहे चेत्स्यातां	मनु ५.७९
अन्तर्दशाहे स्याचे	ब्र.या. १३.१३
अन्तर्द्धानं स्मृति	या ३.२०२
अन्तर्धाय कुशांस्तेषु	आश्व २३.४२
अन्तर्धाय महीं काष्ठै	औ २.३४
अन्तर्बहिश्च संशुद्धि	शाण्डि ३.१३८
अंतर्भावद्विजेष्वेव प्राप्नोति	कपिल ३२९
अन्तर्भीरून बहि शूरान्	वृ परा १२.३६
अन्तर्वक्रो वहि सर्पन्	वृ परा १२.२६५
अन्तर्वर्त्नीं स्त्रियों गाश्च	वृ हा ६.१७२
अन्तर्वत्न्य तथाऽऽत्रेय्यां	वृ हा ६.२३९
अन्तर्वास उत्तरीयम्	बौधा १.३.२
अन्तवदन्तसलिल	औ २.२७
अन्तः शरीरप्रभवमुदान	बृ.या. २.४८
अन्तश्चरति भूतेषु	शंख १०.१७
अन्तश्चरसीतितिर	ब्र.या. २.७३
अन्तस्तेजो बहिश्चक्षुरथः	विश्वा ३.३१
अन्तिमं मूर्ध्नि विन्यस्य	बृ.या. ५.११
अन्ते चावभृथोष्टिस्रुच	वृ हा ७.६६
अन्ते चावभृथेष्टिं च	वृ हा ७.२६६
अन्ते वै दिवसेत	ब्र.या. १३.१४
अन्ते स्वर्गसुखं भुक्त्वा	नारा ५.२१
अन्त्यजातिमविज्ञातो	आप ३.१
अन्त्यजातिश्वपाकेन	आप ७.५
अंत्यजातु प्रतिगृह्या	अ २३
अन्त्यजानां गृहेतोयं	अंगिरस ४
अन्त्यजाभाजने भुक्त्वा	संवर्त १९४

अन्नं पितृमनुषयेभ्यो	या १.१०४
अन्नं पूर्वं नमस्कुर्यात्	बृ.गौ. १३.६
अन्नं प्राणो जलं प्राणः	वृ परा १०.२४४
अन्नं प्राणो बलं चान्नं	वृ परा ५.१११
अन्नं रसमयं कृत्स्नं	बृह ९.१३६
अन्नं विभज्यभूतेभ्य	शंखलि ४
अन्नं विष्णू रसो ब्रह्मा	ब्र.या. २.१६३
अन्नं शूद्रस्य भोज्यं	यम २१
अन्नं सुसंस्कृतं वाणि	वृ परा ५.१६६
अन्नं सुसंस्कृतं हृद्यं	शाण्डि ४.५२
अन्नलाभे तु होतव्यं	वृहा ५.२५६
अन्नशुद्ध्यैव सत्कर्म	शाण्डि ४.१३६
अन्नहर्तामयावित्वं मौक्यं	मनु ११.५१
अन्नहीनं क्रियाहीनं	औ ३.१२८
अन्नाक्तभाजन स्थानि	आश्व १.१७२
अन्नात् तस्मात् प्रवर्तन्ते	वृ.गौ. ६.२५
अन्नात्तेजो मनः प्राण	शंखलि १६
अन्नात्प्राणाः	ब्र.या. ११.३९
अन्नात् भवन्ति राजेन्द्र	वृ.गौ. ६.२४
अन्नदेरपि भक्ष्यस्य	वृ परा ६.३३०
अन्नादेर्भ्रूणहा मार्ष्टे	मनु ८.३१७
अन्नादेर्भ्रूणहामार्ष्टि	व १.१९.२९
अन्नाद्यजानां सत्त्वानां	मनु ११.१४४
अन्नाद्ये कीटसंयुक्ते	पराशर ६.६२
अन्नाभावे तु कर्तव्य	ब्र.या. ४.५४
अन्नाभिमर्शने प्रोक्तं	आंपू ८२९
अन्नार्थं मातरिश्वायं	वृ परा १०.१५
अन्नार्थमेतानुक्षाणाः	वृ परा ५.१०९
अन्नार्थी पवते वायु	बृह ९.१४७
अन्नार्थी वाप्यमं	ब्र.या. २.१८०
अन्नेन एव हि जीवन्ति	वृ गौ ६.१८
अन्नेन धार्यते सर्वं	वृ गौ. १२.२९
अन्नेन पूजनीयः स	वृगौ. १२.३४
अन्ने भोजनसम्पन्ने	आप ९.१४
अन्ने श्रितानि भूतानि	बौधा २.३.६८

अन्यत्र वा शुभे	वृ परा ५.७८
अन्यं हौताशनं मंत्र	वृ परा ४.१८८
अन्यकार्याय न भवे	कण्व ७६९
अन्यगेहे तथा चान्तः	व २.६.४६३
अन्यगोत्रप्रदत्तश्चेत्	आपू ९९९
अन्यगोत्रप्रदत्तो यः	कण्व ७०७
अन्यगोत्रप्रविष्टस्य सुतो	कपिल ३५८
अन्यगोत्रप्रविष्टस्य सूनुश्चेद्ध	कपिल १०२
अन्यजातिविवाहे च	औ ९.५१
अन्यतीर्थेन गृह्णीया	वाधू ५७
अन्यत्कुर्यान् मनस्वान्	वृ परा १२.३५०
अन्यत्तु ब्राह्मणात्	नारद १४.४९
अन्यत् प्राणि वधस्थाय	वृ परा ८.१६०
अन्यत्र कारादुचिताद्	नारद १८.४५
अन्यत्र तु जपं कुर्वन् पुनः	वाधू १२७
अन्यत्र देवायतना	व २.६.२३१
अन्यत्र पुष्पमूलेभ्य	शंख १४.१३
अन्यत्र फलमूलेभ्यः	औ ५.५५
अन्यत्र ब्राह्मणात्	व १.१.४४
अन्यत्र रजकव्याध	नारद २.१६
अन्यत्र मृणुयाज्ज्ञेयमनु	शाण्डि १.१०८
अन्यत्र संप्रहास्य	व १.१७.५३
अन्यत्राङ्कनलक्ष्मभ्यां	आउ १०.१२
अन्यत्रांकनलक्ष्मभ्यां	पराशर ९.२७
अन्यत्राजाविभ्यः	बौधा ५.१५१
अन्यत्राऽऽततायिनः	बौधा १.१०.१२
अन्यत्रोदकवर्मस्वधा	व १.२.१३
अन्यत्समाचेरत्सर्वं	शाण्डि ४.२२९
अन्यत्सर्वं यथापूर्वं	भार ६.१३५
अन्यथा चैव स ज्योति	औ ६.४७
अन्यथा तस्य गोत्रस्य	कण्व ७१२
अन्यथा दापयेद्यस्तु	देवला ६७
अन्यथा दोषमाप्नोति	लोहि ३९
अन्यथा नरकं याति	वृ हा ७.२४
अन्यथा मन्दबुद्धीनां	विष्णुम १०२

अन्येषु चाद्‌भुतोत्पातेष्व बौधा १.११.४०
अन्येषु ये तु मथ्नंति कात्या ७.१२
अन्येषु शिल्पशास्त्रेषु भार २.७०
अन्येष्वापि तु कालेषु मनु ७.१८३
अन्यैरपहृतां दृष्ट्वां अ ९७
अन्यैर्वा यज्ञियैः काष्ठैः वृ हा ८.११४
अन्यैः वापिशुभै र्द्रव्यै व २.४.६१
अन्यैश्चापावभानाद्यैः व २.६.१३८
अन्यैस्तु खनिताः कूपा आप २.५
अन्योदर्यस्तु संस्टष्टी या २.१४२
अन्योद्वाहेन केनापि वृ परा १०.१७१
अन्योन्यमनसा औ ५.४
अन्योन्यं त्यजतोर्नागः नारद १३.९२
अन्योनस्यशतेरिष्टं व २.४.१०१
अन्योन्यस्याव्य भीचारी मनु ९.१०१
अन्योन्यान्नप्रदा विप्रा संवर्त ९०
अन्योन्यापहृतं द्रव्यं या २.१२९
अन्योपयुक्तशेषं च वर्ज्यं शाण्डि ५.१२
अन्वये लिंगतोऽर्था आपू ८
अन्वये सति भूदानं सहसा कपिल ४८३
अन्वष्टक्यं च पूर्वे दा ६९
अन्वष्टक्ये पितृभ्यश्च प्रजा १९२
अन्वहं कृच्छ्रफलदं लोहि ४७०
अन्वाधेयं च यद्दत्त मनु ९.१९५
अन्वारब्धापसव्येन वृ परा २.१७७
न्वारब्धे नमत्येन ब्र.या. २.९१
न्वारब्धेन सव्येन बृ.या. ७.६८
अन्वारब्धौ तथा घारौ ब्र. या. ८.२८८
अन्वारभ्य तु सव्येन वृ.गौ. ८.५७
अन्वाष्टक्यंमध्य कात्या १७.२४
अन्वाहितं याचितकमाधिं नारद ५.४
अन्वाहितं याचितकमाधि ब्र.या. १२.४
अन्वितान् ब्राह्मणानेव वृ हा ८.३२९
अन्वेषणमंगुल्या मुख भार ८.६
अन्वेष्याऽन्वेष्य तत अ ८
अन्हो अह्नेर्दिनात्तद्‌त्वीया कपिल ८०४
अप एव समाश्रित्य आंपू ११११
अपः करनखस्पृष्टाः यम ६५
अपक्त्यदाने यो दातु मनु ३.१६९
अपक्वचूर्णलवणभाजना कपिल २०४
अपक्वं वाऽपि पक्वं शाण्डि ३.४३
अपक्वाशनिना स्थेय वृ परा १०.९८
अपचस्य च यद्दाने पराशर ११.४४
प्रपर्चो ब्रह्मणश्चोक्तः बृ.या. २.२१
अपत्नीकः कथमयं कण्व ३९३
अपत्नीकः प्रवासी च दा ८१
अपरत्नीके प्रवासे च व्या १९२
अपत्यमुत्पादयितु नारद १३.५४
अपत्यं धर्मकार्याणि मनु ९.२८
अपत्यलोभाद्या तु स्त्री मनु ५.१६१
अपत्यानि विनश्यन्ति जपं ब्र.या. ९.२६
अपत्यार्थ स्त्रियं सृष्टाः नारद १३.१९
अपदिश्यापदेशं चार्थं मनु ८.५४
अपनीतेव्रर्तस्यापि पुनः कण्व ५१०
अपः पयोघृतं पराक बौधा २.१.९०
अपः प्राश्य ततः पश्चात व्यास ३.६४
अपमानात्तपोवृद्धि आप १०.९
अपेयपयः पाने कृच्छ्रो बौधा १.५.१५९
अपरक्ष ऊर्ध्वं चतुर्थ्यां व १.११.१४
अपराजितां वाऽऽस्थाय मनु ६.३१
अप्राणि सर्वकर्माणि व २.३.८९
अपराधं परिज्ञाय नारद १८.९६
अपराधशतै र्जुष्टं वृ हा २.११९
अपराधसहस्राणि कृतानि कपिल ५५५
अपराधानुगुण्येन द्वादशा लोहि ५४३
अपराधो यदि भवेत् शाण्डि ३.१५४
अपरान्तकमुल्लोप्यं या ३.११३
अपरासु तथानुष्टुप् वृ परा ११.१८८
अपराह्णस्तथा दर्भा मनु ३.२५५
अपराह्नेसमभ्यर्च्य ब्र.या. ४.५८

अपृच्छद्गोत्रचरणेन	व २.६.१९४
अपेक्षितं न यो दद्यात्	व्या २३८
अपेक्षितं याचितव्यं	व्या २३७
अपेक्षितं यो न दद्यात्	व्या १६६
अपेक्ष्यं नास्ति किमपि	कण्व १९३
अपेत्थं अंकमित्युक्त	वृ हा २.३५
अपेयन्तद्विजानीयात्	बृ.गौ. १३.८
अपेयं तद्भवेदापः पीत्वा	अग्नि ५.२४
अपेयं येन संपीतं	देवल ७
अपोऽवगाहनं स्नानं	बौधा २.४.४
अपोशानिक्षिपेत्पाणौ	व्या १४८
अप्टाभिर्वा द्विजैर्धीर	कण्व ५७०
अप्नंशास्वाश्रमान्तरगताः	व १.१७.४६
अप्यनेकाङ्गविकलं क्रियते	कपिल ४४५
अप्यागतं तेन	आंपू २८
अप्युद्धृत्य यथाशक्त्या	कात्या १३.७
अप्येकपादं पूर्वं वा	लोहि ११४
अप्येकमाशयेद् विप्रं	कात्या १३.६
अप्येनं कुपितं रोषात्	लोहि ६५७
अप्रकाशास्तु विज्ञेया	नारद १८.५६
अप्रजः स्त्रीधनं भर्तुः	या २.१४८
अप्रजां दशमे वर्षे	बौधा २.२.६५
अप्रजा या तु नारी स्यान्न	आप ९.२४
अप्रजो मृतपत्नीक	प्रजा ७७
अप्रज्ञायमानं वित्तं	व १.३.१४
अप्रणामे तु शूद्रेऽपि	आंगिरस ५०
अप्रणोद्योऽतिथि सायं	मनु ३.१०५
अप्रतिष्ठित देवानां	वृ.परा ११.२०८
अप्रतिष्ठितमालाय साजपे	भार ७.५३
अप्रत्ता दुहिता यस्य	व १.१७.२५
अप्रत्तानां स्त्रीणां	व १.४.१८
अप्रत्याक्षा हिपितरो	आंपू ८६५
अप्रत्याग्उत्तर शिरा	व्यास ३.७०
अप्रत्यायगश्चैव	वृ परा ७.३५५
अप्रत्या स्थापन	व २.३.७०
अप्रदत्ता भवैकाह	ब्र.या. १३.३
अप्रदुष्टां प्रियांहत्वा	ब्र.या. १२.५०
अप्रदुष्टां स्त्रियं हत्वा	या ३.२६९
अप्रदेयं देयमिदं अवाच्यं	लोहि ६००
अप्रमत्तश्चरेद् भैक्षं	या ३.५९
अप्रमत्ता रक्षथ तन्तुमेतं	बौधा २.२.४१
अप्रमत्ता रक्षत तन्तुमेतं	व १.१७.९
अप्रमाणस्तु सा ज्ञेया	ब्र.या. ८.१६६
अप्रयच्छन् समाप्नोति	या १.६४
अप्रयच्छन्समाप्नोति	व २.४.३६
अप्रयत्नः सुखार्थेषु	मनु ६.२६
अप्रवक्तारमाचार्यमनधीयान	ब्र.या. १२.१६
अप्रवाहोदकं स्नानं	व्या २४१
अप्रवृत्तौ स्मृतो धर्म	नारद १३.१०३
अप्रसूताः स्मृता दर्माः	वृ हा ४.४३
अप्राणिभिर्यत् क्रियते	मनु ९.२२३
अप्राप्तव्यवहारश्च दूतो	नारद १.४७
अप्राप्तव्यवहारस्तु	नारद २.२७
अप्रामाण्यं च वेदनां	व १.१२.३८
अप्रायत्ये समुत्पन्ने	बृ.या. ६.३०
अप्रावृत्य शिरो यस्तु	वाधू १०
अप्रोक्ष्यापरिषिच्यैव	आंपू २४५
अप्सु निमज्जोन्मज्जय	बौधा २.५.११
अप्सुपाणौ च काष्ठै	व १.१२.१३
अप्सु प्रवेश्यं तं दंडं	मनु ९.२४४
अप्सु प्राप्तासु हृदयं	वाधू २५
अप्सु भूमि वदित्याहु	मनु ८.१००
अप्सुमे च समारभ्य	विश्वा ४.१५
अप्सुमे त्रीणि चोक्तानि	विश्वा ४.१२
अप् स्वग्ने सधिष्टवेति	वृ हा ८.४८
अप्स्वग्नौ हृदये सूर्ये	वृ हा ५.८५
अप्स्वात्मानं नावेक्ष्येत	ब्र.या. ८.१३२
अफालकृष्टे नाग्नींश्च	या ३.४६
अबद्धं मनो दरिद्र	बौधा १.७.३०
अबन्धके स्याद् द्विगुणं	वृ हा ४.२२७

अभ्यच्चर्यैवं रथं वृ हा ६.३१
अभ्यर्च्य गन्धपुष्पाद्यै वृ हा ६.१२९
अभ्यर्च्य मुसलं पुष्पै वृ हा ६.८५
अभ्यर्च्य श्रद्धया प्राप्तान् शाण्डि ४.८८
अभ्यर्च्य विधिवद्धि वृ.गौ. ७.८३
अभ्यर्च्य विप्रमिथुनान् वृ हा ५.४०८
अभ्यर्च्य समलंकृत्य कण्व ६२८
अभ्यसेच्च महापुण्यां संवर्त २१०
अभ्यसेत् प्रणवं नित्यं वृ परा ४.१०५
अभ्यसेत् प्रयतो वेदं औ ३.८८
अभ्यस्येत्प्रीतिमान् बृ.गौ. १८.३२
अभ्यागत अन्यथा ल व्यास २.६३
अभ्यागतो ज्ञानपूर्वः वृ.गौ. ६.५५
अभ्यागतो तिथिश्चान्यः दक्ष २.२९
अभ्यासस्सततं सर्व शाण्डि ३.६३
अभ्यासे तु व्रतं पूर्ण वृ हा ६.३०५
अभ्यासे तु व्रतं पूर्ण वृ हा ६.३८०
अभ्यासे तु षड ब्दं वृ हा ६.३७८
अभ्यासे तु सुराया व १.२०.२५
अभ्यासे त्रिगुणं चैव नारा २.४
अभ्यासोदशसाहस्रः व १.२५.१२
अभ्युक्ष्यान्नं नमस्कारै व्यास ३.६३
अभ्युत्थानानि वक्ष्यामि ब्र.या. १२.३०
अभ्युत्थानमिहागच्छ दक्ष ३.५
अभ्युद्धृत्य यथाशक्ति ब्र.मा. २.२११
अभ्युपगम्य दुहितरि बौधा २.२.१७
अभ्युपेत्य च सु शुश्रूणा नारद ६.१
अभ्रातकं मदूकञ्च व २.६.२१
अभ्रातृका पुंसः पितॄन व १.७.१६
अभ्रातृकां प्रदास्यामि लिखित ५४
अभ्रातृकां प्रदास्यामि व १.१७.१८
अभ्रिं कार्ष्णायसीं दद्यात् मनु ११.१३४
अमत्या दशकृच्छ्राणि नारा १.२५
अमत्या पाने कृच्छ्राब्दपादं बौधा २.१.२२
अमत्या ब्राह्मणं हत्वा बौधा २.१.६

अमत्यायुगतोदानैर्निष्कृतः नारा १.१७
अमत्या वारूणी पीत्वा बौधा २.१.२५
अमत्यैतानि षड्जग्ध्वा मनु ५.२०
अमनोरञ्जकान्यद्य शास्त्राणि नारा ७.२१
अमंत्रकं प्रकुर्वीतं वृ हा ६.११३
अमन्त्रतं विधानेन आंपू ८१२
अमन्त्रकेण होतव्यं लोहि १२६
अमंत्रदग्धो न भवेदमंत्रो कपिल ६५८
अमन्त्रं वा समन्त्रं वा विश्वा ८.२१
अमंत्राणां दहनम् बौधा १.५.३६
अमंत्रिका तु कार्येयं मनु २.६६
अमात्यमुख्यं धर्मज्ञ प्राज्ञ मनु ७.१४१
अमात्यराष्ट्रदुर्गार्थे मनु ७.१५७
अमात्यान् मंत्रिणों वृ परा १२.११
अमात्याः प्राड् विवाको मनु ९.२३४
अमात्ये दण्ड आयत्तो मनु ७.६५
अमात्यो नं तथा क्वापि किं कपिल ४९३
अमात्रं च त्रिमात्रं च बृ.या. २.१४५
अमादर्शादिषु तथा कण्व ७५७
अमादिकानां श्राद्धानां लोहि ३४१
अमानिनः सर्वसहा वृ.गौ. १२.२२
अमानुषीपु पुरुष मनु ११.१७४
अमानुषीषु गोवर्जं अत्रि स २७१
अमान्ते प्रतिपदा यत्र ब्र.या. ९.३८
अमामनुयुगक्रान्ति आंपू ६०६
अमाययैव वर्तेत न मनु ७.१०४
अमायामपराह्णेतु व २.६.२८१
अमायां कृष्णपक्षे वृ हा ८.३२६
अमायां तु क्षयो यस्या दा ३०
अमायां मन्दवारे व २.६.४२१
अमावस्याष्टकास्तिस्र औ ३.११२
अमावास्या क्षयो यस्य लिखित २१
अमावास्या द्वादश आंपू ६१०
अमावास्या द्वादशी च संवर्त २०५
अमावास्यामष्टमी च मनु ४.१२८

अर्द्धप्रसृतिमात्रांतु	वृ.हा ४.१६
अर्द्ध पादं समुद्दिष्टं	वृ.हा ६.३१४
अर्द्ध पिबति गंडूषं	ब्र.या २.२०२
अर्द्धमेवाऽऽनुलोम्येषु	वृ.हा ६.३१८
अर्द्धवृतिमनाशैच	औ ६.२१
अर्द्धांगुलस्य सीमाया	वृहस्पति ४१
अर्द्धोर्द्ध छिद्रितं	बृ.या ३.२६
अर्द्धे भुक्ते तु यो विप्र	पराशर १२.३७
अर्धक्षायात्तु परतः	नारद १०.९
अर्धमन्त्र पूर्णमन्त्र	विश्व ४.६
अर्ध पिबति भर्त्तारं	ब्र.या ७.१२
अर्धरात्रात्तदूर्ध्वं वा	आंपू ६४८
अर्ध रात्रादर्धपूर्वा	व २.६.४७१
अर्धवासास्तु यः कुर्य्याज् लघु	शंख ७०
अर्धोच्छिष्टाश्च विप्राद्या	वृ.परा ८.२९४
अर्धोच्छिष्टो द्विजः स्पष्ट	वृ.परा ८.२९३
अर्धोच्छिष्ठो द्विजो ज्ञानाद्	वृ.परा ८.२९१
अर्धोदये महोदये	आंपू ९१४
अर्या समीपे शयनासने	ब्र.मा २.१५५
अर्वाक् चतुर्दशादह्वो	या २.११५
अर्वाक्तु दशारात्रात्तु	व २.६.५३९
अर्वाक्तु लाजहोमस्य	आंपू ७७
अर्वाक्तु शेषहोमस्य	आंपू ८३
अर्वाक् सपिण्डीकरण	या १.२५५
अर्वाक् संवत्सराद् वृद्धौ	वृ परा ७.३४५
अर्वाग्संवत्सरादूर्ध्वं	वृ परा ७.३४७
अर्व्वाञ्चि सुभगे द्राम्यां	वृ हा ८.१६
अर्शआद्या नृणा रोगा	शाता १.१०
अर्हति स्वर्गवासेऽपि	आंपू ९७७
अलकालर्ककारूषा	आंपू ५०४
अलक्षणानि पुष्टानि	भार १४.१२
अलंकारं नाददीत	मनु ९.९२
अलङ्कारधनस्यान्ते	शाण्डि ४.१७४
अलंकारानुभूषेण पश्चात्	भार ११.१०९
अलङ्कारासनं दत्त्वा	शाण्डि ४.३४
अलंकृतश्च संपश्येद्	मनु ९.२२२
अलंकृताभि सत्यादि	वृ.हा ३.३१४
अलंकृता हरन कन्यां	या २.२९०
अलंकृते शुभे गेहे	वृ.हा ५.१४३
अलंकृत्य तु यः कन्यां	संवर्त ६१
अलंकृत्य पिता कन्यां	संवर्त ६४
अलंकृत्यानलं चान्नं	आश्व १.१२२
अलंकृत्याभिधार्योध्म	आश्व २.५०
अलंकृत्योत्कविधिना	ब्र.या ११.२४
अलंकृत्वाऽथ स्वांगं	व २.५.३४
अलब्धमिच्छेद्दण्डेन	मनु ७.१०१
अलब्धं चैव लिप्सेत	मनु ७.९९
अलब्धं प्रापयेल्लब्ध्वा	व्यास ३.५
अलब्धानु (द्वल्व) णा	शाण्डि ३.१४३
अलं च सोमपानाय	व १.८.१०
अलर्कं क्षुद्रकन्दं च महा	शाण्डि ३.११२
अप्रलाभे तस्य देहे तु	व २.६.४३७
अलाभे दन्तकाष्ठानां	वाधू ३७
अलाभे देवखातानां	अत्रिस ३०
अलाभे न विषादी	मनु ६.५७
अभागे न विषादी	व १.१०.१६
अलाभे पामस कुर्यात्	ब्र.या. ४.१५६
अलाभे प्रसवेनैव	भार १४.३३
अलाभे मृण्मयं दद्यात्	लिखित ५७
अलाभेयज्ञवृक्षेण कुर्वीतं	भार १५.१४८
अलाभे सर्वभोगानां	शाण्डि ३.३६
अलाभे सुमुहूर्तस्य	आश्व १५.७८
अलाबुं दारुपात्र च	मनु ६.५४
अलिंगी लिगिंवेषेमेण	मनु ४.२००
अलिप्तं मद्य मुत्राद्यै	वृ परा ८.३३६
अतिपिज्ञ ऋणी य स्यात्	या २.९०
अलिसंघालकां शुभ्रां	विष्णु १.२३
अलुब्धाह्लादनिष्पापा	बृ.या. ४.५४
अलुब्धार्चयो वेषां	बृ.गौ. १२.२३
अलेपं मृण्मयं भाण्ड	वृ परा ८.३३४

अष्टौ विवाहा	बौधा १.११.१
अष्टौ विवाहा नारीणां	वृ परा ६.२
अष्टौ विवाहा वर्णानां	नारद १३.३८
अष्टौ वृषणयोर्दद्यात्	पराशर ५.१७
अष्टौशतानि नवित	ब्र.या. १.३०
अष्ठांगुल प्रमन्थः	कात्या ७.५
अष्ठोत्तरशतं पश्चान्	वृ हा २.१११
असंयमेन येऽधीता न	बृह ११.१६
असंस्कृतप्रमीतानां	मनु ३.२४५
असंस्कृतस्तु गोषु	वृ हा ६.२३५
असंस्कृतस्त्रियां राज्ञि	वृ परा ८.२२
असंस्कृतान् पशून मंत्रैः	मनु ५.३६
असंस्कृतामनतिसृष्टां	बौधा २.२.२८
असंस्कृतायां भूमौ	बौधा १.६.२२
असंस्कृतासु कन्यायासु	व २.६.४३२
असंस्कृतास्तु संस्कार्या	या २.१२७
असंस्कृतेति वै पित्र्ये	आश्व २३.९१
असंस्कृतौ न संस्कार्यो	कात्या १६.१८
असंस्पृष्टेन संस्पृष्टः	अत्रिस ७४
असकृत्वानि कर्माणि	कात्या ५.१
असकृद्गमनाच्चैव	बृ.य. ४.४४
असकृद् गर्भवासेषु	मनु १२.७८
असकृद्वा सकृद्वापि पुमान्	लोहि ५५२
असगोत्रमपि प्रेतं	आंपू १४९
असोगत्रमसम्बन्धं	वृ परा ८.२८
असगोत्रमबन्धुञ्च	पराशर ३.४६
असगोत्रस्तु न ग्राह्यो	आंपू ३४०
असंकराणि योग्यानि	औ ८.७
असंकल्पितं च पश्चान्नं	व्या १४०
असङ्कीर्णञ्च मत्पात्र	वृ.गौ. ६.१७७
असंख्यकन्दनिर्नाशाद	वृ परा ५.१४४
असंख्यमासुरं यस्मात्	वृ परा ४.४१
असंख्याकान्यानन्तानि	आंपू १५८
असंख्यातं च यज्जप्तं	वाधू १४१
असंख्यातं धनं दत्वा	वृ परा ८.१०४
असंख्यानि च पापानि	वृ हा ६.३४२
असंख्या मूर्त्तयस्तस्य	मनु १२.१५
असत्त्छास्त्राधिगमन	या ३.२४१
असच्छास्त्राभिगमनं	वृ हा ६.२०२
असच्छूद्रेषु अन्नाद्य	बृ.या ३.११
असतां पतितानां च	आपू १३९
असत्कथानुसरणमसत्कार्य	शाण्डि १.५४
असत्कार्यरतो धीर	या ३.१३८
असत्कुलप्रसूतानां क्षेत्र	कपिल ७९६
असत्क्रियैककर्तारं	लोहि ६०६
असत्स्वन्येषु तद्गामी	बौधा १.५.११५
असत्प्रतिग्रहं स्तेय	वृ हा ४.१६६
असत्य कथनं स्तेयं	वृ हा ८.३३३
असत्य कथनं हिंसां	वृ हा ५.१८३
असत्यं निहतार्थं च	शाण्डि ४.२३२
असत्यंप्रतिष्ठं च जगदा	बृह १२.१४
असत्याः सत्यसंकाशाः	नारद १.६२
असत् सन्ततयो ज्ञेया	वृ हा ४.१४९
असत्सु देवरेषु स्त्री	नारद १३.४८
असत्सु देवरेषु स्त्री	वृ परा ७.३६४
असद् ब्राह्मणके ग्रामे शुना	पराशर ५.९
असद्विषयसक्तनामिन्द्रिया	शाण्डि १.५६
असन्तुष्टे सुखं नास्ति	व्या ३७१
असंदितानां संदाता	मनु ८.३४२
असीपिण्डं द्विजं प्रेतं	मनु ५.१०१
असपिण्डं द्विजं प्रेतं	व २.६.४५७
असपिण्डा च या मातुरस	मनु ३.५
असव्येनाति षड्ऋचां	भार ६.१३४
असभ्य उपासिने दत्तम्	वृ.गौ. ३.२४
असमक्षन्तु दम्पत्योः	कात्या २०.१
असमर्थस्य बालस्य	अंगिरस ३२
असमर्थो नमेत् सद्यो	आश्व १०.४५
असमानप्रवरगा	औ ४.८
असमानान् याजयन्ति	औ ४.२३
असमाप्तं व्रतं यस्य	ब्र.या. ८.९४

अस्नेहा अपि गोमूधा	विश्वा ८.१५
अस्नेहा यव–गोधूमा	वृ परा ४.१८२
अस्पर्शे च मृते कार्य्यं	शाता ६.४२
अस्पृश्यं संस्पृशेद्यस्तु	संवर्त १७९
अस्पृश्यस्पर्शने चैव	वाधू ४३
अस्पृष्टस्पर्शनं कृत्वा	औ ९.७८
अस्मनः समिधो वापि	कण्व ३६२
अस्मन्नामस्य तातेन	वृ परा ११.२०४
असमर्थस्य तु प्रोक्तो	आंपू ७३२
अस्माच्छतगुणः प्रोक्त	वृ परा ११.२७१
अस्मात् प्रदेयं साधुभ्यो	विष्णु म ९२
अस्मात्त्वामधिजातोऽसी	कात्या २१.१३
अस्माद् विमोक्षणायैव	वृ हा ४.८
अस्मान् मानुख्यलोकान् ते	वृ.गौ. ५.६३
अस्मिन् कलौ च विदुषा	वृ परा ४.६३
अस्मिन् धर्मोऽखिलेनोक्तो	मनु १.१०७
अस्मिन्यज्ञोपवीतेऽमी	भार १५.८९
अस्मिन्नर्थे न संदेहः	कपिल ९३७
अस्मीति चैवं संध्या	कण्व २४६
असंभाष्यः प्रयत्नेन	आंपू ७६६
अस्य गोत्रद्वयं ज्ञेयं	लोहि ३३०
अस्य गोत्रप्रदत्तोऽयं	कण्व ७११
अस्यधांग्गुलमेतैस्तु	भार २.५१
अस्यन्ध्यमिति संकल्प्य	औ ५.२५
अस्य पुरुष सूक्तस्य	ब्र.या. २.११७
अस्य प्रजापति ऋषि	भार ५.२१
अस्य ब्रह्मा च रुद्रश्च	वृ हा ३.३४८
अस्य मन्त्रस्य	वृ परा २.४६
अस्य वोमेति सूक्तेन	वृ हा ५.१५६
अस्य वामेति सूक्तेन	वृ हा ५.१६६
अस्यवामेति सूक्तेन	वृ हा ५.३७५
अस्य वामेति सूक्तेन	वृ हा ५.४४०
अस्य वामेति सूक्तेन	वृ हा ६.४२३
अस्य संकल्पमात्रेण	विश्वा १.४३
अस्या अहं बृहत्याश्वपुत्र	ब्र.या. ८.२८८
अस्यां तु तत्त्वाक्षर	वृ परा ४.९
अस्या वेधः सकर्णायाः	वृ परा ५.७१
अस्यास्तु ब्रह्मविद्यायाः	कण्व १७६
अस्यूतनासिकाभ्यां	बौधा २.२.८३
अस्यैव पुरतो दैवात्	लोहि २१७
अस्रं गमयति प्रेतान्	मनु ३.२३०
अस्वतंत्रा प्रजाः सर्वाः	नारद २.२९
अस्वतंत्राः स्त्रियः पुत्रा	नारद २.३०
अस्वतंत्राः स्त्रियः	मनु ९.२
अस्वतंत्रा स्त्री पुरुष	व १.५.१
अस्वस्थानाद्धातस्थाना द	ब्र.या. १०.१०
अस्वातन्त्रयं स्वतःस्त्रीणां	कपिल ५४३
अस्वातन्त्रयातु जीवानाम	वृ हा ३.९०
अस्वाधीनानि पात्राणि	लोहि ३७९
अस्वामिकमदायादं	नारद ४.१६
अस्वामिना कृतो	यस्तु ८.१९९
अस्वाम्यनुमताद्	नारद ८.३
अहंकारं पशुं कृत्वा	वृ परा ६.११३
अहंकारस्तथा बुद्धिं	विष्णु म ६९
अहंकार स्मृतिर्मेधा	या ३.१७४
अहंकारेण मनसा	या ३.१६४
अहतं तद्विजानीयाद्दैवे	वृ हा ६.१००
अहतं वाससां शुचि	बौधा १.६.५
अहन्यद्ङ्मुको रात्रौ	वृ हा ४.१४
अहन्यहनि कर्तव्यं	ल व्यास १.१
अहन्यहनि ते सर्वे	ब्र.या. ६.१३
अहन्यहनि दातव्यं	अत्रि स ४०
अहन्यहनि योऽधीते	संवर्त २१८
अहन्यहन्यवेक्षेत	मनु ८.४१९
अहन्येकादशे कुर्यान्नाम	आश्व ६.१
अहन्येकादशेनाम	ब्र.या.८.५
अहन्येकादशे नाम	या १.१२
अहन्येकादशे श्राद्धे	वृ परा ७.३३४
अहन्येवास्मिस्तास्मिन्वा	वृ परा ७.२०८
अहः प्रात रहर्नक्तं	व १.२३.३७

आ

आत्मशय्याऽऽसनं वस्त्र	बौधा १.५.६१
आत्मस्त्रीहयात्मबालश्च	वृ परा ८.३०४
आत्मस्थं वैदिकाग्नि	लोहि १५०
आत्महननाध्यवसाये	व १.२३.१६
आत्मा नदी भारत पुण्यतीर्थं	बृ.गौ२०.२३
आत्मानं घातयेद्यस्तु	अत्रिस २१७
आत्मानं घातयेद्यस्तु	लघु यम २०
आत्मानं देहमीशञ्च	वृ हा ४.२
आत्मानं परमात्मानं	भार ६.१२९
आत्मानं पातयेद्धोरे	आंपू ७१
आत्मानं भूषयेन्नित्यं	बृह १२.१३
आत्मानं वहिरन्तस्थं	ल हा ७.६
आत्मानं शिरसि स्थाप्य	व २.६.४५
आत्मानं शोधयित्वा	अ १०
आत्मानं समलंकृत्य	वृ हा ८.८७
आत्मानं हिततो	कण्व ७६५
आत्मान्यकायं स्पृश्येन्न	आंपू २२७
आत्मान्ययोः समान	वृ परा १२.१३४
आत्मार्थं च क्रियारम्भो	या ३.२३९
आत्मार्थेऽन्यो न शक्नोति	दक्ष २.३३
आत्मा विवाहिताये न	ब्र.या. ८.१८०
आत्मा संछादितो देवै	बृ.या. १.४०
आत्मा हि शुक्रमुद्दिषृम्	वृ.गौ. ४.१५
आत्मीये संस्थितो धर्मे	अत्रिस १८
आत्मैव देवताः सर्वाः	मनु १२.११९
आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी	मनु ८.८४
आत्यन्तिक फल प्रदं	व १.२९.२१
आत्रञ्च नालिकाशाकं	वृ हा ४.११०
आत्रिपक्षात् त्रिरात्र	पराशर ३.१५
आत्रिपक्षात्त्रियरात्र	ब्र.या. १३.६
आत्रिपूर्वं ततस्त्वेवं तत्कूले	कपिल ११२
आत्रिपूर्वं तत्सुतस्य तेन	कपिल ४२२
आत्रिमासात् त्रिरात्र	दा १४३
आत्रेया विष्णु सम्वर्ता	वृ परा १.१५
आत्रेयीं वक्ष्यामो	व १.२०.४२

आत्रेय्या वधः दात्रिय	बौधा १.१०.२७
आ दत्त जनात्सद्यो	ब्र.या. १३.८
आददीत न शूद्रोपि	मनु ९.९८
आददीताथ षड्भागं	मनु ३.१३१
आददीताथ षड्भागं	मनु ८.३३
आ दन्तजननात सद्य	पराशर ३.२२
आ दन्तजननाद्वापि	बौधा १.५.११०
आदन्तजन्मनः सद्य	औ ६.१३
आदन्त जन्मनः सद्यः	दा ११६
आदन्तजन्मनः सद्य	या ३.२३
आदन्तजन्मनः सद्य	लघुशंख ६४
आदन्तजातमरणं	औ ६.१७
आदानमप्रियंकरं दानं	मनु ७.२०४
आदाननित्याच्चादातुरा	मनु ११.१५
आदानात् सर्वभूतानां	बृह ९.९०
आदाय कलशं शुद्ध	वृ हा ५.६०
आदाय चापं च	वृ परा १२.२७५
आदाय तुलसीं त्यक्तो	शाण्डि ४.१६४
आदायं भांडसलिलं	भार ११.२८
आदाय सर्वं उच्छिष्ट	वृ परा ७.३२७
आदायाऽऽदौ कुशास्त्री स्त्रीन्	आश्व २.२२
आदावन्ते च कुर्वीत	बृ.या. ७.२६
आदावन्ते च गायत्र्या	वाधू १३५
आदावन्त्ये च पाद्ये च	आंपू ७८२
आदावारभ्य आशौचं	दा १२३
आदावेकां गतिं कृत्वा	लोहि १४८
आदावेव तु चोङ्कार	वृ परा ४.४५
आदृत्येमृत्तिकां कुर्यात्	औ २.४२
आदिकेऽपि तयोरेकं पिंडं	कपिल १०५
आदित्यदुहिता धेनुः	ब्र.या. ११.२०
आदित्यमण्डलान्तस्थं	व २.३.११५
आदित्यमण्डलान्तस्था	बृ.या. ४.२८
आदित्य मण्डलान्तस्य	व २.३.६१
आदित्यमण्डले देवं	वृ परा ४.१४०
आदित्यमुदितं पश्येन्नत्वा	आश्व १.५१

आधाराख्यं च संप्रोक्तं	विश्वा ६.४
आधारावाज्यभागौच	व २.२.१६
आधिक्यं तत्प्रकथितं	आंपू ९३९
आधि प्रणश्येद् द्विगुणे	या २.५९
आधिर्यो द्विविधः प्रोक्तः	नारद २.११६
आधिश्चोपनिधिश्चोभौ	मनु ८.१४५
आधि सीमा बालधनं	नारद २.७३
आधि सीमा बालधनं	मनु ८.१४९
आधि सीमा बालधनो	व १.१६.१६
आधिसीमोपनिक्षेप	या २.२५
आधेः स्वीकरणात्	या २.६१
आध्यात्मिकीं तथा	व २.६.१४८
आध्यादीनां हि हर्त्तारं	या २.२६
आनखाच्छोधयेत्पापं	व्या ३५४
आनन्दश्च तथा प्राज्ञ	बृ.या. २.९४
आनन्दसागरे मग्ना	आंपू ५५८
आ नाभेः	बौधा १.५.६
आनीतमम्भो निशियत्	वृ परा ७.२३४
आनीतं तु शरं दृष्ट्वा	नारद १९.२९
आनीय विप्रसर्वस्वं	या ३.२४५
आनुलोम्येन वर्णानां	नारद १३.१०५
आनुष्टभस्य सूक्तस्य	वृ परा ४.१२२
आनृशंस्यं क्षमा सत्यं	अत्रि स ४८
आन्तं समन्त्रकं नित्यं	लोहि २७
आन्तरं शुध्यति	बृ.या. ७.१८५
आप इत्यादिभि पादैः	आश्व १.३५
आपः करनखैः स्पृष्ट्वा	व्या ५४
आपः कृष्णतिलैर्दद्यान्	व्या ९७
आपत्कल्पेन यो धर्मं	मनु ११.२८
आपत्कल्पोक्तमर्यादाः	लोहि ३८६
आपत्काले तु विप्रेण	आप ८.२०
आपत्काले तु विप्रेण	पराशर ११.१९
आपत्काले तु सम्प्राप्ते	व २.४.९३
आपत्स्वनन्तरा वृत्ति	नारद २.५२
आपत्स्वपि न देयानि	दक्ष ३.१८
आपत्स्वपि हि कष्टासु	नारद ५.५
आपत्स्वपिहि कष्टासु	ब्र.या. १२.५
आपत्स्वापि हि देया	ह.या. १२.९
आपत्स्वपिहियद्दन्तं	ब्र.या. १२.६
आपद्‌गतः सम्प्रगृह्णन्	या ३.४१
आपद्‌गतो द्विजो	वृ परा ८.३२७
आपद्‌गतोऽथवा वृद्धा	मनु ९.२८३
आपद् बन्धुः सदा मित्र	वृ हा ३.११
आपदं निस्तरेद्वैश्यः	नारद २.९५
आपदं ब्राह्मणस्तीर्त्वा	नारद २.५५
आपद्यते स्थाणु गर्तं	वृ परा २.५०
आपद्यपि न कर्तव्या	शंख ४.९
आपद्यपि न गृह्णीत	व २.३.१२०
आपद्यपि न याचेत ज्ञाति	शाण्डि ३.२१
आपदर्थं धनं रक्षेद्दारान्	मनु ९.२१३
आपन्निवारकस्सोयं	कपिल ७१०
आपन्निवारकस्सोऽयं	लोहि २४२
आपन्नो येन वा धर्मो	आंठ ५.१४
आपः पवित्रा भूमिगता	बौधा १.५.६५
आपः पुण्याः समादायः	बृ.या .७.१८२
आपः पुनन्त्वित्युक्ता	वृ.गौ. ८.३०
आपः पुनन्तु पृथिवी	व २.५.१६
आपः पुनन्तु मध्याह्ने	आश्व १.३७
आपः पुनन्त्विच्येतस्य	भार ६.१३२
आपयित्वा उमेषजीरीति	वृ हा ८.२४
आपः शुद्धा भूमिगता	मनु ५.१२८
आपस्तम्बकृताधर्माः	वृ गौ. १.२१
आपस्तम्बं प्रवक्ष्यामि	आप १.१
आपस्तम्बकृता धर्माः	वृ परा १.१६
आपस्तम्बस्य तन्नेष्ट	वाघू १४७
आपस्ते घ्नस्तु दौर्भाग्यं	वृ परा ११.१७
आपिण्डदानतो दद्यात्	वृ परा ७.२५०
आपिठान्मौलिपर्यन्तं	शाण्डि २.८८
आपूर्यं निश्चलीकृत्य	वृ परा १२.२१४
आपो अस्मानिदमापः	[illegible] २.७०

इन्द्र सोमं च रुद्र	व २.६.३५७
इन्द्राग्निसमवर्ति च	भार ११.६२
इन्द्रादिभ्यस्तताऽन्येभ्य	वृ परा ६.७९
इन्द्रान इति यः पादं	बृ.गौ. २०.४५
इन्द्रानिलयमार्काणां	मनु ७.४
इन्द्राय सोमसूक्तेन	आंपू ९६२
इन्द्राय सोमसूक्तेन	आंपू ९६३
इन्द्रिय निग्रह वर्णन	विष्णु ७२
इन्द्रियभ्रमहीनानाम	शाण्डि ४.२२१
इन्द्रियाणां जये योगं	मनु ७.४४
इन्द्रियाणां तु सर्वेषां	मनु २.९९
इन्द्रियाणां तु सर्वेषां	बृ.गौ. ८.५२
इन्द्रियाणां निरोधेन	मनु ६.६०
इन्द्रियाणां प्रसंगेन	मनु २.९३
इन्द्रियाणां प्रसंगेन	मनु १२.५२
इन्द्रियाणां मनोनातो	ब्र.या. ३.१७
इन्द्रियाणां विचरतां	मनु २.८८
इन्द्रियाणि गुणान्यातु	विष्णु म ६७
इन्द्रियाणि मनः प्राणो	या ३.७३
इन्द्रियाणि यशः स्वर्गमायुः	मनु ११.४०
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थाश्च	वृ ह ९.१८३
इन्द्रियाणि वशीकृत्य	व्यास ४.१३
इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु	मनु ४.१६
इन्द्रियैरिन्द्रियार्थैश्च	बृ.या. २.१०९
इन्द्रेशानयोर्मध्ये	ब्र.या. १०.१०८
इन्द्रोऽग्नियमानैऋत्यां	ब्र.या. १०.१००
इन्द्रो धाताभगः पूषा	वृ परा २.१९२
इन्धानानि च योदद्यादि	संवर्त ६०
इन्धनार्थ द्रुमच्छेद	या ३.२४०
इन्धनार्थ द्रुमच्छेद	वृ हा ६.२०३
इन्धनार्थमशुष्काणां	मनु ११.६५
इममेव जपेन् मंत्र	वृहा ३.२३७
इमं पुण्यं प्रशस्तं च	वृ परा ११.२३७
इमं मंत्र सकृज्जप्त्वा	विश्वा ६.३१
इमं मंत्र समुच्चार्य	शाता ५.७
इमं मंत्र समुच्चार्य	शाता ५.१४
इमं मंत्र समुच्चार्य	शाता ५.२१
इमं मंत्र समुच्चार्य्य	शाता २.२८
इमं मे गंगेति ऋचा	वृ हा ८.१२
इमं मे. त्वन्नः सत्वन्न	वृ परा ११.२२४
इमं मे वरुणत्यृचा	वृ हा ८.१५
इमंम्मे वरुणं चैव	ब्र.या. १०.१०४
इमं मे वरुण तत्त्वा	बौधा २.४.१२
इमं मे वरुणं पूज्य	ब्र.या. २.११०
इमं योविधिमास्थाय	ल हा ३.१४
इमं लक्ष्मीनृसिंहस्यं	वृ हा ३.३६०
इमं लोकं मातृभक्त्या	मनु २.२३३
इमं मेगङ्ग इत्युक्त्वा	वाधू ८४
इमं यज्ञ तमोवोचुर्यु	कण्व ३७७
इमंविधिदारयितुं यो	भार ६.१७३
इमं हि सर्ववर्णानां	मनु ९.६
इमान् कृत्वा कलियुगे	नारा ७.३२
इमान्तु वैभवीमिष्टं	वृ हा ७.१५०
इमान्नारायणेष्टिञ्च	वृ हा ७.६७
इमान्नित्यमनध्यायान	मनु ४.१०१
इमां तु वैष्णवी मिष्टिं	वृ हा ७.१०४
इमां पाद्मी शुभामिष्टिं	वृ हा ७.२३३
इमां रहस्यां परमामनुस्मृति	विष्णु म ११२
इयमाभवनं भार्या	वृ परा ६.१८२
इयमित्येव ये दुष्टा तान्	लोहि ७१८
इयं भूमिर्हि भूतानां	मनु ९.३७
इयं रण्डाप्यरण्डेव ज्ञात्री	लोहि ६०२
इयं विशुद्धिरुदिता	मनु ११.९०
इवमेव परं मोक्ष	वृ हा ७.३३६
इशानं धान्यमध्ये	ब्र.या. १०.१०३
इष इत्यादिभिमंत्रै	आश्व १५.४५
इषणात्रयकृष्णाहि	वृ हा ४.६
इषेत्वादिषु मंत्रेषु	वृ परा ११.१०९
इष्टकादशकं वाऽपि	वृ परा १०.३६३
इष्टकालोष्टपाषाणैर्न	विश्वा १.६१

ई

उदीरतामङ्गगिरस आयं	वृ .या. ७.८३
उदुत्तमेतिमन्त्रेण उन्मुच्ये	ब्र.या. ८.११३
उदुत्यमनुवाकास्त्रीन्	कण्व ५२१
उदुत्यमिति प्रस्कण्व	ब्र.या. २.७८
उदुत्यं चित्रमितिद्वाभ्या	व २.७.९६
उदुत्यं चित्रं देवनाम्	बृह १०.५
उदुत्यं चित्रमित्याभ्यां	बृह १०.३
उदुत्यं चित्रमित्येत	आश्व १.४३
उदुम्बरञ्च कामेन	औ ९.३४
उदुम्बरशमीबिल्व	व २.७.४९
उदकं निनयेच्छेषं	औ ५.४.९
उद्गच्छन्ति हि नक्षत्रा	लघुयम ६६
उद्गत्रन्त्रो होमलिंगो	विष्णु १.६
उद्गीतं तु भवेत्साम	वृ हा ७.४४
उद्गीथाक्षरमेद्ब्रह्म	बृ.या. २.११
उद्गूर्णे हस्तपादे	या २.२१९
उद्दिश्य देवताः तत्र	व २.३.८४
उद्दिश्य विप्रपंक्तौ तां	व्या ३७९
उद्दिश्य विष्णुं जगतां	वृ परा १०.३८४
उद्दिश्य वैष्णवान्	वृ हा ७.१५५
उद्दिष्टक्रतुकालस्य	वृ परा ७.१५५
उद्दिष्टं न तथा शुद्धये	व २.६.४८७
उद्दीप्यस्व जातवेद	बौधा १.४.४
उद्देशतः किंचिदवादि	वृ परा १२.२७६
उद्देशतो मया प्रोक्तः	वृ परा २.२२९
उद्देशत्यागकाले च सव्य	आंपू १०७६
उद्देशत्यागमात्र च प्राचीन	आंपू ८११
उद्देशेन मया प्रोक्तो	वृ परा ४.११०
उद्धृते दक्षिणे पाणाव	मनु २.६३
उद्धृत्य वाऽपि त्रीन्	बौधा २.३.९
उद्धरिण्या जलं	वृ हा ४.७९
उद्धरेदर्घ्यणपात्रेतु गृह्वी	व २.६.९१
उद्धरेदुदकं सर्वं शोधनं	अत्रिस २२९
उद्धरेद्धटशतं पूर्णं पंचगव्येन	अत्रिस २२८
उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थो	पराशर ७.४२
उद्धर्त्य गन्धतोयेन	वृ हा ४.८३
उद्धाय पूर्वं संद्यायायाः	भार ६.११
उद्धारं पैतृकादेके	वृ परा ७.२८५
उद्धारं पैतृकादेके	वृ परा ७.२८६
उद्धारो दशस्वस्ति	मनु ९.११५
उद्धताभिरद्भिः कार्य	व १.६.१४
उधृताहं त्वया देवः	विष्णु १.४५
उद्धृतेनाम्भसा शौचं	शंख १६.२१
उद्धृतेप्यशुचिस्तावाद्	अत्रि ५.२१
उद्धृत्य निश्चले स्थाने	विष्णु १.१३
उद्धृत्य परिपूताद्भि	वृ परा १२.१६२
उद्धृत्य प्रणवेनैव	वृ परा ९.३२
उद्धृत्य प्रणवेनैव	बृ.गौ. २०.४४
उद्धृत्य प्रोक्ष्य तत्पात्रे	आंपू ७९४
उद्धृत्य भस्म सम्मार्ज्य	शाण्डि ३.८७
उद्धृत्यवामहस्तेन	व २.६.२१२
उद्धृत्य वामहस्तेन	वृ परा ८.२०१
उद्धृत्यैव च तत्तोयं	आप २.१०
उद्बन्धनमृते चापि	शाता ६.३९
उद्बन्धनादि निहतं	औ ९.७४
उद्वबर्हात्मनश्चैव मनः	मनु १.१४
उद्बुध्यस्वेति मंत्रस्य	वृ परा ११.३१८
उद्बोधयित्वा शयने	वृ हा ७.२५२
उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे	मनु १.४६
उद्यतं याचितं वास्यात्	शाण्डि ४.९
उयतामाहृतां भिक्षां	व १.१४.१३
उद्यताः सह धावन्त	लघुशंख ३९
उद्यताः सह धावन्ते	लिखित ७१
उद्यता सह यावंत	दा ९२
उद्यतैराहवे शस्त्रैः	मनु ५.९८
उद्यतो निधने दाने आर्त्तो	पराशर ३.२९
उद्यत् कोटिर विप्रभं	वृ हा ३.३५०
उद्यद्दिनकरा माया	व २.६. ७६
उद्वर्तनमपस्नानं	मनु ४.१३२
उद्वेहत् क्षत्रियां विप्रो	व्यास २.११

उपवासः स विज्ञेयः	आंपू ९७५
उपवांसदिने यस्तु	वृ हा ८.३१८
उपवासं तयोराहुरशुद्धौ	वाधू ४८
उपवासं न्यायेन	व १.२२.६
उपवासात्तथादानात्	शाण्डि १.९७
उपवासान्तराभ्यास	शंख १८.१०
उपवासी नरो भूत्वा	संवर्त २०४
उपवासी विशुद्धात्मा	वृ परा १०.११९
उपवासेन चैकेन	अत्रिस १२७
उपवासेन तत्तुल्यं	औ ३.९९
उपवासेन शुद्धि स्यात्	अत्रि ५.५६
उपवासैव्रतै पुण्यैः	पराशर १०.४२
उपवासो व्रतञ्चैव	पराशर ६.५८
उपवासोव्रतञ्चैव स्नानं	शाता १.२८
उपविश्य गृहद्वारि	व्यास ३.३६
उपविश्यद्यु (शु) चौ	भार ५.४३
उपविश्य शुचौदेशे	भार ४.९
उपविश्याऽऽसने शुद्धे	व २.६.१५०
उपविश्य शुचौ देशे	वाधू २४
उपविष्टः शुचौ देशे	वृ हा ४.१८
उपविष्टेषु यच्छ्राद्धे	औ ५.३०
उपविष्टो गृहे रम्ये	व २.६. ३५
उपवीतधरास्तस्माद्धार्य	भार १६.१२
उपवीतमोर्ब्रह्ममुनि	भार १७.२४
उपवीतमिदं दध्युरितरे	भार १६.३३
उपवीतमुखानां वै तेषां	भार १६.१६
उपवीतं ततो दद्याद्	हा ८.३४
उपवीतं तदुत्सृज्य	भार १६.४३
उपवीतं तदुत्सृज्य	भार १६.४४
उपवीतं द्विजश्रेष्ठे	भार १६.४०
उपवीतं यथा यस्मिन्धत्ते	आश्व १.९०
उपवीतं वामबाहुं	औ १.१०
उपवीतानि देवस्य	व .२.३.१४८
उपवीती ततः शुद्धः	भार १६.६२
उपवीती समाचम्य	आश्व २३.७७
उपवेश्यतु तान् विप्रान्	मनु ३.२०९
उपवेश्य प्राङ्मुखान्सर्वान्	व .२.६.३१०
उपव्यु (षस्यु) षसि यत्स्नानं	बाधू ७०
उपसर्जन प्रधानस्य	मनु ९.१२१
उपस्तीर्य घृतंपात्रे	व २.६.३०१
उपस्थमुदरं जिह्वा हस्तौ	नारद १८.९५
उपस्तुमुदरं जिह्वा हस्तौ	मनु ८.१२५
उपस्थानन्तु सर्वत्र	हा ५.५६६
उपस्थानं जपं कृत्वा	व २..१४६
उपस्थानं ततः कुर्य्यात्	या ३.२८२
उपस्थानं ततः कुर्याद्	वृ परा ११.३०८
उपस्थानं ततः पश्चात्	दक्ष २.३९
उपस्थानं ततः शीघ्रमति	आंउ २.८
उपस्थानं स्वकैर्मन्त्रै	बृह १०४
उपस्थानादिकं चैव	आश्व १.६४
उपस्थानादिर्यस्तासां	बृ.या. ७.१०८
उपस्थानाय दानाय	नारद २.१०१
उपस्थाने विनियोग	भार ६.१४०
उपस्थाय च सप्ताश्वं	लोहि ६७७
उपस्थाय च सूक्तेन	व २.३.१३६
उपस्थाय ततः शीघ्रं	पराशर ८.१०
उपस्थाय महादेव	भार ७.३
उपस्थाय रवेः काष्ठां	व्यास ३.२५
उपस्थितस्य भोक्तव्य	वृ हा ४.२३५
उपस्थितव्य भोक्तव्य	या २.६३
उपस्थिते विवाहे च	वृहस्पति ७०
उपस्पर्शकालेन	भार ४.२०
उपस्पृशं स्त्रिषवणं	मनु ६.२४
उपस्पृशेत् त्रिषवणं	पराशर १२.५२
उपस्पृशेत्प्रधानाङ्ग प्रणवेन	विश्वा २.५२
उपस्पृश्यत्रिषवणामब्देन	ब्र.या. ८.८९
उपस्पृश्य द्विजो नित्यं	मनु २.५३
उपहन्यादे (दु) दक (के) न	कपिल २३४
उपहन्येत वा पण्यं	नारद ९.६
उपह्वरे शुचौदेशे विलिप्ते	भार ११.७

उभयतः प्रणवां ससप्त	बौधा २.४.९
उभयत्र दशाहानि	पराशर ३.८
उभयत्र प्रकथितं	आंपू ७९८
उभयस्य निमित्तेन	पु ६
उभयस्य पालनाद	व १.१९.५
उभयं चैव नाऽऽदियेत	बौधा ११.२६
उभयं विन्दते यस्तु	वृ .या . २.९५
उभायानुमतः साक्षी भवत्ये	या २.७४
उभयावसितः पापः श्यामा	लघु यम २४
उभयावसिताः पापायेऽग्राम्य	यम ४
उभयावसिताः पापा	बृ.य. १.५
उभयाव्यवहारश्च	पु २४
उभयेन पवित्रस्तु	वृ परा २.१४८
उभयोः कर्मकर्त्ता स्यात्तदा	लोहि २७७
उभयोरप्यसौरिक्थी	लोहि १९६
उभयो ब्रह्मणीचार्य	ब्र.या. ८.२६१
उभयोर्भोजनं कुर्यान्	आपू ४६
उभयोर्वंशयोश्चापिपितृणां	कपिल ७८१
उभयोर्हस्तयोर्मुक्तं	मनु ३.२२५
उभयोः सप्त दद्याच्च	वृ हा ४.१७
उभयोस्तातयोश्चापि जनन्योरपि	लोहि २७५
उभयाभ्यामपि पाणिम्यां	ब्र.या.२.९०
उभाभ्यां ज्ञानकर्मभ्यां	शाण्डि १.४८
उभाम्यां धारणं वायो	वृ हा ३.३६
उभाभ्यां सेचयेद्वारि	वृ परा २.२०५
उभावपि तु तावेव	मनु ८.३७७
उभावपि विभक्तौ तौ न तु	शाण्डि १.४९
उभावपि समालोक्य	ब्र.या.८.२२५
उभावप्यशुची स्यातां	लघु यम १७
उभावेतावभोज्यान्नौ	अत्रि ५.१०
उभे चिह्ने विनाविप्रो	वृ हा ५.४०
उभे मूत्रपुरीषे तु दिवा	व १.६.१०
उभे संध्ये तु स्नातव्यं	बृ.या. ६.२६
उभे संध्ये समाधाय	अत्रिस २६
उमामहेश्वरा च एव	वृ.गौ.१.१६
उमामहेश्वरौ पश्चाल्लक्ष्मी	लोहि ५०५
उरगेत्यायसो दण्डः	ब्र.या. १२.६१
उरगेष्वायसो दण्डः	या ३.२७३
उरभ्रे निहते चैव	शाता २.५३
उरस्यष्टांगुलं धार्यं	वृ हा २.७४
उरेद्देशत्यागमखिलं स्वयमेव	कपिल ३१४
उद्ध्र्वं पुड्रो मृदा	व २.१.२०
उद्ध्र्वं जंघेषु विप्रेषु	अत्रिस ३८९
उर्ध्वपुंड्रं च विधिवद्	भार १२.५२
उर्ध्वगत्यां तु यस्येच्छा	वाधू १०७
उर्ध्वपुड्रंत्तु विधिवत्	भार ११.६
उर्ध्वोच्छिष्टस्य संशुद्ध्यै	वृ परा ८.२५४
उर्वारुक्षीरिणीपीलुं	प्रजा १२२
उर्वारुस्सरणस्सारः	कण्व ६१८
उलूकादि जनुर्जित्वा	औ ९.९७
उल्काविद्युत्स ज्योतिषम्	व १ १३.१०
उल्काविदुयत्समासे	व १.१३.९
उल्काहस्तौऽग्निदो ज्ञेयः	नारद २.१५२
उल्लिख्य तद्गृहं	पराशर १०.३७
उवाच तां वरारोहे विज्ञातं	विष्णु १.३१
उवाच धर्मान् सूक्ष्मख्यान्	वृ.गौ. १.२८
उशतीर्हस्तयोश्चैव वक्षे	विश्वा २.३४
उशीरं जाति कुसुमं	वृ हा ४.५३
उशीरं तुलसी पत्रं केशरं	व २.६.८९
उषाःकाले तु सम्प्राप्ते	दक्ष २.६
उषः काले प्रशस्तं स्याद्यो	विश्वा १.९६
उषःकाले भानुवारे यो	वाधू ७२
उषःकाले समुत्थाय	ल हा ४.५
उषत्वेति चारु च	व २.६.२९७
उषसः प्राग्रजः स्त्रीणां	दा १४६
उषः स्नानं प्रशंसन्ति	वृ परा २.९६
उषस्युषसि यत् स्नानं	बृ. मा. ७.११८
उषस्युषसि, यत् स्नानं	दक्ष २.११
उषित्वैवं गृहे विप्रो	संवर्त ९७
उषित्वैवं वे सम्यग्	संवर्त १०१

ऊर्ध्वं वै पुरुषस्य बौधा १.५.८८
ऊर्ध्वषडभ्यो मासेभ्यो व १.९.८
ऊर्ध्वं संवत्सरात् देवल २२
ऊर्ध्वं सत्त्वविशाल– अहम् वृ.गौ.१.५१
ऊर्ध्वं स्वस्तरशायी कात्या २८.१३
ऊर्ध्वाग्रं स्थापयेत्कूर्चं भार १८.१०६
ऊर्ध्वानाञ्चैव सापिण्ड्य औ ६.५४
ऊर्ध्वे तु निष्कृति वृ हा ६.३१३
ऊषरं लवणञ्चैव वृ हा ४.११४
ऊषरे वाऽपितं वीजं व्यास ४.६३
ॐ अग्ने सुश्रवः सौश्रव ब्र.या. ८.३७
ॐ कारं चतुरावर्त्य ब्र.या. २.८४
ॐ कारं तु समुच्चार्य ब्र.या. २.४७
ॐकारः प्रणवाख्य शंख १२.१०
ॐकार ब्रह्मसंयुक्तं वृ परा २.८१
ॐकारं सर्व्वमुच्चार्य ब्र.या. २.८२
ॐत्र्यम्बकमन्त्रस्य ब्र.या. २.१२७
ॐ नमो भगवते तस्मै विष्णु म ८०
ॐपूर्वा व्याहृतीस्तिस्रः आश्व १.८७
ॐ भगवन्तं शेष शंख १३.३
ॐ भूः ॐ भुवः ॐस्वः शंख १२.११
ॐ भूदित्यादित्रिर्मंत्रैः भार ६.१४३
ॐ मापो ज्योतिरित्या भार ६.४०
ॐमापोज्योतिरित्या भार ६.८५
ॐ (आ) मापोज्योरित्ये भार १७.११
ॐ मितिब्रह्मचेत्या भार १६.१८
ॐ रंग मांग संपूर्ण ब्र.या.११.५५
ॐ वषट्काराय शांताय भार ७.४
ॐ सहस्रशीर्षे इत्यावाहनम् ब्र.या. २.१२४
ॐ सूर्याय नमः प्रातः भार ६.१२७
ॐस्वाहा च समानाय वृ परा ६.११९
ॐ स्वाहेति अपानाय वृ परा ६.११७

ऋ

ऋक्थग्राह ऋणं दाप्यो या २.५
ऋक्पादं वा जपेन्मन्त्र वृ.गौ.८.३९
ऋक्शाखोक्तेन मार्गेण विश्वा ४.१०
ऋक् संहिता त्रिरभ्यस्य मनु ११.२६३
ऋक्सामयजुरंगानीत्या भार १६.२०
ऋक्शाखोक्तेन विधिना विश्वा ६.७१
ऋक्षेषु जन्मश्रेष्ठ स्याच्च भार १५.४९
ऋक्षेष्टयाग्रयणं चैव मनु ६.१०
ऋगन्ते मार्जनं कुर्यात् वाधू १२१
अगन्ते मार्जनं कुर्याद् आश्व १.३८
ऋगर्धे वा प्रकुर्वीत वृ परा २.६०
ऋगादीनामन्यतं कात्या १४.१२
ऋग्गाथा पाणिका या ३.११४
ऋग्भि षोडशभि वृ परा ११.३०४
ऋग्यजु पारगो यश्च शच १४.७
ऋग्यजुश्च तथा साम बृ.या. २.२१
ऋग्मजुः साममन्त्राणां वृ.गौ.१५.५८
ऋग्यजुः साममूर्तिस्तु बृह ९.१०३
ऋग्युजुसामवेदानां भार ६.७
ऋग्यजुः सामवेदानां वृ.गौ. ६.१६७
ऋग्यजुः सामवेदाश्च वृ परा ३.१२
ऋग्यजुः सामाथर्वाणि वृ.या. २.११७
ऋग्विधेनेति वाग्वदति बौधा १.४.२८
ऋग्वेदंतद्वहि प्राच्यां भार ११.४८
ऋग्वेदः पूर्वचरणः भार १३.१३
ऋग्वेद मभ्यसेद्यस्तु संवर्त २२३
ऋग्वेदविद्यजुर्विच्च मनु १२.११२
ऋग्वेदश्च यजुर्वेदः ब्र.या. १.८
ऋग्वेदसंहिता यान्तु वृ हा ७.६२
ऋग्वेदे स्वरितोदात्त बृ.या. २.७८
ऋग्वेदोक्तस्य सूक्तेन वृ हा ७.१९९
ऋग्वेदो दैवदैत्यो मनु ४.१२४
ऋचः पठन् मधुमयः कात्या १४.९
ऋचामशीतिपादैश्च वृ हा ५.५४१
ऋचां यजूंसि सामानि बृह ९.१६२
ऋचां दशसहस्रं ब्र.या. १.१३
ऋचैकासंयमस्थेन ब्र.या. ८.६८
ऋचो यजूंषि चाद्यानि मनु ११.२६५

ए

एतावद्देहि मे द्रव्यं	वृ परा ६.८
एतावन्त्येव सर्वत्र	आंपू ३५१
एतावानेन पुरुषो	मनु ९.४५
एताश्चतस्रो यो वेत्ति	भार १९.३६
एताश्चान्याश्च लोके	मनु ९.२४
एताश्चान्याश्च सेवेत	मनु ६.२९
एता सर्वा द्विजो विद्वान्	अ ११८
एतासां तनयाः सर्वे	आंपू ४५७
एतासां दशधेनूनामितरासां	अ ३३
एतासु मतिदुष्टासु	वृ हा ६.२९५
एतास्तिस्रस्तु भार्यार्थे	मनु ११.१७३
एतास्तु द्विजवर्य्येण	अ ११६
एतास्तु व्याहृती	बृ.या.३.१०
एतै गुणैः विहीनस्तु	वृ हा ५.८०
एतैर्द्रव्यैस्तुविधिवत्	भार ७.७८
एतैः द्विजातयःशोध्या	मनु ११.२२७
एतैरवितरं धार्यं उपवीत	भार १६.३५
एतैरुद्धृत्य होतव्य	पराशर ११.३५
एतैरुपायैरन्यैश्च	मनु ९.३१२
एतैरेव गुणैर्युक्त	या १.५५
एतैरेव गुणैर्युक्तं	शंख ५.१८
एतैरेव यदा स्पृष्टः	आप ४.८
एतैर्मन्त्रैः प्रयुञ्जीत	बृह १०.७
एतैर्लिंगैर्नयेत्सीमा	मनु ८.२५२
एतैर्व्रतैरपोहेत पापं	मनु ११.१०३
एतैर्व्रतैरपोहेत पापं	मनु ११.१७०
एतैर्व्रतैरपोहेयुर्महापातकिनो	मनु ११.१०८
एतैर्व्रतैरपोह्य स्यादेनो	मनु ११.१४६
एतैर्विवादान् संत्यज्य	मनु ४.१८१
एतैस्तु तर्पितैः सद्भि	वृ परा २.१९८
एतैस्तु त्र्यहमभ्यस्तं	शंख १८.९
एतैस्तु पुनरावृत्ति	वृ परा १२.२५४
एतैः स्पृष्टो द्विजो नित्यं	अत्रिस २८६
एतौ तु पार्श्वगौज्ञेयौ	बृह ९.१७
एधोदकं मूलफलं	मनु ४.२४७
एधोदकयवसकुशलाजा	व १.१६.७
एनं रक्ष जगन्नाथ	वृ हा २.१४९
एनं रक्ष जगन्नाथ	वृ हा २.१२१
एनसां स्थूलसूक्ष्माणां	मनु ११.२५३
एनास्विभिनिर्णितैः	मनु ११.१९०
एनो राजनामृच्छति	व १.१९.३१
एपद्विधानं सकलं	भार ६.१७२
एभि पंचामृतैः स्नाप्य	वृ हा ८.३०
एभि र्गुणैः पूर्ववाक्यः	वृ हा ३.१६१
एभिरुद्धृत्य होतव्यं	पराशर ११.३४
एभि सन्दूषिते कूपे	अत्रिस२०६
एभि सप्ताशनैरुक्तं	वृ परा ९.१५
एभि सम्पर्कमायाति	संवर्त १२४
एभ्यस्तूत्कृष्टमूल्यानां	नारद १८.८५
एभिर्द्रव्यैर्यथाकालं	व्या ४२
ए यथाकुलं चौलं कर्त्तव्यं	व २.३.३६
एरण्डमरुवं चैव कोविदार	शाण्डि ३.१०७
एलालवंगकंकोलं पत्र	व २.७.६४
एवञ्च कुर्वता येन	ल हा ५.८
एवञ्च क्षत्रियां वैश्या	आप ७.२०
एवञ्चरति यो विप्रो	मनु २.२४९
एवञ्च सर्व भूतानि	ब.या. २.१०२
एवमाग्निञ्च जुहुयाद	व २.४.६५
एवमध्ययनं कुर्यात्	व २.३ २७०
एवमध्यापयेच्छिष्यान्	व २.३.१६७
एवमननञ्च सूर्यश्च	वृ.गौ. १२.४३
एवमन्येषु नवस्तु	आंपू ४०६
एवमन्यैर्महादानै	अ १६
एवमन्वहमभ्यासी	व्यास १.३५
एवमभ्यर्च्य गोविंद	वृ हा ५.४१९
एवमभ्यर्चयेद्देवं	व २.६.१६५
एवमर्थं विदित्वैव	व २.६.२२४
एवमशुचि शुक्लं	बौधा २.१.७२
एवमाचमनस्योक्तं विधानं	भार ४.४१
एवमाचारतो दृष्ट्वा	मनु १.११०

ऐ

ओ

ओं पशुपते देवस्य	बौधा २.५.७६
ओं पितरोऽर्यमा भगः	बौधा २.५.२६
ओं पितामहान् स्वधा	बौधा २.५.१८६
ओं पितामहीः स्वधा	बौधा २.५.१८९
ओं पितृन् स्वधानामः	बौधा २.५.१८५
ओं पुष्टिं तर्पयामि	बौधा २.५.१२७
ओं प्रजापतिं तर्पयामि	बौधा २.५.३२
ओं प्रणवं तर्पयामि	बौधा २.५.१७१
ओं प्रतितामहान् स्वधा	बौधा २.५.१८७
ओं प्रपितमामहीः स्वधा	बौधा २.५.१९०
ओं प्राणोग्निपरात्मानं	बृह ९.१४३
ओं बुधं तर्पयामि	बोधा २.५.१०७
ओं बैवस्वतं तर्पयामि	बौधा २.५.१४०
ओं ब्रह्मपार्षदांस्तर्पयामि	बौधा २.५.३६
ओं ब्रह्मपार्षदीश्चतर्पयामि	बौधा २.५.३८
ओं ब्रह्मर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५६
ओं ब्रह्मणं तर्पयामि	बौधा २.५.३१
ओं भवंदेवं तर्पयामि	बौधा २.५.५७
ओं भीमं देवं तर्पयामि	बोधा २.५.६३
ओं भवस्य देवस्य	बौधा २.५.६५
ओं भवस्य देवस्य	बौधा २.५.७३
ओं भीमस्य देवस्य	बौधा २.४.७१
ओं भीमस्य देवस्य	बौधा २.५.७९
ओं भुवस्तर्पयामि	बौधा २.५.५१
ओं भूमिदेवांस्तर्पयामि	बौधा २.५.१४५
ओं भूः पुरुष तर्पयामि	बौधा २.५.४८
ओं भूर्भुवः सुवीरिति	आंपू ७८७
ओं भूभुर्व स्वः पुरुषं	बौधा २.५.४९
ओं भूस्तर्पयामि	बौधा २.५.५०
ओं मधुसूदनं तर्पयामि	बौधा २.५.११८
ओं महतो देवस्य	बौधा २.५.७२
ओं महतो देवस्य	बौधा २.५.८०
ओं महर्षीं स्तर्पयामि	बौधा २.५.१५४
ओं महस्तर्पयामि	बौध २.५.५३
ओं महान्तं देवं तर्पयामि	बौधा २.५.६४
ओं महासेनं तर्पयामि	बौधा २.५.१००
ओं मातामहान्स्वधा	बौधा २.५.१९१
ओं मातामहीः स्वधा	बौधा २.५.१९४
ओं मातुः पितामहान्स्वधा	बौधा २.५.१९२
ओं मातुः पितामहीस्वधा	बौधा २.५.१९५
ओं मातुः प्रपितामहान्	बौधा २.५.१९३
ओं मातुः प्रपितामहीः	बौधा २.५.१९६
ओं मातृःस्वधा नमस्त	बौधा २.५.१८८
ओं मात्यपत्नीः स्वधा	बौधा २.५.२०६
ओं मात्यान् स्वधा	बौधा २.५.२०५
ओं माधवं तर्पयामि	बौधा २.५.११५
ओंमीशाय नमः परायेति	वृ हा ४.६६
ओं मृत्युंजयं तर्पयामि	बौधा २.५.१३९
ओं यजुर्वेदं तर्पयामि	बौधा २.५.१७७
ओं यमं तर्पयामि	बौधा २.५.१३२
ओं यमराजं तर्पयामि	बौधा २.५.१३४
ओं राजर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५८
ओं रां नमः परायेति	वृ हा ४.६७
ओं राहु तर्पयामि	बौधा २.५.१११
ओं रुद्रपार्षदांस्तर्पयामि	बौधा २.५.८२
ओं रुद्र देवं तर्पयामि	बौधा २.५.६१
ओं रुद्रस्य देवस्य	बौधा २.५.६९
ओं रुद्रस्य देवस्य	बौधा २.५.७७
ओं रुद्रांश्च तर्पयामि	बौधा २.५.८१
ओं लम्बोदरं तर्पयामि	बौधा २.५.९१
ओं लं नमः परायेति	वृ हा ४.६८
ओं वक्रतुण्डं तर्पयामि	बौधा २.५.८९
ओं वरदं तर्पयामि	बौधा २.५.८७
ओं वरुणं तर्पयामि	बौधा २.५.४१
ओं वसवो वरुणोंऽज	बौधा २.५.२८
ओं वसूंश्च तर्पयामि	बौधा २.५.२५
ओं वाजसनेयियाज्ञवल्क्यं	बौधा २.५.१६८
ओं वामनं तर्पयामि	बौधा २.५.१२०
ओं वायुं तर्पयामि	बौधा २.५.४०
ओं विघ्नपार्षदास्तर्पयामि	बौधा २.५.९२

औ

क

कन्याकुम्भलीरेषु	कण्व ३०६
कन्यागते सवितरि पितरो	अत्रिस ३५९
कन्यागते सवितरि	प्रजा १७३
कन्या च अक्षतयोनि	वृ.गौ. ४.८
कन्या चैव वरश्चोभौ	वृ परा ६.७
कन्यादाता ब्रह्मलोकं पुत्रदो	कपिल ४१३
कन्यादातृगृहात्तस्य	कण्व ५४२
कन्यादान विधिवत सर्वं	वृ परा १०.१७२
कन्यादानं च तत्कार्य	बृ.य. ५.१०
कन्यादानं च तत्कार्य	बृ.य.५.११
कन्यादानं पिंडदानं	व्या २०३
कन्यादानं पितृश्राद्ध	आं पू ७४२
कन्यादानं वृषोत्सर्गो	दक्ष ३.१४
कन्यादानात्परां ब्रूयुः	वृ परा १०.१७३
कन्यादाने च वृद्धौ	आश्व १८.६
कन्यादाने विवाहे च	व्या ८४
कन्यापुत्रविवाहेषु प्रवेशे	कपिल ७६
कन्याप्रतिगृहं कृत्वा	अ ६२
कन्याप्रतिगृहस्तेन	अ ६३
कन्याप्रदानसमये तेन	लोहि ३२६
कन्याप्रवेशे वस्त्राणां	वृ परा १०.२७५
कन्या भजन्तीमुत्कृष्टं	मनु ८.३६५
कन्यां कन्यावेदिनश्च	या १.२६२
कन्यां दातुं पिता योग्यः	ब्र.या. ८.१५५
कन्यां वरयमाणा नामेवंध	ल २.४.१६
कन्यायां दत्तशुल्कायां	मनु ९.९७
कन्याया दूषणं चैव	मनु ११.६२
कन्याया दूषणं चैव	वृ हा ६.१९४
कन्यायां तु गते भानौ	व्या १३१
कन्यायां प्राप्तशुल्कायां	नारद १३.३०
कन्यायामसकामायां	नारद १३.७१
कन्याया विक्रयश्चैव	वृ हा ६.१९२
कन्यायाश्च वरस्यापि	वृ परा ६.२४
कन्यायै वाससी दद्याद्	आश्व १५.३२
कन्यासंदूषणञ्चैव	या ३.२३८
कन्यैव कन्यां या	मनु ८.३६९
कन्यैवाक्षतयोनिर्या	नारद १३.४६
कपालनखकेशैश्च	भार ७.११३
कपालं वृक्षमूलानि	मनु ६.४४
कपालानि संहृत्याप्सु	बौधा १.४.१०
कपालिसांज्ञिजइत्येते	भार ११.५५
कपाली खट्वाङ्गी गर्दभ	बौधा २.१.३
कपालोच्छिष्टनिर्माल्य	भार १५.७२
कपित्थवा कुचीसर्ग	भार १४.२३
कपित्थ–विल्लामल की	वृ परा १०.३८०
कपित्थं पैलवं चैव	व २.५.५४
कपित्थैः श्रीफलैर्वापि	ब्र.या.४.११४
कपिलदीनि दानानि	वृ.गौ. ५.६७
कपिलश्चासुरिश्चैव	वृ.या. ७.६६
कपिलश्चासुरिश्चैव	ब्र.या. २.१००
कपिलक्षीरपानेन	ब्र.मा.२.१९५
कपिलक्षीरपानेन ब्राह्मणी	पराशर १.६५
कपिलक्षीरपानेन	वृ परा ४.२२५
कपिलापञ्चगव्येन	वृ.गौ. १०.२४
कपिलां गर्भिणीं गाञ्च	वृ हा ६.२४१
कपिलां प्रतिगृह्णीयाद्धो	अ ६६
कपिलाया घृतं क्षीरं	वृ.गौ. ९.१३
कपिलाया घृतं क्षीरं	वृ.गौ. १०.२१
कपिलाया घृतं ग्राह्यां	लघु यम ७२
कपिलाया घृतं ग्राह्य	पराशर ११.२९
कपिलाया घृतं तद्वन	वृ परा ९.२५
कपिलाया घृतेनापि	वृ.गौ. ९.२९
कपिन्नयान्तु दत्तायाम्	वृ गौ. ६.४९
कपिलायाश्च गोदुःलग्ध्वा	देवल ६८
कपिलाशतस्य मत्पुण्यं	बृ.गौ. १७४७
कपिला सर्वयज्ञेषु दक्षिणार्थं	वृ.गौ. ९.६३
कपिला ह्यग्निहोत्रार्थं	वृ.गौ. ९.२२
कपिलोपजीवी शूद्रस्तु	वृ.गौ. ९.१४
कपिलोजीविनः शूद्राद्यः	वृ.गौ. ९.२०
कपोलयोस्ताडायित्वा	लोहि ६३४

कर्त्तव्यं यत्नतः शौचं	वृ परा ६.२१२
कर्त्तव्यं वचनं सर्वैः	या २.१९१
कर्त्तव्यं विधिवच्छ्राद्ध	ब्र.या. ४.१
कर्त्तव्यं सततं विप्रैरिष्टीः	वृ परा ७.१०९
कर्त्तव्यायुगक त्याज्यं	कण्व ५८७
कर्त्तव्यासयशुद्धिस्तु	या ३.६२
कर्त्ताऽऽदाय सकृद्धस्ते	आश्व १५.१२
कर्त्ताऽनाचम्य यद्भोक्ता	आंपू ७८३
कर्त्तारः प्रभवेयुर्वे न चान्येषां	कपिल ६७७
कर्तुं किलाथ च पुनः	कण्व ८१
कर्तुंच्युतेः स्वभिन्नस्य	कपिल ३७१
कर्तुं तच्च कृते भूयस्तच्च	कण्व ५०४
कर्तुं तथा तादृशेन चोपायेन	कपिल ५६७
कर्तुं न शक्यतेऽतीवभूमि	लोहि ४८२
कर्तुरौपासानाग्नौ तु	वृ हा ५.१६५
कर्तुणां गौणतः प्रोक्ते	कण्व ७७४
कर्तृत्वफलसंगित्वे	वृ हा ६.१५२
कर्तृनथो साक्षिणश्च	नारद १.१३
कर्तुभोक्तृमहादोष	आंपू ९००
कर्त्रीणां तु पुरोक्तानाम	लोहि ४२३
कर्पूर अगरु लालाटा	वृ परा १०.११२
कर्पूरमिव सुज्वालाशेषं	विश्वा ६.१७
कर्पूरं गोघृतं तैलं	भार १४.३८
कर्पूरं रामठञ्चै	ब्र.या. ४.८९
कर्पूरसंयुतं दिव्यं	वृ हा ७.१४७
कर्पूरं सहितंयत्त्तांबूल	भार १४.५९
कर्मकर्ता प्रकथितो	लोहि ३१२
कर्मकर्तु तादृशं चालं युक्तं	लोहि ५७०
कर्म कर्मान्तरेणैव	कण्व ५०९
कर्मकाले तु सर्वत्र	आश्व १.६०
कर्म कुर्य्यात्ततः पश्चात्	व २.२.३२
कर्मज्ञानं तथा योगं विना	शाण्डि ४.२०५
कर्मज्ञानं तथा योगं बिना	शाण्डि ५.१६
कर्मणादिष्टिसिद्धश्च	कण्व ३०९
कर्मणापि समं कुर्याद	मनु ८.१७७
कर्मणा मनसावाचा प्रयत्नेन	कपिल ८७४
कर्म्मणा मनसावाचा	अत्रि २.२
कर्मणा मनसावाचा	वृ हा ८.१९४
कर्म्मणा मनसा वाचा	या १.१५६
कर्मणा मनसा वाचा	वृ हा २.१४०
कर्मणा ममसा वाचा	व १.२६.२
कर्मणा मनसा वाचा	व १.२६.३
कर्मणा मनसा वाऽपि	शाण्डि ४.७७
कर्मणां च विवेकाय	मनु १.२६
कर्म्मणाम्फलाप्नोति	ब्र.या. १०.२३
कर्मणां फलसन्त्यागः	वृ हा ५.५६
कर्मणां मरकादीनां	भार ९.४५
कर्मणां याजुषादीनां	आश्व २४.१७
कर्मणां समनुष्ठानमा	बृह ११.४०
कर्मणे यस्य वा लोके	कपिल ९८७
कर्मणो वैदिकस्यैवं	आंपू ४२
कर्मण्येष्वपि भिन्नेषु	शाण्डि ४.१११
कर्मनिष्ठा स्तपोनिष्ठा	या १.२२१
कर्मनैमित्तिकं तस्माद्	आंपू २५२
कर्ममध्ये पुराणोक्तं	आंपू ६
कर्ममात्रस्य सर्वत्र प्राणा	आंपू २६८
कर्ममार्गस्य काल वै	कण्व ३२१
कर्म यद्यपि ततप्रोक्तं	कण्व ४१८
कर्मयोगस्तथा वास्याद्योगः	शाण्डि ५.७८
कर्मलोप मकुर्वन्वै	वृ हा ४.१६४
कर्मविप्रस्य यजनं	अत्रिस १३
कर्मषट्कं प्रवक्ष्यामि	वृ परा २.५
कर्मसद्भिप्रकथितं तत्	लोहि १७
कर्मसंन्यासयोगेन	बृह ११.५७
कर्म स्मार्तं विवाग्नौ	या १.९७
कर्मानुवप्रतिश्रुत्य	नारद ७५
कर्माणि कानीहं कथंच	वृ परा २.४
कर्माणिद्विविधं ज्ञेयमशुभं	नारद ६.५
कर्माणि ह्यविनाशीनि	बृह ९.३२
कर्माण्यन्यानि संत्यत्य	भार ६.१६०

कुर्यादेव विधानेन दक्षिणां लोहि ३७८
कुर्यादेव समन्त्रास्ते लोहि २३
कुर्यादेवेति हारीतो आंपू २६४
कुर्याद्अध्ययनं नित्यं औ ३.४१
कुर्य्याद् अध्ययनं नित्यं संवर्त १००
कुर्याद् उरतोऽभ्यर्णे वृ परा १०.५४
कुर्याद्येदवं विधिवत् वृ परा ११.१९९
कुर्याद्व्याहृतिभिर्न्यासं वृ.या. ५.४
कुर्याद्बलिहृतिं विद्वान् वृ परा ५.८१
कुर्याद्वा कारयेद्वापि आंपू १८३
कुर्याद्विनयनं तत्र उर्जीव ब्र. या. ८.३१२
कुर्याद्विशेषवत्मकर्म यथा शाण्डि ५.५५
कुर्याद् वृतपशु संगे मनु ५.३७
कुर्यान्नामानि देवस्य शाण्डि ३.१६
कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु ब्र.या. ८.५०
कुर्यु पंचमहायज्ञान् वृ परा ६.७४
कुर्वती चातकी वृत्तिं कपिल ४०२
कुर्वन्नज्ञा द्विजः कर्म वृ परा २.४९
कुर्वन्नुक्तानि कर्माणि वृ परा ४.२१८
कुर्वन्ति चैतद् विधिना वृ परा ११.८५
कुर्वान्ति ते महापापात्तद्ववि विश्वा ८.५६
कुर्वन्ती भोजनं भतुर्भुक्तेः आंपू ८७१
कुर्वन्वै कल्पना सार्द्ध ब्र.या. ५.१७
कुर्व्वन्वै प्रतिपच्छ्राद्ध ब्र.या. ४.१६१
कुर्वन् सुभोजनं कर्म्म शाण्डि ४.१२१
कुर्वस्तत्पलमाप्नोति विष्णु म ८४
कुर्वाणां वीक्षितैर्नित्यं विष्णु १.२८
कुर्वीत परया भक्त्या वृ हा ६.१४६
कुर्वीतं ब्रह्मविद्विप्रो वृ परा ३.२४
कुर्वीत महतीं शांतिं वृ हा ६.४१४
कुर्वीत वासुदेवेष्टिं वृ हा ६.४१९
कुर्वीत वैनतेयेष्टिं वृ हा ६.४१५
कर्वीत सर्वकृत्यानि धर्मोऽयं कपिल ६८९
कुर्वीत् सुविशालानि वृ हा ४.२०९
कुर्वीतैवदिवा शौचं भार ३.१७
कुर्वीतैव प्रयत्येन पूर्वशेषेण कपिल २८४
कुलकोटिं समुद्धृत्य वृ हा ७.८९
कुलक्षयिणी ज्ञेया ब्र.या. ८.१५२
कुलघ्नो नरकस्यान्ते शाता ४.१
कुलंकारी मनुर्मानी आंपू ५१२
कुलंजं सप्तमं पूर्वं षष्ठं कपिल ७८
कुलज्जां सुमुखी स्वांगी आश्व १५.२
कुलजे वृत्तसम्पन्ने मनु ८.१७९
कुलटाषण्डपतिवैरिभ्य शाण्डि ३.१८
कुलत्थशाकैः पूपैश्च शाता २.४५
कुलत्था मुद्गमाषाश्च वृ परा ५.१३९
कुलंदा (पा) षण्डपतित वाधू १६८
कुलप्रतिष्ठानाशाय पापैपात्र कपिल ५८५
कुलार्विजमधीयानं कात्या १५.४
कुलस्य पावनार्थाय व २.६.४२७
कुलं तस्या न शंकेत वृ परा ५.४२
कुलाचारविनिर्भ्रष्टो ब्र.या. ४.१८
कुलाचारो पि कर्तव्य वृ परा ६.२०४
कुलानां हि सहस्रं तु वृ परा १०.११७
कुलानि जाती श्रेणीश्च या १.३६१
कुलानि श्रेणयश्चैव नारद १.७
कुलासि सन्तति प्राण वृ.गौ.३.५५
कुलान्ते पुष्पिता गावः वृ परा ५.१८
कुलान्यकुलतां यान्ति ब्र.या. ८.१८६
कुलालचक्रनष्पिन्नं कात्या १७.१०
कुलालवृत्या जीवेत औ सं ३३
कुलित्थशालिशालूकाः व २.७.९३
कुलीनः कर्मकृद्वैद्य बृ.गौ. १४.१२
कुलीनस्फीता सुचाख्याताः ब्र.या.८.१५१
कुलीना ऋजवः शुद्धा नारद २.१३०
कुले ज्येष्ठतया श्रेष्ठ नारद २.३८
कुले तदवशेषेतु संतानार्थ नारद १३.८६
कुले मुख्येऽपि जातस्य मनु १०.६०
कुले समाने सा चापि लोहि ८३
कुविवाहैः क्रियालोपैः मनु ३.६३

क्षपा च पक्षिणी सद्भि	वृ परा ८.३८
क्षमा गुणो हि जन्तूनां	आप १०.५
क्षमा दमः क्षमा दानं	बृ.गौ. २०.२०
क्षमा दमा क्षमा यज्ञः क्षमा	बृ.गौ.२०.२१
क्षमावतामय लोकः	बृ.गौ. २०.१९
क्षमावान् प्राप्नुयान्मोक्ष	बृ.गौ.२०.२२
क्षमा सत्यं दमः शौचं	विष्णु २
क्षयञ्च दृश्यते तस्य	अत्रिस ३३७
क्षयं वृद्धिञ्च वणिजा	या २.२६१
क्षयाहे पातसंक्रान्ते	व्या १३४
क्षमाहे पर्व्वणि पूर्व्वे	ब्र.या.६.१२
क्षयेऽहनि समासाद्य	ब्र.या.३.२
क्षयेऽहनि समासाद्य	ब्र.या. ३.५
क्षयेऽहनि समासाद्य	ब्र.या.३.८
क्षयैरकारः सम्पोक्तो	वृ हा ३.१०१
क्षरन्ति सर्वा वैदिक्यो	मनु २.८४
क्षराक्षविस्टष्टस्तु	विष्णु म २५
क्षात्रेण कर्मणा जीवेद्विशां	या ३.३५
क्षान्तान् दान्तान्	वृ.गौ. १०.९६
क्षान्ती दान्ती जितक्रोधी	बृ.गौ. २१.६
क्षान्तोदान्तः शुचिः	ब्र. या.४.५७
क्षारं च लवणं दिव्यं मधुरं	कपिल ५७६
क्षारेण शुद्धि कांसस्य	शंख १६.४
क्षालनं दर्भकूर्चेन	कात्या २९.१
क्षालयित्वा करैर्भांड	व २.५.४३
क्षितिशायी भवेद् रात्रो	वृहा ८.२०८
क्षितिस्थाश्चैव या	व १.३.४६
क्षिपेच्चतुर्विधान् भूतान्	वृहा ४.१३९
क्षिपेदञ्जलीन्स्तत्री	ब्र.या. २.१०४
क्षिप्त्वाऽग्नावशुचि	शंख १७.५५
क्षिप्त्वा कूपे यथा	वृ परा ७.३००
क्षिप्त्वा चार्ध्य तथा	औ ५.३९
क्षिप्त्वा तिलानयः पूर्य	आश्व २३.३२
क्षीणस्य चैव क्रमशो	मनु ७.१६६
क्षीणायुस्त्वं दरिद्रत्वं	वृ परा ६.१७३
क्षीणां क्षीरसरीरागांदद्यार्द्रो	ब्र.या.११.१३
क्षीरकाष्ठेन कुर्वीत	विश्वा १.५७
क्षीरञ्च लवणोन्मिश्र	वृ परा ८.१२५
क्षीरतोयं प्रदातृणाम्	वृ.गौ.६.११
क्षीरविक्रयिणश्चपि ते	वृ.गौ.१०.९२
क्षीरं दधि घृतं तक्रं	प्रजा १२९
क्षीराज्यमधुदध्यनं	आश्व ८.३
क्षीराज्यसर्करोपेतं	व २.६.२२७
क्षीरान्नं शर्करोपेतं	वृहा ५.४१८
क्षीराब्धौ शेषपर्यंके	वृहा ७.२३९
क्षीरेण कपिलायास्तु	वृ.गौ. ९.२८
क्षीरेण तु त्र्यहं भुंक्ते	अत्रिस १२५
क्षुते निष्ठीविते चैव	पराशर १२.१८
क्षुत्तृष्णाऽध्वश्रमश्रान्त	वृ परा ४.१९६
क्षुत्तृड्भ्यां प्रथमे	वृ परा १२.१८२
क्षुत् पिपासाश्रमार्त्तः च	वृ.गा. ६.४६
क्षुत्पिपासाश्रमार्त्तताय	वृ.गौ. ६.७२
क्षुदुत्पत्तिर्भवेत्तीक्ष्ण	कण्व ५६५
क्षुद्रकर्मसुसर्वेषु तर्जनि	भार ७.१९
क्षुद्रकाणां पशूनां तु	मनु ८.२९७
क्षुद्राभिशस्तवार्धुष्य	व्यास ३.४५
क्षुद्रमध्यमहाद्रव्य हरणे	या २.२७८
क्षुद्र वस्तु समायातं	शाण्डि ४.१३४
क्षुधा परीतस्तु किंचिदेव	व १ १२.३
क्षुधार्त्तश्चात्तुमभ्यागाद्	मनु १०.१०८
क्षुधा व्याधिकतायानां	आप ३.९
क्षुधितं तृषितं श्रान्तं	पराशर २.४
क्षुरस्नानात्परं यस्तु	आंपू २५६
क्षुरेणेति च तीक्ष्णेन	आश्व९.१३
क्षुरोमांसावदानार्थः	कात्या २९.३
क्षेत्र कूपतडागानामा	मनु ८.२६२
क्षेत्रजादीन् सुतानेतान्	मनु ९.१८०
क्षेत्रजेष्वापि पुत्रेषु	नारद १४.१४
क्षेत्रज्ञः पंचधाभुंक्ते	विष्णु म ५५
क्षेत्रदानं वृत्ति दानं सेतुदानं	लोहि ५३२

ख

गर्भाधानं पुसवनं	ब्र.या. ८.३५९
गर्भाधानादिभि मंत्रैः	व्यास ४.४२
गर्भाष्टमेऽब्दे तृतीये वा	मनु २.३६
गर्भाष्टमेषु ब्राह्मणं	व १ ११.४४
गर्भाष्टमेऽष्टमेचाब्दे	ब्र.या.८.७
गर्भाष्टमेऽष्टमे चाब्दे	या १.१४
गर्भिणी गर्भशल्या	वृ परा ८.१५३
गर्भिणी तु द्विमासादिस्तथा	मनु ८.४०७
गर्भिणी नानुगन्तव्या	वृहा .८.२०४
गर्भिण्यतुरभृत्येषु	व्यास ३.४३
गर्भिण्या वा विवत्साया	औ ९.३७
गर्भेधृतेऽथ तच्चिहूनै	लोहि १७५
गर्भे यदि विपत्ति स्यात्	पराशर ३.२३
गर्वोदम्भोऽप्यहङ्कार	वृ.गौ. ८.१०८
गलेऽसत्कर्मणां रूपादमे	शाण्डि ४.१४२
गवाघ्रातानि कांस्यानि	आंगिरस ४३
गवाघ्रातानि कांस्यानि	आंप ८.२
गवाघ्रातानि कांस्यानि	पराशर ७.२४
गवा चान्नमुपाघ्रातं	मनु ४.२०९
गवाज्यञ्च दधि क्षीरं	वृहा ४.१०५
गवाज्य संयुतैः दीपैः	वृहा ५.५१३
गवाज्यं जुहुयाद् वह्नौ	वृहा ५.४७९
गवाज्यं तिलतैलं	वृहा ४.१०३
गवाज्येन युतं दत्त्वा	वृहा ५.३८६
गवाज्येन युतं दद्यात्	व २.६.११६
गवाञ्च कन्यकानाञ्च	वृहा ३.२९०
गवाद्यः शक्रदीक्षायाः	वृहस्पति ७३
गवादिषु प्रनष्टेषु	नारद १५.२१
गवादीनां प्रवक्ष्यामि	आप १.१०
गवार्थे ब्राह्मणार्थे	बौधा २.२.८०
गवां क्षीरं दधि घृतं	प्रजा १२५
गवां गर्भी (र्भ) विपत्ति	ब्र. या.९.५२
गवां च विंशति दद्याद्	वृ परा ८.९९
गवां चैव सहस्रं तु	नारा १.२७
गवां निपातने चैव गर्भोऽपि	लघु यम ४२
गवां निष्पीडनं क्षीरं	वृहा ६.१७७
गवां प्रचारे गोपालाः	नारद १.४६
गवां प्रशस्तं त्रितयं	भार १४.५२
गवां बन्धनयोक्त्रेतु	पराशर ८.१
गवां मूत्रपुरीषेण दध्ना	पराशर ६.४६
गवां शतसहस्राणां	वृहस्पति २८
गवां शतं सैकवृषं	पराशर १२.४३
गवां शताद् वत्सतरी	नारद ७.११
गवां श्रृंगोदकस्नानफलां	वृ परा ५.२९
गवां श्रृंदके स्नातो	पराशर ५.२
गवां श्रृंदके स्नात्वा	अत्रिस ६५
गवां संरक्षणार्थाय	पराशर ९.१
गवां सर्पि शरीरस्थं	बृह ९.३०
गवां सहस्रन्तेनेह दत्त	वृ.गौ. ९.४६
गव्यन्तु पायसं देयं	ब्र.या. ४.५१
गव्यन्तु पायसं देयं	ब्र.या. ४५२
गव्यस्य पयसोऽलाभे	आंउ १२.५
गव्ये तु त्रिरात्रमुपवास्	बौधा १.५.१६०
गहनत्वाद्विवादानाम	नारद १.३८
गाणिक्यां माणिक्यां वपनानि	वृहा ४.१७८
गाथामिमां पठेयुस्ते	आश्व १५.२२
गाथामुदाहरन्त्यत्र	वृ परा १०.३७८
गानविद्यासमर्थस्सन्	शाण्डि ४.१७३
गानैः वेदैः पुराणैश्च	वृहा ७.२६०
गान्धर्वस्तु स विज्ञेयो	ब्र.या. ८.१७७
गान्धर्वादि विवाहेषु	ब्र.या. ८.१७५
गांधर्वादिविवाहैस्तैयदि माता	कपिल ४०६
गान्धर्वे होम जाप्यैश्च	बृ.गौ. १९.१८
गामन्नमश्वं वित्त वा	वृ.गौ. १२.२६
गामेकां स्वर्णमेकं	वृहस्पति ४०
गां गत्वा शूद्रावधेन	व १.२३.४
गां चेद्धन्यात्तस्या	व १.२१.१९
गां धयन्ती परस्मै	बौधा २.३.४४
गां नृपं चैव वैश्यं च	वृ परा ८.१८४
गायका नर्तकाश्चैव	वृ.गौ. १०.७५

गुरौ वासोऽग्निशुश्रूषा	पु १२
गुरोश्चालीकनिर्बन्धः	व १.२१.३१
गुरोस्तु चक्षुर्विष	औ ३.४
गुर्वधीनो जटिलः	व १.७.८
गुर्वर्थं दारमुज्जिहीषन्न	व १.१४.९
गुर्वर्थे बहवः शुद्ध्यै	औ ८.२५
गुर्वादिपोष्यवर्गार्थं	वृ परा ६.२३७
गुर्वी योनौ पतत वीजम्	वृ.गौ. ४.१३
गुर्वीषद्भाविताश्चैते	वृ.गौ. ९.५३
गुर्वी सा भूस्त्रिवर्स्य	व्यास २.१५
गुलौदनं पायसञ्च	या १.३०४
गुल्मगुच्छक्षुपलता	या २.२३२
गुल्मांश्च स्थापयेदाप्तान्	मनु ७.१९०
ल्मान् वेणूंश्च विविधा	मनु ८.२४७
गुह्यका राक्षसाः सिद्धा	ल व्यास २.३२
गुह्यानामपरङ्गुह्यंवक्तु	वृ.गौ. १०.५
गुह्यारण्यस्थयोर्दण्डो	भार १५.१२७
गुह्ये कट्यां तथैकैकं	वृ परा ४.२८
गूहमानस्तु दौश्शील्याद्	नारद २.२२१
गृञ्जनारुणवृक्षासृग्	व्यास ३.५९
गृध्रं परिवारं वा राजा	व १.१६.२०
गृध्र परिवारं स्यान्नं	व १.१६.२१
गृध्रमुष्टं नृमांसं	वृहा ६.२५३
गृध्रश्येनशिखिग्राह	पराशर ६.५
गृध्रो द्वादश जन्मानि	अत्रि ५.१६
गृध्रो द्वादश जन्मानि	पराशर १२.३४
गृध्रो द्वादश जन्मानि	व्यास ४.६६
गृभिष्व दया प्रागेव	वृहा ३.७६
गृष्टिदानं प्रवक्ष्यामि	वृ परा १०.३३
गृष्ट्यादीनथ वक्ष्यामि	वृ परा १०.३०२
गृहक्षेत्र विरोधे	व १६.९
गृहजातस्तथा क्रीतो	नारद ६.२४
गृह दण्ड चक्रसंयोगात्	या ३.१४६
गृहदानं महादानं न	अ ३७
गृहदाहाग्निनाग्निस्तु	कात्या १८.१४

गृहदेवताभ्यो बलि	व १.११.३
गृहद्वाराशुचिस्थान	नारद ६.६
गृहद्वारेऽतिथौ प्राप्ते	वृ परा ८.१९७
गृहधान्याभयोपान	या १.२११
गृहपदो नगरं आप्नोति	व १ २९.१४
गृहपूजां ततः कुर्याच्	ब्र.या. २.१५१
गृहप्रतिग्रहस्तेन दुस्तरो	अ४१
गृहप्रवेशहोमाख्यं	कण्व ५४१
गृहमध्येश्रितं पूज्य	ब्र.या. २.१५२
गृहवासः सुखार्थाय	दक्ष ४.७
गृहशुद्धिंप्रवक्ष्यामि	अत्रिस ७७
गृहस्थ एव यजते	व १.८.१४
गृहस्थ कामतः कुर्य्याद्	पराशर १२.५७
गृहस्थधर्मो यो विप्रो	पराशर ११.४७
गृहस्थ पुत्रपौत्रादीन्	लहा ५.२
गृहस्थः प्रत्यहं यस्मात्	दक्ष २.४२
गृहस्थ यव यजते	शंख ५.६
गृहस्थ शौचमाख्यातं	दक्ष ५.६
गृहस्थस्तु चतुर्भेदो	वृ परा १२.१५३
गृहस्थस्तु यदा पश्येद्	मनु ६.२
गृहस्थस्तु यदा पश्येद्	शंख ६.१
गृहस्थस्तु यदा युक्तो	पराशर १२.३९
गृहस्थस्यनितं वस्त्र	भार १५.११७
गृहस्थस्य वनस्थस्य	भार १६.८
गृहस्थस्यवस्थस्य	भार १५.१२६
गृहस्थाश्रमिण अर्थोपार्जन	विष्णु ५८
गृहस्थाश्रमिणां कर्तव्य	विष्णु ५९
गृहस्थैर्यतयः पूज्या	वृ.गौ.१२.९
गृहस्थोदेवयज्ञाद्यै	दक्ष १.१३
गृहस्तो ब्रह्मचारी वा	आश्व १७.५
गृहस्थो वाऽपि सर्वेभ्यो	शाण्डि १.१२२
गृहस्थो वा वनस्थो	वृहा ८.२१६
गृहस्थो विनीतक्रोध	व १.८.१
गृहस्थो वैश्यदेवस्य	विश्वा ८.४
गृहस्यस्य व्रंत वक्ष्ये	ब्र.या.९.१

गृह्णात्यदत्तं योलोभाद्	नारद ५.११
गृह्णीत योऽश्व विधि	वृ परा १०.३३७
गृह्णीयात्तु तदन्तर्वे	आंपू २३७
गृह्णीयात् प्रागपोशानं	वृ परा ६.१३५
गृह्णीयात् सर्वदा राजा	वृ परा १२.६५
गृह्णीयादर्पयद् दद्यात्	वृ परा १२.१९२
गृह्णीयादित्येतदपरम्	बौधा १.४.१४
गृह्यवह्निरिमौ मंत्र	आश्व २.५२
गृह्याग्निर्यस्य चेन्न	आश्व २३.४८
गृह्यग्नौ पचनं पिण्डं	आश्व २३.४६
गृह्योक्तविधिनेवात्र	वृहा ५.१२६
गेयकाले सामगानां	बृ.या. ४.२१
गोकर्णाकृतिरित्याहुः	विश्वा २.११
गोकर्णाकृतिहस्तेन माष	वाधू २२
गोकुलस्य तृषार्त्तस्य	वृ.गौ. ११.५
गोकुलेषु वसेच्चैव	पराशर १२.६१
गोकृते स्त्रीकृते च एव	वृ.गौ. ५.११५
गोक्रीडां न च	ब्र.या. ९.५१
गोक्षत्रियं तथा वेश्यं	बृ.य.२.४
गोक्षीर सर्पिर्मधु खण्ड	वृ परा १०.७३
गोगामी च त्रिरात्रेण	पराशर १०.१६
गोघाती पंचगव्याशी	वृ परा ८.१२५
गोघृतं जुहुयाल्लक्ष	भार ९.३७
गोघृतं मधुसंम्मिश्रं	भार ९.३८
गोघ्नस्य देहि मे	वृ परा ८.१३०
गोघ्नस्यातः प्रवक्ष्यामि	संवर्त १२९
गोघ्नातेऽन्ने तथा कीट	या १.१८९
गोचरे यस्य मुषितं	नारद १८.७६
गोचर्म मात्र मब्विन्दुः	बौधा १.५.६८
गोजाश्वस्यापहरणे	शंख १७.१५
गोत्रनामानुबन्धनां	आंपू १३०
गोत्रनामानुवादान्तं	कात्या २२.२
गोत्रपान्नं भवत्येव	विश्वा ८.७४
गोत्रप्रवेशसिद्ध्यर्थं प्रतिगृह्य	कपिल ३८८
गोत्ररिक्थे जनायितुर्न	मनु ९.१४२
गोत्रहा पुरुषः कुष्ठी	शाता २.३६
गोत्र वर्ज्यं विवाहा	आंपू ३५४
गोत्राणां चैव कर्मणां	ब्र.या. ४.६९
गोत्राणि शास्त्रसिद्धानि	आंपू ३५०
गोत्रान्तव (तर) प्रतिष्ठस्य	कपिल ७९
गौत्रे चैवाथ संबन्धे	आश्व १५.१८
गोदा (?) दक्षिमादाय	ब्र.या. ८.३५०
गोदानं रत्नदानञ्च पुष्प	कपिल ४३१
गोदान महत्व	विष्णु ८८
गोदान विधि संयुत्कं	ब्र.या.११.२५
गोदानं षोडशेवर्षे	आश्व १४.१
गोदाने वत्सयुक्ता गौः	शाता १.१३
गोदावरी भीमरथी	आंपू ९१८
गोदावर्याः शवर्या वा	वृहा ६.२८८
गोदेहने चर्मपुटे च तोयं	अत्रिस २३०
गोदोहमन्नपाको	बृ.या. ८.१३
गोदायं दक्षिणां दद्यात्	पराशर १२.८
गोधूमंचूर्ण सदृशः	भार ७.३२
गोधूमाः कण्टकिफलं	लोहि ३१४
गोधूमाश्च मसूराश्च	वृ परा ५.१३७
गोधूमैश्च तिलैः मुद्गैः	औ ३.१३८
गोनृपब्रह्महतानामं	या ३.२६
गोपं क्षीरभृतो यस्तु	मनु ८.२३१
गोपतिर्मृत्युमाप्नोति	पराशर ९.९
गोपयित्वैव यत्नेन	आंपू १०.१८
गोप शोण्डिक शैलुष	या २.४९
गोपालस्तत्रचै वान्यो	ब्र.या. १२.२०
गोपालस्तुवद प्रौवैसे	ब्र.या. १२.१९
गोपीचन्द खण्डांश्च	व्या २५
गोपुच्छरोमभि कृत्वा	भार १८.८२
गोपुच्छरोमभिर्दर्भैः	भार १८.९६
गोपुच्छेषुशिरादासी	११.४७
गोप्याधिभोगेनो वृद्धि	या २६०
गोप्याधिभोग्ये नो	वृहा ४.२३४
गोप्रदानेन यत्पुण्यं	बृ.गौ. ७.८४

छ

ज

जानोरधस्तास्तविले	भार ४.८
जान्वा च दक्षिणं दर्भैः	व्यास ३.१३
जान्वा वै पाणि संगृह्य	व २ ३.६६
जापारूदेतीतिजपेत्	व २ .४.७४
जापिनां होमिनां चैव	व १ २६.१३
जाप्ये तु त्रिपदा ज्ञेया	वृ परा ४.९९
जामयोऽप्सरसां लोके	मनु ४.१८३
जामयो यानि गेहानि	मनु ३.५८
जामाता श्वशुरो बन्धु	वृ परा ७२०
जाम्बूनदविचित्रेण	वृ.गौ. ७.३९
जायते हि विशेषेण	लोहि ४६९
जायानामग्रजस्त्याज्यः	लोहि २७२
जायन्ते तु पुनः सर्गे	वृ.या. ३.२०
जायन्ते बहवः पुत्रा	अत्रिस ५५
जायायास्ताद्धि जायात्वं	वृ परा ६.१९०
जायोक्ता तेन भर्ता वै	वृ परा ६.१८१
जारे चौरैत्यभिवदन्	या २.३०४
जारेण जनयेद् गर्भगते	पराशर १०.३०
जालसूर्यमरीचिस्थं	या १.३६२
जालान्तरगते भानौ	मनु ८.१३२
जिघांसन्तं जिघांसीयान्न	ब्र.या. १२.४६
जितेन लभते लक्ष्मी	पराशर ३.३९
जितेन्दियः स्यात् सततं	औ ३.१५
जितेन्द्रिया जितात्मानो	विष्णुम ४८
जितेन्द्रियान् शुभाचारान्	व २.७.११
जितेन्द्रियैस्तु भाव्यं	वृ परा ७.२८
जितोधर्मश्च पापेन	वृ परा १.३५
जित्वा स सकलान्	विश्वा १.१६
जित्वा सम्पूजयेद्देवान्	मनु ७.२०१
जिह्मं त्यजेयुः निर्लभं	या २.२६८
जीनकार्मुकवस्तावीन्	मनु ११.१३९
जीमूतस्येति सूक्तेन	वृहा ६.३२
जीर्ण नीलं संधितं	व्या ३८८
जीर्णशक्तिमतो नुश्चेत्त	आंपू २९०
जीर्णोद्यानान्यरण्यानि	मनु ९.२६५
जीर्णोवयुक्तो योदंडो	भार १५.१३०
जीर्यन्ति जीर्यतः केशा	व १.३०.१०
जीवतो वाक्यकरणात्	वृ परा ६.१९६
जीवतो वाक्यकरणे	ब्र.या. ४.१४७
जीवत्तातोऽपिकर्ता	आंपू ७२१
जीवदेतेन राजन्यः	मनु १०.९५
जीवनांशैकसंलब्धभूमिका	लोहि ५४५
जीवन्तमति दद्याद्	कात्या १६.१५
जीवन्ति जीविते यस्य	व्यास ४.२१
जीवन्ति वृत्या रस दान	वृ परा ६.२८१
जीवन्तीनां तु तासां ये	मनु ८.२९
जीवन्नपि भवेच्छुद्धो	वृ परा ८.११०
जीवन्नात्मत्यागी कृच्छ्रं	व १.२३.१७
जीवन् पितामहोयस्य	व्या ६२
जीवन्मुक्तश्च ब्रह्मैव	कण्व २५२
जीवन्वापि मृतोवापि	वृ परा ६.५०
जीवपुत्रा तु या नारी	कपिल ५९३
जीवमात्रोभवेच्छूद्रो	ब्र.या. २.८८
जीवसंज्ञोऽन्तरात्माऽन्यः	मनु १२.१३
जीवातुश्च ततःश्राद्ध	कपिल ५५
जीवात्मा कायमध्यस्थ	वृ परा १२.३१७
जीवात्मा योजितः षष्ठ	वृ परा ६.१०८
जीविताथमपि द्वेषं	औ १.३१
जीवितव्ये च तद्विप्राः	ब्र.या.११.२
जीवितात्ययमाप[illegible]	मनु १०.१०४
जीवते चैव तृप्ताय	औ ९.१३
जीवे क्षीणेऽथवा पुण्यकामी	वृहा ६.२९१
जीवे पितरि चेच्छ्राद्धे	आंपू १०६
जीवो यत्र विशुद्ध्येत	वृ परा ६.९२
जीवो वैश्वानरोज्ञेयो	ब्र.या. २.१६७
जुगुप्सितन्तु यच्चान्नं	बृ.गौ. १३.७
जुर्व्यप्येनो न तं स्पृशेत	कात्या १४.१४
जुहुमाच्च दशांशेन	शाता २.३३
जुहुयाच्चवरूणा वापि	वृहा ३.२७०
जुहुयात् कुसुमैः शुभ्रै	वृहा ३.३२०

ततः पुष्पांजलिं दत्वा	भार ११.९५
ततः पुष्पांजलिं दत्वा	वृ हा २.१०२
ततः पुष्पांजलि दद्या	भार ११.११७
ततः पूर्णाहुतिं हुत्वा	कात्या ८.१०
ततः पूर्वाग्रदर्भेषु	वृ परा २.१७६
ततः पूर्वादि दिक्षादौ	भार ११.५१
ततः पूर्वोक्तहोमैश्च प्राच्यो	नारा ३.१६
ततः प्रक्षालयेत् पादौ	ल हा ४.३४
ततः प्रक्षाल्य पादौ द्वौ	वृ.गौ. ८.४२
ततः प्रणम्य गोविन्दं	बृ.गौ. २२.४३
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा	व २.७.१०३
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा	वृ हा २.१७
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा	वृ हा २.११७
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा	भार ७.९६
ततः प्रदक्षिणं भक्तया	भार ११.११५
ततः प्रधानं होमञ्च	व २.३.५६
ततः प्रभृति देवेशं	वृ हा २.१५१
ततः प्रभृति पुत्रादौ	ल हा ६.५
ततः प्रयाति सविता	ल हा ४.१५
ततः प्रविश्य भवन	व्यास ३.२७
ततः प्रसन्नवदने गायत्र्या	भार ११.११८
ततः या (प्रा) णस्य संतु	भार ४.२९
ततः प्राणाद्याहुतयो	वृ हा ८.५३
ततः शक्ततरा पश्चाद	कात्या ८.८
ततः शिरःप्रदेशे तु प्राच्या	नारा ५.४२
ततः शिष्यहितार्थाय	ल हा ४.२१
ततः शुक्लाम्बरधरः	या १.२९२
ततः शुद्धिमवाप्नोति	पराशर १२.७०
ततः शौचं ततः पानं	बौधा १.४.२०
ततश्च मुक्तः पापेन	वृ.गौ. ९.१५
ततश्चाऽऽग्नेय पर्यन्तं	आश्व २.५१
ततश्चापि च्युतः काला	बृ.गौ.१७.५३
ततश्चापि च्युतः कालात्	बृ.गौ. १७.२८
ततश्चापि च्युतः कालात्	बृ.गौ. १७.४८
ततश्चापि च्युतः कालादिह	वृ.गौ. ६.१३८
ततश्चपि च्युतःकालादिह	वृ.गौ. ६.१४०
ततश्चापि च्युतः कालादिह	वृ.गौ. ७.८५
ततश्चापि च्युतः कालादिह	बृ.गौ. १७.३९
ततश्चापि च्युतः कालदिह	बृ.गौ. १७.४४
ततश्चापि च्युतः कालादिहं	वृ.गौ. १९.१५
ततश्चपि च्युतः कालादिहं	बृ.गौ. १९.२३
ततश्चापि च्युतः कालादिहं	बृ.गौ. १७.१५
ततश्चापि च्युतः कालान्	बृ.गौ. १७.९
ततश्चालोकयेदकं हंसः	वृ.गौ. ८.५२
ततश्चावसथं प्राप्य	ल हा ४.२०
ततश्चैव महानाम्नि	आश्व १८.२
ततश्चैवापसव्येन मधु	आश्व २३.६२
ततश्चैवाभ्यसेद्वेदं	आश्व १.७३
ततः श्राद्धेषु के मंत्रा	प्रजा ९
ततः श्राद्धैकसाद् गुण्य	आंपू ८९३
ततः संस्तीर्य तत् स्थाने	औ ५.४७
ततः संस्तूय तान्	आश्व २३.११
ततः संकल्पयेत्प्रातः	भार ६.४२
ततःस जडतां प्राप्त	शाण्डि ४.१७२
ततः सद्भक्तितोदद्याद्	भार ७.९७
ततः स धर्मविद्विप्रः	ब्र.या .२.२०४
ततः संतर्पयेद्देवानृषीन्	बृ.या. ७.६१
ततः सन्तर्पयेद्देवान्	स व्यास २.३५
ततः सन्तुष्टमनसा	वृ परा १.११
ततः संन्ध्यां प्रकुर्वीतं	कण्व १६८
ततः संध्यामुपासीत	ल व्यास २.८६
ततः सन्ध्यामुपासीत	ल हा ४.६८
ततः सन्निधिमात्रेण	पराशर १२.४८
ततः सप्रणवां सव्याहृति	शंख १२.८
ततः समर्चयेत्ताक्ष्यं	वृ हा ७.१७७
ततः समस्तनिर्माल्यं	भार ११.८०
ततः संमार्जनं कृत्वा	वृ हा ६.९७
ततः सपुष्पहस्तेन दक्षिणे	भार ११.१०२
ततः सम्पूजयेद्देवं	व २.६.२२०
ततः संपूजयेद्देवं	वृ हा ५.१२१

ततोहरिद्रयालिप्य शुद्ध	भार ११.९०
ततो हैमवते वर्षे जायते	बृ.गौ. १७.३५
ततो होमं प्रकुर्वीत	विश्वा ८.७१
ततो होमे कृते तावन्	लोहि ३२
तत्कर्तव्यत्वेन कुर्यात्कर्म	लोहि ४३०
तत्कर्तव्यत्वेन नान्यः	लोहि ४३१
तत्कर्तव्यं यत्र कुत्र	लोहि ३५७
तत् कर्तव्यं हि सर्वेषां	वृ हा २.४
तत्कर्मणः फलस्यार्द्धं	वृ.गौ. १२.१८
तत्कर्मणः सर्वकर्मजालं	कण्व २९०
तत्कर्मयोग्यो नैवस्याद्य	कपिल ७६०
तत्कलत्रस्य तत्पुत्र	कण्व ७८४
तत्कलत्रादिजनताप्रद्वेषः	लोहि ४६८
तत्कलावृद्धिजनकं सा	आंपू ११०२
तत्कांक्षितयश्चश्रून्यात्	कपिल २३९
तत्कारणं हि गायत्री	कण्व २०३
तत्कार्यत्र्यौ दुर्बोधम्	कपिल ५२२
तत्कार्यमखिलं कुर्यात्तेन	लोहि ४२९
तत्काल कृतमूल्ये	वृ हा ४.२३६
तत्काल कृतमूल्यो	या २.६४
तत्कालंभक्षणावृत्तिर्न	आंपू २९६
तत्कालसम्भवं पुष्प	वृ हा ४.५८
तत्कालाजीर्णराहित्ये	आंपू २८९
तत्काष्ठपत्रकुसुमशलाटु	आंपू ५४९
तत्किंचिद्द्विगुणीभूयात्	आंपू ८०४
तत्कुलं वैष्णवै तस्य	व २.६.४२६
तत्कुलं सत्कुलैस्साम्यं	कपिल ११७
तत्कृता दुष्क्रियासर्वा	लोहि ६०५
तत्कृतेन तु पाकेन यो मोहाज्	कपिल ५४०
तत्कृत्वा तूक्तदिवसै	वृ परा ८.५५
तत्कृत्वा स्वगृहं	वृ परा ५.१८३
तत्कोष्ठपूरणे यावत्ताव	लोहि ८६३
तत्कौपीनमिति प्रोक्तं	भार १५.११५
तत्क्रमं च प्रवक्ष्यामि	कण्व ७८१
तत्क्रमाच्चापि वक्ष्यामि	कण्व ६८८
तत्क्रान्ति युग्मश्राद्धा	आंपू ६५५
तत्क्रियाकरणे तत्तु न	आंपू २३
तत्क्रियामथ कुर्वीत	आंपू २४
तत्क्रिया मन्त्रपूर्वैव	आंपू ४८०
तत्छुभ्रं ज्योतिषां	बृ. या. ५.७
तत् तत्कर्मणि तन्मंत्र	वृ हा ७.७३
तत्तत्कर्मानुरूपेणं चा	भार १८.५५
तत्तत्कलशपात्रेषु गंध	भार ७.७४
तत्तत्कार्यानुगुण्येन व्याहृतीनां	कपिल ९९१
तत्तत्कालानुगुण्येन	नारा २.३
तत् तत्काले तु तन्मूर्ते	वृ हा ५.३०८
तत्तत्कालेषु विधिवच्छ्राद्ध	आंपू १०९
तत्तत्कालेषु संप्राप्त	लोहि १२९
तत्तत्कालोचितं विष्णों	वृ हा ७.३१४
तत तत्कालोचित्त सर्व	वृहा ५.५६७
तत्तत्कुलप्रसूतानां बिना	लोहि ४७८
तत्त्रिपादं प्रयोक्तव्य	विश्वा ५.१७
तत्तत्समो दुर्बलोऽयं	कपिल ४७८
तत्तत्स्ववृत्तिषु परं कर्तारो	कपिल ४६७
तत्तद्व्यैर्होतव्य मित्य	व २.७.७८
तत्तद्वेदी जपेदभक्त्या	कण्व २५८
तत्तनाम शिशोस्त्रिस्त्रि	आश्व ६.७
तत् तन् मंत्रान् जपेद्दिक्षु	वृ हा ६.५४
तत् तन्मूर्तिपृथक ध्यात्वा	वृ हा ७.१०८
तत्तन्मूलं विनामन्त्रं	विश्वा ३.५८
तत् तत् पात्रेषु सलिलं	वृ हा ८.१७
तत्तत्फलप्रसिद्ध्यर्थं	भार १९.१७
तत् तत्प्रकाशकैः मंत्रै	वृ हा ६.४२९
तत्तादृशं कर्म तस्माद्	कण्व ३०२
तत्तालुनि निविष्टं	बृ.या. ४.२३
तत्तु प्रयत्नसाध्यं	कण्व १६६
तत्तुरीय्याख्यमादेशकाले	कपिल १५१
तत्तु वित्तमहं मन्ये	दक्ष २.३५
तत्तोयपीतजीर्णागः	वृ परा ८.२१६
तत् तोयं सर्वदानानाम्	वृ .गौ. ६.१४

तत्वं तस्यास्तु विज्ञायं आंपू २१४
तत्त्वस्मृतेरुपस्थानात् या ३.१६०
तत्त्वानि नत्र वै देवे बृह ९.१७६
तत्त्वावमानी मुनिभिः वृ हा ७.२२२
तत्पञ्चमेऽथ दिवसे आंपू ९१
तत्पत्न्यपि तकीत्पाला कपिल २१७
तत्पत्राणि पवित्राणि आंपू ५६०
तत् पथं ते सुखं यान्ति वृ.गौ. ५.११७
तत्पदं च पदातीतं वृ परा १२.२९२
तत्पदं विदितं येन स वृ परा ६.९४
तत्पदं समवाप्नोति वृ हा ३.३६८
तत्पद्मस्यवहिदेव्या भार ११.१४
तत्परं देवताभ्यस्तु विश्वा ८.५५
तत्परं निष्फलं ज्ञानं वृ परा १२.२४४
तत्परं प्रातरेव स्यादि आंपू १७८
तत्पश्चाद्या कुलीना वा आंपू ४४८
तत्पाणिष्वक्षतान् दत्वा आश्व २३.८८
तत्पात्रक्षालनं कृत्वा वृ हा ४.७७
तत्पादतीर्थसेवा च व २. ३१
तत्पादं संवत्सरं कण्व २४
तत्पाद वन्दनंचैव वृ हा ५.७८
तत्पापस्य विशुद्ध्यर्थं नारा १.२४
तत्पित्रोरेव पत्न्याश्चत् कपिल १३३
तत्त पुण्यफलम् आदाय वृ.गौ. ६.३९
तत्पुण्यफलमाप्नोति वृ .गौ. ६.१६३
तत्पुण्यफलमाप्नोति वृ.गौ. ७.६३
तत्पुण्यफलमाप्नोति वृ.गौ. ७.७१
तत्पुण्यफलमाप्नोति बृ.गौ. १७.१४
तत्पुण्यफलमासाद्य बृ.गौ. १७.३८
तत्पुण्यफलमासाद्य बृ.गौ. १७.४३
तत्पुण्यफलमासाद्य बृ.गौ. १७.५७
तत्पुण्यफलमासाद्य वृ.गौ. ७.१२
तत् पुण्यम् अखिलं प्राप्यं वृ .गौ. ६.३६
तत् पुण्यफलम् आप्नोति वृ.गौ. ६.३४
तत्पुण्यं समनुप्राप्त वृ.गौ. ६.१४८
तत्पुण्यं समनुप्राप्तो वृ.गौ. ६.१६६
तत्पुत्रपौत्रपर्यन्तं तस्य कपिल ३५९
तत्पुनर्द्वादशाविधं नारद २.४६
तत्पुनास्त्रिविधं ज्ञेयं शुक्ल नारद २.४०
तत् पुनस्त्रिविधं ज्ञेयं नारद १५.२
तत्पूर्वसंध्या ब्राह्मी भार ६.६
तत्पैतृकमहासङ्गसौख्य आंपू ६६४
तत् प्रकृति स स्वातं वृ परा ४.७१
ततत्प्रक्षालनतोयेन व २.३.५४
तत्प्रतिष्ठत स्मृतो धर्मो नारद १.७०
ततः प्रभातसमये वृ हा ५.४९२
ततः प्रभृति यो मोहात् मनु ९.६८
तत्प्रवक्ष्यस्तु संदिग्धं ब्र.या. ११.६
तत्प्रसूतिप्रजननयोग्यता कपिल ६०२
तत्प्रसूतिप्रजननयोग्यता कपिल ६०३
तत्प्राचीमध्यमं प्रोक्तं भार २.७२
तत्प्राज्ञेन विनीतेन मनु ९.४१
तत्प्रर्थितप्रदानस्य लोहि २०४
तत्प्राश्चोयेद्विधानेन तेनासौ कपिल ३२७
तत्प्रेष्यत्वेन कुर्वीत आंपू १३४
तत्फलं लभते मर्त्यो वृ हा ५.५३४
तत् भात्साण्डाभ्यां व १.२.३७
तत्र अम्बष्ठोग्रसंयोगे बौधा १.९.१०
तत्र एव पतिताः पापाः वृ .गौ. ५.५२
तत्र काम्यं तु कर्तव्यं शंख ८.८
तत्र च सूर्याभ्यूदित व १.२०.४
तत्रचामरवादित्र भृंगारे वृ हा ६.५२
तत्र चेत् ब्राह्ममेधाद्या कपिल ६६३
तत्र चैतासु या क्रूराः आंपू ५८५
तत्र च्युतश्चतुर्वेदी बृ.गौ.१७.२४
तत्र जागरणं कुर्याद् वृ हा ५.१३३
तत्र जाम्बूनदमये विमाने वृ.गौ.७.१२६
तत्र तत् परमं धाम बृह ९.९९
तत्र तत्र च गच्छामः कपिल ८६५
तत्र तत्र च निष्णातान् या १.३२२

तदा तदा भूषणाध्यां लोहि ६७३
तदा ताभिर्विशेषेण धनै कपिल ५४५
तदा तु तद्धनं सर्वं आंपू ३११
तदा तु पनसः किंचित आंपू ५३२
तदात्मा तन्मनः शांत ल व्यास २.४४
तदादि वर्षसंचारी वृ हा १.२५
तदा द्विजैस्तु द्रष्टव्य वृ परा ८.२७१
तदा निर्विषयो वायु वृ परा १२.२२३
तदानुक्रमशस्त्वेक कण्व ७८०
तदा पुनस्तत्संपाद्य आंपू ७२
तदापोघ्नन्तु दौर्भाग्यं वृ परा ११.२१
तदाभ्युदयकं सद्यः कर्त्तव्यत्वे कपिल ३०२
तदावरण रूपेण यजेद् वृ हा ८.२७०
तदाविनाख्य पशुना कण्व ४३४
तदाविशन्ति भूतानि मनु १.१८
तदाशौचनिवृत्तेषु औ ६.५०
तदा संवत्सरं दृष्ट्वा आंपू ५२
तदा सकृत्सन्निपाते आंपू ६८
तदा सा शुद्ध्यते नारी अत्रिस १९५
तदाऽसौ तु कुटुम्बानां देवल १४
तदासौ वेदवित् प्रोक्तो अत्रिस १४२
तदाऽस्य मध्यगं बृह ९.११५
तदास्यान्मङ्गलस्नानं कण्व ६४४
तदाहि तत्सम्यगेव कण्व ४१
तदाहुतिद्वयं कुर्यान् कण्व ५४७
तदाहुः ब्रह्मवादिन व १.५.१२
तदिति द्वितीयेकवचनं भार १०.५
तदिष्णोरिति मन्त्रेण बृ.या. ७.३५
तदीयं तत्क्रियार्हं च तवै शाण्डि ५.६०
तदीयमार्गभाग्यो वै कण्व ४०८
तदीयसर्वश्राद्धानि गया लोहि ३०९
तदीनायानां पूजनञ्च वृ हा ८.३०५
तदीयानामर्चनञ्च वृ हा ५.७९
तदीयां स्तर्पयेशनि व २.६.५६
तदीयार्चनपर्यन्तं व २.७.१९
तदुक्तावधिकारोऽ : सम्यक् कपिल ८९४
तदुक्तिलंघनकरा ..ह्म कण्व ७४०
तदुत्तरक्रमाणां चेदनुष्ठानस्य कपिल ९८६
तदुत्थानं ततः कुर्याति ब्र.या. ४.१३५
तदुत्पत्या क्षणान्मर्त्योमुच्यते कपिल ६७१
तदुत्सर्गः प्रकर्तव्यो वृ परा ११.२०९
तदुन्मुखास्तत्सहायान् कण्व ७८३
तदूर्ध्वं चेत्समुद्भूतः लोहि १५७
तदूर्ध्वेग्न्यकर्मसो मा नां भार ११.४०
तदृष्ट्वा पापवर्माणमादित्यं वृ.गौ. १६.२२
तदेतदन्यत्र निर्देशात् बौधा १.६.३०
तदेतेन वेदितव्यं बौधा २.१.६९
तदेनं संशयारूढं नारद १९.११
तदेनं संशयारूढं नारद १९.३१
तदेव निरयं प्रोक्तं वृ हा ३.१११
तदेव बन्धनं विद्यात् पराशर ९.८
तदेव बीजं शक्ति वृ हा ३.३६४
तदेवं गतिभिः ब्रह्मध्यानं वृ परा १२.३१०
तदेवं सप्तपूर्णख्यं आंपू ६७६
तदेव जुहुयाद् वह्नौ वृ हा ५.६९
तदेव भुक्त्वा सायाह्ने नारा ९.१०
तदेव विष्णुः कृष्णेति वृ हा ३.२१२
तदेव सौमिकं तीर्थं और २.१८
तदेव हि भया राजन् वृ हा ८.३४३
तदेवाग्नि स्तदायु वृ हा ३.६२
तदेषाऽभिवदित बौधा १.६.३
तदैवं हृदि सन्धाय वृ परा १२.६७
तदौपासनहोमः स्यात् आंपू ८२
तद् आचार्यपदं तत्र जायते आश्व १०.४१
तद्गङ्गास्नानतुलितं कण्व १६७
तद्गृहन्तु परित्यक्त्वा वृ हा ६.७०
तद्गृहक्षेत्रमनसां आंपू ९२
तद्गृहे मरणानि कण्व ६०४
तद्गोत्रद्वययुक्त्यर्थं आंपू ३४४
तद्गोत्रशर्मभिस्तातपितामह कपिल ९०

तं तस्य पितरः सर्वे	आंपू ५५२	तमोनिविषृचित्तेन	वृ गौ.३.३३
तं त्यजेच्छक्तिमान्सोऽय	नारा ३.५	तमो ऽयं तु समाश्रित्य	मनु १.५५
तं दण्डयेद् वर्ष शतं	वृ हा ४.२१४	तया चेत्तेषु कृत्येषु	आंपू २१९
तं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्ष	विष्णु १.४४	तयाधर्मार्थकामानां	दक्ष ४.२
तं देशकालौ शक्तिं च	मनु ७.१६	तया न कुर्यात्पाकंचे	कपिल १९८
तं पूजयित वा अन्नेन	वृ.गौ. ६.४७	तया वा तेन वोक्ते वाडभ्य	लोहि ५०२
तं पृच्छन्ति महात्मान	बृ.या. १.४	तयैवाक्षनृजानित्या	भार ७.११६
तं प्रतीतं स्वधर्मेण	मनु ३.३	तयैवाभ्यच्चर्यगोविन्दं	वृ हा ५.१०५
तं प्रत्वैवेति सूक्तेन	वृ हा ८.५	तयोः प्रत्युपकारोऽपि	औ १.३७
तं भोजयित्वोपासीता	व १.११.१३	तयोरनियतं प्रोक्तं वरणं	नारद १३.३
तं मयूस्वकायायां	भार ६.३	तयोरन्नमदत्वा च भुक्त्वा	अत्रि ५.५
तं यस्तु द्वेष्टि संमोहात्स	मनु ७.१२	तयोरपि च कुर्वीत	विश्वा १.५८
तं योगं सुसमीक्ष्येत	आंपू १८४	तयोरपि पिता श्रेयान्	नारद २.३३
तं राज्ञा चानुशिष्यात्	व १.१.४२	तयोरप्युभयो रन्नं	वृ .गौ. ११.२०
तं राजा प्रणयन्सम्यक्	मनु ७.२७	तयोरलाभे राजाहरेत	व १.१७.७४
तं वनस्थमनाख्याय	वृ हा ४.२३७	तयोरेकान्तरं ज्येष्ठं	ब्र.या. ८.१८१
तं श्रुत्वा वा अथवा दृष्ट्वा	वृ.गौ. ३.८३	तयोरेवाधिकारोऽयं	आंपू ३०४
तं सङ्गृह्य विधानेन	लोहि २०६	तयोरेवाधिकरोऽयं	कपिल ३८२
तं स्वीकुर्वन्ति विद्वांसः	वृ हा १.१६	तयोर्दासो मकारेण	वृ हा ७.३८
तं हि स्वयम्भू स्वादास्यात्	मनु १.९४	तयोर्नित्यं प्रियं कुर्याद्	मनु २.२२८
तमग्रयं ब्राह्मणं मन्ये	वाधू १९४	तयोर्मध्ये अमा ह्येषा	बृह ९.१८
तमजानन्नपि तदा शास्त्र	लोहि ३११	तयोर्विद्द्वयं मध्ये	भार २.२५
तमाभि प्रगायतेति	वृ हा ६.३८	तयोस्तदेव पावनम्	बौधा १.२.४२
तमसः परंगतस्या	व २. ६.२२२	तयोस्तु देवताषिदि	वृ परा ३.६
तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः	मनु १.४९	तयोः स्वरीति जीवस्तु	वृ हा ३.८८
तमसा मूढचित्तस्तु जायते	नारा ५.२२	तरक्षु–गोमायु–मृगारि	वृ परा ११.८७
तमसो लक्षणं कामो	मनु १२.३८	तरत् समन्दीधावति	वृ परा २.१३९
तमात्मरूपं परमव्यंय	वृ परा १२.३७१	तरत्समाः शुद्धवत्यः	बृ.या. ७.२४
तमुत्तायणे कर्यादुत्तरा	आंपू ६५४	तरन्ते मानवाः देवाः	वृगौ ५.३
तमुद्दिश्यदिवारात्र प्रलपन्	लोहि २१०	तरुणादित्य संकाश	वृ हा ३.२५८
तमुपनयेत्तषष्ठं	बौधा १.८.१४	तरुणां स्थापने गोप कृष्णं	वृ हा ६.४३१
तमेव पूजयेद् रामं	वृ हा ३.२७३	तरुणारूप संपन्ना	ब्र.या. ११.१९
तमेव प्रतिगृह्णानो नरके	अ ४६	तरुणी सुकुमारांगी	वृ हा ३.२५
तमेवं विद्वांसमेवं	बौधा १.२.५५	तरुणौ सुविषाणौ च	वृ परा १०.२९
तमेव मनसा ध्यायेद्	वृ हा १.२३	तरुणादित्यवर्णानि	बृ.गौ. १२.४८

तस्माद्वृषलभीतेन	पराशर १२.३०
तस्माद् ब्रह्मचारी या	बौधा १.२.५१
तस्माद् भागवत श्रेष्ठ	वृ हा ६.१४२
तस्माद्भगवतैर्भुक्तैः	बृ.गौ. १८.१७
तस्माद्यत्नेन कर्त्तव्य	भार १५.४
तस्माद्यत्नेन महता	आंपू ८२८
तस्माद्यत्नेन योगीन्द्र	औ ४.१२
तस्माद्यम इव स्वामी	मनु ८.१७३
तस्माद् रजस्वलान्नं	व १.५.१०
तस्माद् रागान्वितं	वृ हा २.७०
तस्मात् राजा ब्राह्मणस्वं	बौधा १.५.१२२
तस्माद्रिक्थं भूमिरूपं ज्ञातेय	कपिल ५१७
तस्माद्वामत एवात्र	वृ परा ७.८९
तस्माद्विद्वान्नाद्याद्	वृ परा ६.२२६
तस्माद् विद्वान् विभियाद्	मनु ४.१९१
तस्माद्विद्वान् सूत्रवेद	आंपू ८४८
तस्माद्विना कमण्डलुना	बौधा १.४.२५
तस्माद्विनिर्गतः पश्चात	अ १३६
तस्माद् विवर्जयेत	परा १२.२८३
तस्माद् विवाहयेत्	संवर्त ६८
तस्माद् वेदव्रतानीह	ल हा ३.४
तस्माद् वेदस्य विष्णोश्च	वृ हा ८.१७८
तस्माद्वेदाहते नान्य	बृह १२.२१
तस्माद् वेदान्विधानेन	कण्व १८३
तस्माद्वेदेन शास्त्रेण	अत्रिस ३५१
तस्माद् व्याहृतयो	वृ हा ३.८६
तस्माद् व्रतोपवासाद्य	नारा ५.२.६
तस्मान्नं गोत्रिणं विप्रं	वृ परा ७.११५
तस्मान्न प्रतिगृह्णीयात्	अ ५१
तस्मान्न ब्राह्मणसमं	कपिल ८७८
तस्मान्न लंघयेत्	व्या २१९
तस्मान्न लंघयेत्	ल हा ४.१६
तस्मान्नारायण इति	वृ हा ३.१०८
तस्मान्नारायणं देवं	ल व्यास २.१६
तस्मान्नाभिसमं दद्यात्	भार १५.९३
तस्मान्मानस्तु चान्द्रोऽयं	कण्व ३३
तस्मिन् कुम्भे लिखेद्	वृ परा १०.९३
तस्मिन्कौशेयवसने	व २.७.५८
तस्मिन्ताताहिता ये वा पितरः	कपिल २२४
तस्मिन् तिष्ठति बाढं	लोहि ८९
तस्मिन् देवमर्चयेद	व २.६.३८
तस्मिन् देव्या समासीनं	वृ हा ३.३०६
तस्मिन् देशे येधर्मा	व १.१.८
तस्मिन् देशे य आचारः	मनु २.१८
तस्मिन्नग्नौ तु जुहुयाद्	व २.४.१२७
तस्मिन्नण्डे स भगवानुषित्वा	मनु १.१२
तस्मिन्न तिष्ठते पापं	शंखं १२.२७
तस्मिन्नतीते वर्षः	कण्व ३६०
तस्मिन् नवम्यां शुक्ले	वृ हा ५.४३२
तस्मिन्नादौ शुभदिने	वृ हा ६.७
तस्मिन्नास्तीर्य पर्यङ्कं	व २.६.३७
तस्मिन्नुत्सरिते पापे	आंउ ३.६
तस्मिन् निमंत्रितः श्राद्धे	औ ५.१२
तस्मिन्निविशते जीव	नारा ५.१३
तस्मिन् निवेश्य तं	वृ हा ६.९९
तस्मिन् निवेश्य देवेशं	वृ हा ६.२७
तस्मिन्नुपोष्य मध्याह्ने	वृ हा ५.४३३
तस्मिन्नृषिसभामध्ये	वृ परा १.९
तस्मिन्नृषिसभामध्ये	पराशर १.८
तस्मिन्नेव नयेत्	ल हा ३.१२
तस्मिन्नेव प्रधानाग्नौ	लोहि १३१
तस्मिन्नैव यजन्नित्यं	वृ हा ५.११
तस्मिन्नेवानले सर्वं	लोहि १५५
तस्मिन्नेवौपासनेऽन्य	लोहि १२२
तस्मिन् पञ्च महायज्ञा	बृ.गौ. १५.२०
तस्मिन् प्रतिष्ठितं	वृ हा ९.११२
तस्मिन् बालार्क संकारो	वृ हा ३.२५३
तस्मिन् मनोरमे पीठे	वृ हा ७.३२९
तस्मिन्मन्त्रे समीचीन	कण्व २१७
तस्मिन्मूर्वा हरिंवन्दे	व २.७.६६

तिलवत्सर्ववस्तूनि	वृ परा ६.२५७
तिलविक्रयणे चान्द्र	नारा १.२०
तिलहोमं प्रकुर्वीत	देवल ६९
तिलहोमायुतं कृत्वा	वृ हा ३.२३१
तिला अपि समा देया	वृ परा ६.२५६
तिलानां तु तदर्धंस्यात्	वाधू १४५
तिलानां धान्यवस्त्राणां	शंख १७.१६
तिलानचावाकिरेत्तत्र	औ ५.१८
तिलानद्यत्तिलान्	बृ.गौ. १३.२९
तिलान् कृष्णाजिने कृत्वा	अत्रि ३.२३
तिलान् न्दर्भाश्च नित्यार्थ	वृ परा १०.२२४
तिलान्वाथ घृतं वाऽपि	बृ.गौ. १७.५१
तिला पवित्रा पापघ्ना	बृ.गौ. १३.२८
तिला बहुविधाश्चोप्या	वृ परा ५.१३८
तिलां त्रयाल्दूवी	व २.७.६५
तिला रसा न विक्रेया	पराशर २.८
तिलार्चनं तिलमुखं	आंपू १०९९
तिलास्तु देवतारूपा	बृ.गौ. १३.३०
तिलास्पृताक्तान्जुहुया	भार ९.३४
तिलेन वै भवान्ते	वृ हा ५.४७५
तिलैः प्रच्छादितां दद्यात्	वृ.गौ. १०.९
तिलैरूथ्याप्यते मूर्द्धा	ब्र.या. ३.४७
तिलैर्दर्भैर्निधायाथ	व २.६.३२८
तिलैर्वा कुसुमै वाऽपि	वृ हा ४.१३५
तिलैर्व्रीहियवैमाषैरद्भि	मनु ३.२६७
तिलैश्च जुहुयात्	वृ हा ६.१०६
तिलैश्च जुहुयाद् वह्नौ	वृ हा ५.५५३
तिलैश्च पंचगव्यैश्च	वृ हा ६.८७
तिलैश्च व्रीहिभि	व २.६.४०७
तिलैः स्नात्वा विधानेन	वृ हा ५.३५४
तिलोऽसि तारापति	वृ परा ७.१९८
तिलोदकं करेदत्वा	वृ परा ७.३१८
तिलोदकै पितृन्सम्यक्त	व २.६.१४२
तिलो ऽसिपितृदैव	ब्र.या.४.७५
तिलौदनं च नैवेद्य	ब्र.या.१०.१४७
तिष्ठगे विवशोदीनो	व २.५.७२
तिष्ठत्युरसि तस्यास्तु	वृ.गौ. १०.५१
तिष्ठन तदेक्षमाणोऽर्क	व व्यास २.२९
तिष्ठंनचेद्वीक्ष्यमाणोऽर्कं	बृ.या. ७.१३५
तिष्ठन्ति किल तत्पूजा	आं पू ८६८
तिष्ठन्तीभिश्च तिष्ठेत	वृ परा ८.१२८
तिष्ठन्तीष्वनुतिष्ठेस्तु	मनु ११.११२
तिष्ठन्तोऽपि च ते	वृ परा २.१५०
तिष्ठन्त्येकत्र मंत्रास्तु	वृ परा ५.३१
तिष्ठन्धावन्प्रजल्पन्	कण्व १४८
तिष्ठन्नग्नेरूपस्थानं	आश्व २.७५
तिष्ठन्नमन् स्वपन्	भार ४.१०
तिष्ठन्नासीनः प्रह्वो	कात्या १.१०
तिष्ठन् पश्चात् प्राङ्मुखो	आश्व ४.१२
तिष्ठन् पिंडान्तिके	वृ परा ७.२७५
तिष्ठन् पूर्वा जपं	संवर्त ९
तिष्ठन्प्रक्षालयेत्पादौ	व्या १०२
तिष्ठन्मनो न कुर्वीत	ब्र.या. ८.१३७
तिष्ठन् स्थित्वा तु	व्यास ३.९
तिष्ठन् व्रजंस्तथा ऽऽसीनः	वृ परा ४.१४६
तिष्ठेतं प्रत्यङ् मुखी	आस्व १५.२३
तिष्ठेदुदयनात् पूर्वा	कात्या ११.१४
तिष्ठेद्यश्च शिलोंच्छायां	वृ परा १२.१५७
तिष्ठेन् मासं पयोऽशित्वा	वृ परा ८.११६
तिष्ठेन्नाव्रतिकस्तत्र	वृ परा १२.१०५
तिष्यः पुनर्वसूचेतितारा:	भार १५.४८
तिसृणामपि चैतासामन्वहं	कपिल ६३८
तिसृभिर्भूः प्रभृतिभिः	आश्व १.४६
तिस्रः कोट्यर्द्धकोटी च	पराशर ४.२७
तिस्र कोटयर्द्ध कोटी	वृ हा ८.२९२
तिस्रः कोट्योर्ध	व २.५.६८
तिस्रश्चैता पौर्णमास्यो	वृ परा १०.३५४
तिस्रः सार्धास्तथा मात्राः	बृ. या. २.१३३
तिस्रः सार्धास्तु कर्तव्या	बृ.या. २.६
तिस्रस्तु पादयोर्ज्ञेयाः	शंख १६.२३

त्रिरात्रं च व्रतं कुर्यात्	शंख १७.५१
त्रिरात्रं तु व्रतं कुर्यात्	शंख १७.४९
त्रिरात्रं दशरात्र वा सम्वत्	व २.४.७०
त्रिरात्रफलदा नद्यो माः	बृ.या. ७.११९
त्रिरात्रं उत्सवं तत्र	वृहा ५.१५२
त्रिरात्रं उपवासः स्यात्	आप ७.६
त्रिरात्रं दक्षिणि चाहद्दिनं	कपिल ११०
त्रिरात्रं दशरात्र	औ ६.१०
त्रिरात्रं दशरात्र	या ३.१८
त्रिरात्रं रजस्वला	व १.५.७
त्रिरात्रं स्वश्रुमरणे	औ ६.३३
त्रिरात्रं सतिलाहारः	वृ परा १०.६६
त्रिरात्रं स्यात्तथाचार्यो	औ ६.३१
त्रिरात्रंमथ षड्रात्र	शंख १५.१८
त्रिरात्रमाचरेच्छूद्रो दानं	अत्रिस १७६
त्रिरात्रमाशुद्धि प्रोक्ता	व २.६.४३९
त्रिरात्र माहुराशौचमाचार्ये	मनु ५.८०
त्रिरात्रमुपवासी स्यात्	पराशर ११.१२
त्रिरात्रव्रतवन्ध्यं	ब्र.या. १२.१६
त्रिरात्रेण विशुद्धि स्याद्	अत्रिस २२७
त्रिरात्रेण विशुद्ध्येत	औ ९.६०
त्रिरात्रे तु ततः पूर्णे	बृ.गौ. १४.२२
त्रिरात्रे तु ततः पूर्णे	वृ परा ८.२८७
त्रिरात्रे तु ततः पूर्णे	पराशर ३.५२
त्रिरात्रोपोषितो जप्त्वा	या ३.३०१
त्रिरात्रोपोषितो भूत्वा	या ३.३०३
त्रिरात्रोपोषितो वैश्यः	वृ परा ८.२९७
त्रिराप्लुत्य समाचम्य	आश्व १.१७
त्रिरावर्त्य ततः पश्चाद्	बृ.या. ४.३१
त्रिरुद्वेष्ट्याथ नेत्रेण	कात्या ८.४
त्रिर्वित्त पूर्णपृथिवी	या १.४८
त्रिलोकनाथ भो कृष्ण	वृ.गौ. ४.३३
त्रिवारं क्षालये पश्चात्	व २.५.४८
त्रिवारं चैव सावित्री	आश्व १२.१३
त्रिवारं वैष्णवैर्मन्त्रैः	वृ हा ७.३०८
त्रिरारंशोधयित्वाथ	व २.५.४२
त्रिरारमष्टवारं वा निमज्	वाधू ८७
त्रिवारमेवं कृत्वा तु	आश्व १५.२५
त्रिवासरं प्रकुर्वीत	वृ हा ७.२७३
त्रिविक्रमो रक्तवर्णः	वृ हा २.८५
त्रिविक्रमोऽग्नि संकाशो	वृ हा ७.११०
त्रिविक्रमन्तु वामांसे	वृ हा २.७७
त्रिविधं क्षत्रियस्यापि	नारद २.४९
त्रिविधं केचिदिच्छन्ति	बृ.या. ८.७
त्रिविधं पापशुद्ध्यर्थं	बृ.या. ४.५१
त्रिविधं प्राणसंरोधं	वृ परा १२.२४५
त्रिविधः साहसेष्वेवं	नारद १८.९०
त्रिविधस्यास्य दृष्टस्य	नारद २.६७
त्रिविधा त्रिविधैषा	मनु १२.४१
त्रिविधान्नं त्रिधा	बृह ९.१३७
त्रिविधो जपयज्ञः स्यात्तस्य	ल हा ४.४०
त्रिवृच्च ग्रंथिनैकेन	वृ हा ५.४४
त्रि वृत्ताग्रन्थि संयुक्तं	व २.३.४६
त्रिवृत्सोम इति प्रश्नः	कण्व ५२४
त्रिवृद्ग्रन्थिरितिप्रोक्ता	भार १५.११२
त्रिवृदूर्ध्ववृतं कार्यं	कात्या १.२
त्रिवृद्ब्रह्मणि निष्णातः	बृ.या. ४.७९
त्रिवेदमन्त्रसंयोगादग्नि	बृ.गौ. १५.४६
त्रिशंकुं वर्जयेद्देशं	देवल ४
त्रिशत्कर्कटके नाड्यो	आंपू ६४६
त्रि–षट्–दश–दशद्वाभ्यां	वृ परा ८.४
त्रिषण्णवैकधाऽऽवर्त्य	वृ परा २.१४२
त्रिषवणमुदमुपस्पृशेत्	व १.९.६
त्रिषु पञ्चसु षट्ष्वेवं	लोहि २६४
त्रिषुवर्णेषु सादृश्य	बौधा १.८.१६
त्रिषु स्थानेषु सा	व्या ८७
त्रिष्टुप् च जगती चैव	बृ.या. ३.१४
त्रिष्टुप् च जगती चैव	भार १९.१३
त्रिष्टुप् च जगती चैव	वृ हा ७.५३
त्रिष्टुप् च जगती चैव	वृ परा २.६५

द

दानमध्ययनं यज्ञः	नारद १८.४७
दानमन्यच्च यद्दत्त	ब्र.या. १२.१२
दानमानादिना नित्यं तेनात्य	लोहि २३७
दानं अध्ययनं चैव	शंख १.३
दानं अध्ययनं वार्ता यजनं	अत्रिस १५
दानं कुर्यात्तदग्नस्य नो	कपिल २१२
दानं कृत्वा कथं कृष्ण	वृ.गौ. ६.३
दानं दम स्तपः शौच	वृ हा ८.३३७
दानं दातव्यम् इति एव	वृ.गौ. ३.३७
दानं पितृणामत्यन्तकलि	कपिल ९३६
दानं प्रतिग्रहो होमः	दक्ष ६.१२
दानं प्रतिग्रहो होमः	दा ५९
दानं प्रतिग्रहो होम	शंख १५.२५
दानं यत्ते प्रियं किञ्चित	वृ.गौ. १०.८४
दानं मत्सफलं नैव	वृ.गौ. ७.१३१
दानशिष्टप्रतिग्राहौ	आश्व १.४
दानस्य यत्फलं नृणां	वृ हा ३.५२
दानादियोग्यतालव्धभूमिः	कपिल ६४६
दानादिव्यपदेशेन स्ववश	कपिल ५८३
दानाद्दशानुगृह्णाति	वृ.गौ. ६.१२४
दानाधिकारी ब्राह्मण लक्षण	विष्णु ९३
दानाध्ययनदेवार्चाज	आंपू १०२३
दानानान्तु फलञ्चान्यत्	वृ.गौ. ११.२४
दानानामुपदेशञ्च	वृ.गौ. १०.१०४
दानानि च प्रदेयानि	ल हा ४.७४
दानानि विधिना सार्धं	वृ परा १०.१
दानानि सर्वाण्यामिधाय	वृ परा १०.३८५
दानान्यथैतानि मया	वृ परा १०.२७८
दानान्येतानि देयानि	संवर्त ९१
दाने तु तादृशेधारे ह्यशक्ये	लोहि ४८६
दानेन तपसा चैव सत्येन	वृ .गौ. १०.९९
दानेन प्राप्यते स्वर्गो	वृ परा १०.२
दानेन यस्य कस्यापि यथा	कपिल ४५१
दानेन वधनिर्णेकं	मनु ११.१४०
दाने विवाहे यज्ञे च	या ३.२९
दानेन सर्वकामान	व १.२९.१
दानैश्च विविधैः सम्यक्	संवर्त ८९
दानैर्होयैर्जर्नित्यं	संवर्त २००
दानोद्वाहोष्टि–संग्रामे	वृ परा ८.१०
दानोथवा महोमाद्यं	व २.६.२६१
दान्तस्त्रिषवणस्नायी	या ३.४८
दापनीयस्त्वसौ सम्यक्	कपिल ८६४
दाप्यः पर्णमेकोऽपि	नारद २.१२
दाप्यपिण्डां स्ततस्तत्र	औ ५.४८
दाप्यश्शतपणान्सद्यः तत्सत्यं	लोहि ६१९
दाप्यस्तु दशमं भागं	या २.१९७
दामोदरं ब्रह्मरन्ध्रे नाम	विश्वा २.१५
दाम्भिको बकवृत्तिश्च	ब्र.या. ४.१५
दाम्यन्स सर्वदाऽऽत्मानं	वृ परा ६.२५३
दायादेऽस्ति बन्धुभ्यो	नारद ४.१५
दायाद्यकाले वा दद्यात्	वृ परा ६.४०
दार वाणां तक्षणम्	बौधा १.५.३७
दाराग्निहोत्रसंयोगं	दा १५७
दाराग्निहोत्रसंयोगं	पराशर ४.२०
दाराग्निहोत्रसंयोगं	मनु ३.१७१
दाराधिगमनं चैव	मनु १.११२
दाराधिगमनाधाने यः	कात्या ६.२
दारिद्र्यनाशिनी देया	आंपू ९२५
दारुणा घातने कृच्छ्रं	यम ६९
दारुणां सत्त्यजेद्वाऽपि	वृ हा ८.१०५
दारुवदस्थ्नाम्	बौधा १.५.४७
दारु (क्षीर) हारीच पुरुषः	शाता ४.२१
दावाग्निदवग्धानां	शंखलि २७
दावाग्निदायकश्चैव	शाता ३.१३
दासनापितगोपाल	पराशर ११.२०
दास नापित गोपाल	वृ परा ८.३२५
दासनापितगोपालकुल	बृ.य. ३.१०
दासनापितगोपालकुल	यम २०
दासनैकृतिकाश्रद्धवृद्ध	नारद २.१५७
दासमयाणां पात्राणां	बौधा १.६.२७

देव कृतस्यौषणां प्रजा	ब्र.या. २.१४४
देवगृहेरंगवल्ली करणं व्रत	कपिल ६२७
देवताः कथितास्साद्भिः	कपिल १४५
देवतातिथि भक्तश्च	दक्ष २.४९
देवतातिथिभृत्यानां	मनु ३.७२
देवतादि पितृयज्ञान्तं	आश्व १.१४०
देवतादीन्नमः कुर्यात्	ल व्यास २.५
देवतानां गुरोराज्ञः	मनु ४.१३०
देवतानां पितृणां च जले	लघुयम ९८
देवतानां पितृणां च	लघुशंख ८
देवतानां पितृणां च	लिखित ८
देवतानां विपर्यास	कात्या २५.१६
देवतान्तरशंका तु न	वृ हा ७.५९
देवताः पञ्चविन्यस्य	ब्र.या. १०.९५
देवता परमात्मास्या	भार ६.३५
देवतापितृभूतानां काचि	आंउ १२.१४
देवताप्रतिमां दृष्ट्वा	व्या ३६६
देवता प्राणशक्तिः स्याद्	विश्वा ६.२६
देवताब्रह्मविष्णुवीशाः	भार १८.७०
देवता ब्राह्मणाधीना	बृ.गौ. २२.२८
देवता भाववृत्तश्च	शंख ९.११
देवताभ्यस्तु तद्धुत्वा	मनु ६.१२
देवतायतने कृत्वा ततः	व १.११.२८
देवतायतनोद्यान	वृ पर ५.१२२
देवतायाश्च सायुज्यं	बृ.या. १.३३
देवतायै हवि स्थाप्य	आश्य २.४८
देवताराधनञ्चैव स्त्रीशूद्र	अत्रिस १३६
देवतार्चाकृतां नित्यं	वृ परा १२.२०८
देवतार्थ हवि शिग्रुं	या १. १७१
देवता विनियोगोपांपाने	भार ६.४५
देवता संख्या ग्राह्या	कात्या २६.३
देवतास्तत्र विन्यस्य	ब्र.या. १०.४४
देवतास्तर्पयित्वा	बौधा २.३.२
देवतास्वपि हूयन्ते	कात्या २५.१२
देवता हृदयं प्रोक्तं	कण्व २०७
देवता हृदि विन्यस्य	विश्वा ६.३६
देवतीर्थेन संगृह्य ब्रह्मा	विश्वा २.२२
देवतोत्तरसम्पर्कं विना	वृ हा ६.४०९
देवर्त्विक स्नातका	या १.१५२
देवत्वं अमरेशत्वं	वृ हा ३.३६२
देवत्वं सात्त्विका यांति	मनु १२.४०
देवदत्तांपतिर्भार्यां	मनु ९.९५
देवदानवगंधर्वा रक्षांसि	मनु ७.२३
देव देव नमस्तेऽस्तु	वृ.गौ. ८.१९
देवदेव! नमस्तेऽस्तु	वृ.गौ. ६.११०
देवदेवश कपिला सदा	वृ.गौ. १०.२
देव देवेश दैत्यघ्न	वृ.गौ.५.१
देव! देवेश! दैत्यघ्न!	वृ.गौ. ६.१
देव! देवेश! दैत्यघ्न	वृ.गौ. १०.६७
देवद्रव्य विनाशेन	व्यास ३४.३४
देवद्रोण्यां विवाहेषु	आप १०.१६
देवद्रोण्यां विवाहेषु	व १.१४.२२
देवद्रोण्यां विहारेषु	आप १.३०
देवद्रोण्यां वृषोत्सर्गे	आंगिरस २३
देवद्रोही श्रुतिद्रोही	आंपू ६०५
देव धर्मामृतमिदं	वृ.गौ. ७.२
देवनामान्यनन्तानि	आंपू १६३
देवपात्रादितश्चाऽऽज्यं	आश्व २३.५२
देवापितृकर्मविधानं	विष्णु ६६
देवपित्र्यतिथिभ्यश्च	पु १६
देवपूजां सर्वकाल	कण्व ७८६
देवपूजाविधिः प्रोक्त	वृ परा ४.१५४
देवब्रह्मपितृणां च जात्या	भार २.३७
देवब्राह्मणगोमांसं मातृमांसं	कपिल ९६७
देव ब्राह्मण पाषण्डि	वृ परा १२.६३
देव ब्राह्मणसान्निध्ये	मनु ८.८७
देवभूतपितृ ब्रह्म	कात्या १३.२
देवमानुषपित्र्येषु	भार १५.९४
देवमालापनयनम्	वृ. गौ. ६.५९
देवं अंशुमदं वह्नि	शंख ९.६

द्यूतं च जनवादं च	मनु २.१७९
द्यूतं समाह्वयं चैव	मनु ९.२२१
द्यूतं समाह्वयं चैव	मनु ९.२२४
द्योतयन् प्रथमं व्योम	वृ .गौ. ७.१०३
द्यौः पुमान्धरणी नारी	वृ परा ५.११३
द्यौर्नय इन्देति दद्यात्	वृ हा ८.४३
द्यौर्भूमिरापो हृदयं	मनु ८.८६
द्रवद्रव्याणि शुद्ध्यंति	वृ परा ६.३३८
द्रवाणां चैव सर्वेषां	मनु ५.११५
द्रव्यपाणिश्च शूद्रेण	आप ८.२१
द्रव्य ब्राह्मणसम्पत्तौ	औ ३.११७
द्रव्यमन्त्रे च मन्त्रेषु	शाण्डि १.८४
द्रव्यमन्नं जलं शाकं	कण्व ७८७
द्रव्यमात्रन्तु सर्वत्र	व २.६..५०७
द्रव्यस्य नाम गृह्णीयाद्	वृ परा १०.२८५
द्रव्यस्य भूमिमुख्यादेर	कपिल ५८२
द्रव्यस्य संपत्सु	प्रजा १८
द्रव्य हर्तृणां प्रायश्चित	विष्णु ५२
द्रव्याणाञ्च तथा शुद्धि	वृ परा १.५५
द्रव्याणामप्यलाभे तु	व २.६.९२
द्रव्याणामल्पसाराणां	मनु ११.१६५
द्रव्याणि धर्मकृत्येषु	लोहि ६९२
द्रव्याणि निक्षिपेत्	वृ हा ४.७१
द्रव्याणि हिंस्याद्यो	मनु ८.२८८
द्रव्याण्यमूनिपद्राहुः	भार १४.३०
द्रव्याण्यमूनिपात्रेषु	भार ११.८४
द्रव्याण्यन्यानि चादाय	वृ परा १०.३३३
द्रव्यान्तरयुतं तैलं न	वाधू ४१
द्रष्टारो व्यवहाराणां	या २.२०५
दंष्ट्राभिर्भक्षिता ये च ये	बृ.य. ४.३१
द्रहिणेन तदा प्रोक्तं	ब्र.या. १२.११
द्राक्षोत्थैश्चैव खर्जूरैः	वृ परा १०.७७
द्रुपदाघमर्षणं सूक्तं	वृ परा २.५६
द्रुपदा नाम सावित्री	बृ.या.७.१८१
द्रुपदां नाम गायत्रीं	आंपू २०१
द्रुपदां वा जपेद्देवीमजपां	वृ परा ४.५२
द्रुपदां वा तिजो जप्त्वा	वृ परा ८.२२०
द्रुमशाकं महाशाकं	व २.६.१७२
द्रुमेण राजदन्तिहृदती	शाता ६.१४
द्रुमैः नाना विधैरन्यैः	वृ परा १०.३७६
द्रोणाढकं तदर्धं वा	वृ परा ८.२२२
द्रोण्यम्बूशीर कुम्भाभः	वृ परा ८.२१४
द्रोण्यान्दोलायामपि	वृ हा ५.३०९
द्वदेर्भे प्रोक्षणी स्थाप्य	ब्र.या. ८.२५६
द्वन्द्वान्येतानि बहु	कात्या २५.११
द्वयंशं ज्येष्ठो	व १.१७.४०
द्वयंगुलस्तत्र विस्तारः	वृ परा ११.२७६
द्वयन्तरः प्रतिलोम्येन	नारद १३.११७
द्वयभियोगस्तु विज्ञेयः	नारद १.२२
द्वयमु वै ह पुरुषस्य	व १.२.७
द्वयमेतत्प्रकथितं स्त्रिय	आंपू १८०
द्वयं निष्ठं द्वयार्थज्ञ	व २.७.१४
द्वयंमुहवै सुश्रवसो	बौधा १.१.३३
द्वयं समाप्य यः स्नायात	वृ परा ६.१६७
द्वयुनर्विश्रामसंस्थाप्य	ब्र.या. ८.२४६
द्वयेन मूलमंत्रेण	वृ हा ७.१३५
द्वयेन वृत्तियाथात्म्यं	वृ हा २.१३९
द्वयेनैव प्रकुर्व्वीत	वृ हा ५.१३८
द्वयोरप्यनयोः श्रीशं	वृ हा ५.४२०
द्वयोरप्येतयोर्मूलं यं	मनु ७.४९
द्वयोरापन्नयोस्तुल्यं	नारद १६.११
द्वयोर्विवदतोरर्थे द्वयोः	नारद २.१४२
द्वयोर्विवदमानयो	व १.१६.३
द्वयोश्चापि हविःशेषं	आश्व २.६०
द्वयोस्त्रयाणां पंचानां	मनु ७.११४
द्वात्रिंशन्निष्कसंयुक्तं	वृ.गौ. ६.१६५
द्वादश इत्येव पुत्राः	व १.१७.१२
द्वादशपुत्र वर्णनम्	विष्णु १५
द्वादश प्रतिमास्यानि	कात्या २४.८
द्वादश मासान् द्वादशाधि	व १.४.२७

द्वावेतावशुची स्यातां	आंगिरस ४०
द्वावेव वर्जयेन्नित्यमन	मनु ४.१२७
द्वा सप्तति सहस्राणि	या ३.१०८
द्विकक्ष एककक्षश्च	ब्र.मा. २.२८
द्विकं त्रिकं चतुष्कं च	मनु ८.१४२
द्विकं शतं वा गृह्णीयात्	मनु ८.१४१
द्विकाल मतिथश्चैव	बृ.गौ. १५.९१
द्विकालं विधिवत् स्नानं	वृ परा १२.१२८
द्विगुणचं जपेद्वेदं	अ ५३
द्विगुणं क्षत्रियस्यान्ने	अ १९
द्विगुणं चेन्न दत्तं	लघुयम ५८
द्विगुणं तत्प्रदातव्यं	वृ हा ४.२४४
द्विगुणं त्रिगुणं चैव	नारद २.९१
द्विगुणं त्रिगुणं वापि	बृह ९.१९१
द्विगुणं निखिलं कृत्यं	आंपू २१२
द्विगुणं राजयोगेन	आंपू १९२
द्विगुणं हिरण्यं त्रिगुणं	व १.२.४८
द्विगुणा पलाशसमिधं	वृ परा ११.१८०
द्वित्रतुष्षड् दशाष्टाद्यैः	शाण्डि २.७१
द्विजकर्मादिभिः पश्चाद्	भार १५.२६
द्विजः कुर्यात्कुमारस्य	व २.३.३८
द्विजदास्याय पण्याय	वृ परा ५.१५३
द्विजछत्रमितिप्रोक्तमित	भार १५.१३९
द्विजन्मा सपरं ब्रह्म	भार ९.४९
द्विजपादजलक्लन्ना	वृ.गौ. ६.५०
द्विजः पुण्ड्रमृजुं सौम्यं	वाधू १०६
द्विजयोनि विशुद्धानाम्	वृ.गौ. ४.३
द्विजः शाखामृगं हत्वा	वृ परा ८.१७२
द्विजशुश्रूणन्तीर्थं तीर्थं	बृ.गौ. २०.१३
द्विजशुश्रूषणादन्यन्नास्ति	बृ.गौ. २२.७
द्विजः सदा माहध्याना	भार १३.४४
द्विजाग्रजो यदा पश्येत्	वृ परा १२.१२१
द्विजाः च सर्वभूताना	वृ.गौ. ३.७१
द्विजातयः सवर्णासु	मनु १०.२०
द्विजाति प्रवराच्छूद्रायां	बोधा २.२.३३
द्विजातीनामभोज्यन्नं	अत्रि५.२३
द्विजातीनां प्राजापत्यादि	विष्णु ६२
द्विजानामेव नान्येषां	वृ हा ५.१८४
द्विजान् यः पाययेत्तोयं	वृ परा १०.२०
द्विजाविधियथस्नात्वा	भार ७.५४
द्विजोग्निहूब्रजनैव	भार ५.५५
द्विजोत्तमान्नभुक्त्वाथ	भार ९.१४
द्विजोदधिसमालोक्य वाणं	ब्र.या. ८.२२६
द्विजो ध्यात्वैवं आत्मानं	वृ परा ११.१४१
द्विजात्ऽध्वगः क्षीणवृत्ति	मनु ८.३४१
द्विजोवैश्योनृपश्शूद्रो	भार १८.१०
द्वितीयञ्च तृतीयञ्च	कात्या ३.१२
द्वितीयमेके प्रजनं	मनु ९.६१
द्वितीयं तु पितुस्तु	दा ३७
द्वितीयवर्षमारभ्य यावद्	नारा ५.२७
द्वितीयवारनिक्षिप्तंतार्त्तीयोकेन	कपिल २८९
द्वितीयाग्नि मुखाद्यद्यत्कर्म	लोहि १४२
द्वितीयाचमने सम्यङ्	कण्व १०७
द्वितीयाञ्चैव यः पत्नी	कात्या २०.७
द्वितीयादिपुरोद्भूता	आंपू ४३२
द्वितीयादिसमुद्भूत	लोहि ८१
द्वितीयादिसमुद्भूतो न	आंपू ४१४
द्वितीयादिसुतानां स्यात्	आंपू ४३२
द्वितीयादिसुतान् सर्वान्	आंपू ४१५
द्वितीयाद्यनले लौकिक	लोहि १४४
द्वितीयाद्यग्नयः शिष्टाः	लोहि १२
द्वितीयाब्दं समारभ्य	नारा ३.९
द्वितीयां आहुतिं तदवत्	आश्व १.५४
द्वितीयावरणं पश्चात्	वृ हा ४.८८
द्वितीयाऽऽवाहने षष्ठी	आश्व २४.१२
द्वितीया वेधगोक्रीड़ा सर्वथा	ब्र.या. ९.५०
द्वितीयो च तथा भागे	दक्ष २.२५
द्वितीये चैव यच्छेष	नारद १८.९१
द्वितीये तु पतिघ्नी	कात्या २५.४
द्वितीयेऽह्नि ददंत् क्रेता	नारद १०.३

ध

श्लोक	सन्दर्भ
धर्मशास्त्रकुशलाः कुलीनाः	नारद १.६९
धर्मशास्त्रन्तुजीवः	ब्र.या. १.४२
धर्मशास्त्रमिदं पुण्यं	संवर्त २.२७
धर्मशास्त्रमिदं सर्व	ल हा ७.१५
धर्मशास्त्रं पुस्कृत्य	नारद १.२९
धर्मशास्त्र स्थारूढा	परशर ८.३३
धर्मशास्त्र रथारूढा	बौधा १.१.१४
धर्मशास्त्रविरोधे तु	नारद १.३४
धर्मशास्त्रानुसारेण	बृ.य. ४.२७
धर्मशास्त्रार्थशास्त्राभ्यां	नारद १.३१
धर्मशास्त्रेतिहासादि	व्यास ३.१२
धर्मशास्त्रेषु सर्वेषु	भार १.१२
धर्मशास्त्रदितानद्यात्	वृ परा ६.३२३
धर्मश्च व्यवहारश्च	नारद १.१०
धर्मश्चार्थश्च कीर्तिश्च	नारद १.२७
धर्मः श्रुतो वा दृष्टो वा	वृ.गौ. १.२९
धर्मसत्यमयः श्रीमान्	विष्णु १.५
धर्मसारं महाराजं! मनुना	बृ.गौ.१४.३६
धर्मस्य पर्पदश्चैव	आंउ ५.३
धर्मस्य ब्राह्मणो मूलमग्रं	मनु ११.८४
धर्म स्याच्चोदना	आंपू ३
धर्मस्यार्थस्य यशसो	नारद १.१४
धर्मध्नानां तथा च एव	वृ.गौ. ३.१३
धर्महानिर्न कर्त्तव्यां	शाण्डि १.४०
धर्महानिर्यथा न स्याद्यथा	शाण्डि १.१५१
धर्माङ्गानि पुराणानि	औ ३.४५
धर्मादीनर्चयेत् सर्वान्	व २.६.१००
धर्माथमेतानि कृतानि	वृ परा ९.४१
धर्मार्थे येन दत्तं स्यात्	मनु ८.२१२
धर्मार्थावुच्यते श्रेयः	मनु २.२२४
धर्मार्थौ यत्र न स्याताम्	बौधा १.२.४७
धर्मार्थौ यत्र न स्याताम्	बौधा १.२.४८
धर्मार्थौ यत्र न स्याताम्	बौधा १.१२.१८
धर्मार्थौ यत्र न स्यातां	मनु २.११२
धर्मार्थौ यस्य महतां	बृ.गौ. १४.५५
धर्माधर्मविधिः कृत्सनो	बृ.गौ. १२.२८
धर्माधर्मविवेकं	दा २
धर्माधर्मैः महापाशैः	वृ परा १२.२२७
धर्माधर्मैरवष्टब्धौ	वृ परा १२.२२६
धर्माधर्मौ च कथितौ	वृ.गौ. १०.१११
धर्मानुचारिणी भार्या	आश्व १.७२
धर्मान् अर्थः च कामः च	वृ.गौ. १.३१
धर्मान् कथय देवेश !	वृ.गौ. १.१४
धर्मान् कामान् तथाऽञ्च	वृ.गौ. ६.१००
धर्मान्वः पुरतो वक्ष्ये	आश्व १.२
धर्माभासो द्विजो यस्मा	अ १२८
धर्मायत्वेति मन्त्रेण संतत्यै	कपिल ३८९
धर्मासनगतः श्रीमान्	नारद १८.२८
धर्मासनमाधिष्ठाय	मनु ८.२३
धर्मासनस्थः श्रुतिशास्त्र	वृ परा १२.९१
धर्मे चार्थे च कामे च	व २.४.३९
धर्मेण च द्रव्य वृद्धावा	मनु ९.३३३
धर्मेण यजनं कार्यं	ल हा २.५
धर्मेण लब्धु मीहेत	या १.३१७
धर्मेण व्यवहारेण	मनु ८.४९
धर्मेणाधिगतो येषां	बौधा १.६
धर्मेणाधिगतो यैस्तु	मनु १२.१०९
धर्मेणोद्धरतो राज्ञो	नारद १.२६
धर्मे पंचाग्नि मध्यस्थ	ल हा ५.७
धर्मेप्सवस्तु धर्मज्ञाः	मनु १०.१२७
धर्मो जयति नाधर्मः सत्यं	वृ.गौ. ८.११८
धर्मो जितो ह्यधर्मेण	पराशर १.३१
धर्मोपदेशं दर्पेण	नारद १६.२२
धर्मोपदेशं दर्पेण	मनु ८.२७२
धर्मोऽयं भूतले साक्षाद्	वृ परा ५.४८
धर्मोवशे विपन्नञ्च	वृ.गौ. १.३२
धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण	मनु ८.१२
धर्म्मज्ञश्च कृतज्ञश्च	ब्र.या. ८.२९५
धर्म्मपिण्डोदकं	औ ३.१२३
धाता ददातु मंत्रौ	आश्व ४.८

न

न भवेयुर्भ्रातृजा हि	कण्व ७५५
नमसः पंचदश्यां तु	वृ परा ६.३४७
न भस्म धारयेद् विप्रः	वृ हा २.४८
नमस्यमासस्य च कृष्ण	बृ.गौ. १४.२९
न भुक्त्वा नातुरो जीर्णो	शाण्डि २.५३
न भुंजीतोद्धृतस्नेहं	मनु ४.६२
न भुज्यते स एवैकौ	दक्ष २.४८
न भूदानेऽधिकारोऽस्ति	लोहि ५४७
न भिन्नकार्षापणमस्ति	व १.१९.२५
न भिन्नग्रामिणा कार्यः	कपिल ४७६
न भिन्न भाण्डे भुञ्जीत	ब्र .या. २.१५९
न भैक्षैर्न च मौनेन	शंख ५.११
न भोक्तव्यमभोज्यान्नं	वृ परा ६.२४९
न भोक्तव्यो बलादाधि	मनु ८.१४४
न भोजनार्थं स्वे विप्रः	मनु ३.१०९
न भोजयेत्प्रत्नेन	आंपू ७५९
न भोजयेत् स्त्रियं श्राद्धे	वृ परा ७.७१
न भ्रातरो न पितर पुत्रा	मनु ९.१८५
न मण्डपं सभा वाऽपि	वृ.गौ. ५.१३
न मण्डलमतिक्रामेन	नारद १९.१६
नमत्याश्च तथा कुर्य्यात्	कपिल १०८
न मद्यां गवां क्रीडा	ब्र.या. ९.५४
न मंत्रवतायज्ञांगेना	बौधा १.७.७
नमः प्रकाशदैवत्य	वृ परा ११.३४२
नम (कु) र्यात्तद्विधानेन	कपिल १८४
न मलिनवाससा सह	व १.१२.४
नमःश्वभ्यः इत्यमुना	वृ परा ११.१७९
नमः श्वावास्यायां नाशने	ब्र.या. ८.२०५
नमसैव हि संसिद्धि	वृ हा ३.९२
नमसैवेक्षते राजन्	वृ हा ३.९३
नमस्करोति यो भक्तया	वृ.गौ. ५.१०१
नमस्कारात्तमद्भिस्तु	वृ.गौ. ८.७१
नमस्कारानूनीराजनोपचारानि	कपिल ३२६
नमस्कारेन पुष्पाणि	बृ.या. ७.९५
नमस्कुर्यात्ततो गौरी	आश्व १५.३५
नमस्कुर्वन् प्रतिदिशं	शाण्डि २.७०
नमस्कृत्य च ते सर्वे	अत्रिसं २
नमस्कृत्य च ते सर्वे	व्या ३
नमस्कृत्वा गुरून्	वृ हा ३.३२
नमस्कृत्वा तथा भक्तया	व २.३.२२
नमस्ते कपिले पुण्ये	वृ.गौ. १०.५८
नमस्ते घृणिने तुभ्यं	भार ७.५
नमः स्वाहेति मंत्रेण	वृ परा ५.८२
न मांसभक्षणे दोषो न	मनु ५.५६
न मांशमश्नीयान्न	बौधा १.११.३८
न मांसानां हतानान्तु	औ ९.२२
न माता न पिता न स्त्री	मनु ८.३८९
न मातामहिकं श्राद्ध	वृ परा ७.४३
न मित्रकारणाद् राजा	मनु ८.३४७
न मित्रकारणाद् राज्ञो	नारद १८.९७
न मुख्या विप्रुष उच्छिष्टं	व १.३७
न मृगयोरिषुचारिण	व १. १४.१०
न मृल्लोष्ठं च मृद्नीयान्न	मनु ४.७०
न मे धर्मो ह्यधर्मो वा	विष्णु म ६३
न मे भूतेषु संयोगो न	विष्णु म ६२
नमो नारायणायेति ये	विष्णु म १०३
नमोंतं त्रिविधं ज्ञेयं	विश्वा २.२८
नमो देवेभ्यो नम इति	वृ हा ३.१००
नमोद्वादशसंयुक्तं पठनीयं	आंपू ९०३
नमो ब्रह्मण इत्यादि	वृ हा ४.४९
नमोब्रह्मणसुस्पष्टाः	कण्व ३८३
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्यर्च	बृ.गौ. १७.३३
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्यर्च	बृ.गौ. १७.२५
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्यर्च	बृ.गौ. १७.३७
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्युक्त्वा	वृ.गौ. ७.११४
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्युक्त्वा	बृ.गौ. १७.४५
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्येतन्	वृ.गौ. ७.१२०
नमो ब्रह्मण्यमन्त्र वा	आंपू ८३८
नमो भगवते तस्मै विष्णवे	विष्णु म ७२
नमो यज्ञवराहाय	वृ हा ३.३३७

न वर्त्मनि शिलास्पृष्टे	व २.६.११
न वदेच्चापि तूष्णीकं किंतु	कपिल ८७१
नव दैवतकं श्राद्धेऽब्रवीत	ब्र.या. ६.८
नवदैवतकान्येवं व्यष्टकादीनि	कपिल १४९
नवनवकवेत्तारं अनुष्ठान	दक्ष ३.१९
नवतंतुकृतं सूत्र प्रणवे	भार १६.५३
नवन्निकांतर्हितां च	व २.४.३०
नवप्रणवयुक्तेन ह्यापो	वाधू १२०
नवभि पावमानीभि	वृ परा ११.१६
नवर्भिर्दर्भैः पंचभि	भार १८.९७
नवमप्रभृत्यष्टानां	भार १७.१९
नवमं कन्यकादानदातु	कपिल ९२७
नवमं नाभिमध्येतु	ब्र.या. २.११९
नवमी द्वादशी नन्दा	आश्व १.१५
नवमी नाभिमध्ये तु	वृ परा ४.१२७
नवमीं नाभिदेशे तु	वृ हा ५.१९८
नवमी रोहिणीयोग	वृ हा ५.४७४
नवमे दशमे वाऽपि	या ३.८३
नवम्यां तु ततो भक्त्या	आंपू ७२८
नवयज्ञे च यज्ञज्ञावदंत्येवं	कात्या ५.३
न वर्णगन्ध रस	व १.३.३६
न वर्णरस दुष्टाभिर्नचैव	अ २.१४
न वर्द्धयेदघाहानि	मनु ५.८४
नवश्राद्ध त्रिपक्षं च	लिखित १५
नवश्राद्धे त्रिपक्षे च	अत्रिस ३०४
नवश्राद्धे त्रिपक्षे च	दा २३
नव श्राद्धे त्रिपक्षे च	लघुशंख १२
नव समाराजन्यस्य	बौधा २.१.९
नवानां चर्मणामेव	व२.६.५३४
नवान्ने नवतोये च	वृ परा ७.४
वाल्मीकेन रन्ध्रेषु	शाण्डि २.१२
न वारयेद्गांधयन्तीं	मनु ४.५९
न वार्यपि प्रयच्छेत्तु	मनु ४.१९२
न वासुदेवात्परमस्ति	विष्णु म १११
नवाहमति कृच्छ्रं स्यात्	पराशर ११.५२
न वाहयेदनडुहं क्षुधार्त	वृ हा ४.१६३
नवाह्निकं च सप्ताहं	वृ हा ६.६
न विगृह्य कथां कुर्याद्	मनु ४.७२
न वित्त नैव जातिश्च	वृ परा ६.५४
न विद्यया केवलया तपसा	बृह ११.२२
विद्यया केवलया तपसा	वृ हा ४.२२२
न विद्या न तपो यस्य	वृ परा ६.२२४
न विना ब्रह्मचर्येण	व्या २७९
न विप्रं स्वेषु तिष्ठत्सुं	मनु ५.१०४
न विवादे न कलहे	मनु ४.१२१
न विवाहो न संन्यासो	ल हा ३.१३
न विषं विषमित्याहुः	व १.१७.७७
न विसर्ग न तद्वीनं	वृ परा १२.२७१
न विस्मयेत तपसा	मनु ४.२३६
न वृक्षमारोहेत	व १.१२.२५
न वृथा शपथं कुर्यात्	मनु ८.११
न वृद्धातुरबलेषु न च	नारद १९.३५
न वृद्धि प्रतिदत्तानां	नारद २.९३
न वेदपलमाश्रित्य पापं	बृह ११.१९
न वेदपाठमात्रेण	औ ३.८१
न वेदबलमाश्रित्य	अत्रि ३.४
न वेद बलमाश्रित्य	व १.२७.४
न वेदशास्त्रादन्यत्तु	बृह १२.१
न वेदैर्ज्ञेयता तस्य न	वृ परा १२.३००
न वेदैः कैवलैर्वापि	वृ परा ७.१५
नवेनानार्चिता ह्यस्य	मनु ४.२८
न वै कन्या न युवती	मनु ११.३६
नवैत प्रत्यवसिताः सर्व	बृ.य. १.४
नवैत प्रत्यवसिताः सर्व	लघुयम २३
नवैतानि विकर्माणि	दक्ष ३.१२
नवैतानि विकर्माणि	ब्र.या. १२.३७
न वै तान्स्नातकान्	मनु ११.२
न वैदिकः पुराणोक्तै	आंपू ५
न वैदिक पुराणोक्तै	कण्व २६६
न वै देवान पीवरो	बौधा १.५.१०२

नृपते प्रथमं तस्मात् वृ परा १२.११४
नृपवैश्यश्राद्धभिरसा आंपू ७६३
नृपस्य कोशवृद्ध्यर्थं वृ परा ५.१५८
नृपस्य स्वस्य वैश्य भार १५.१२५
नृपस्यापदि जातायां वृ परा १२.६१
नृपायामेव तस्यैव औसं २२
नृपायां विधिना विप्राज्जातो औ सं २८
नृपायां विप्रतश्चौर्यात् औसं २६
नृपायां वैश्यतचौर्यात् औसं १६
नृपायां शूद्रतश्चौर्याज्जातो औसं १९
नृपायां शूद्रसंर्गाज्जात औसं १७
नृपेणाधिकृताः पूगा या २.३१
नृपोऽप्यस्वजनां गत्वा वृ परा ८.२४३
नृपो वेधा नृपः कर्ता वृ परा १२.४
नृयज्ञः कथितः सद्भि कण्व ३७९
नृशेसराजरजक कृतघ्न या १.१६४
नृसिहं भीषणं भद्र वृ हा ३.३४२
नृसिंहो मणिवर्णः स्याद् वृ हा ७.११३
नेक्षेतार्क न नग्नां स्त्री या १.१३५
मेक्षेतोद्यन्तमादित्यं मनु ४.३७
नेज्यमेचेतिसृभि प्रजा व २.४.१२८
नेतःपरमहं त्वस्मिंचेति लोहि ५९२
नेति गौतमौऽत्युग्रो बौधा २.२.७८
नेत्रपातैर्भगवता स्वात्मानं शाण्डि ४.२६
नेत्रशोभी यथाजाति भार १६.२७
नेत्रे प्रक्षाल्य नोचेत्तु लोहि ६६९
नेन्द्रधनुरिति परस्मै बौधा २.३.३८
नेन्द्रधनुर्नाम्ना व १.१२.३०
नेष्टकाभि फलानि व १.६.३४
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति बृह ११.२
नेहेतार्थान् प्रसंगेन मनु ४.१५
नैवकाले द्वयं स्नानं व्या २५३
नैकग्रामीणमतिथि विप्रं पराशर १.४३
नैकग्रामीणमतिथि विप्रं मनु ३.१०३
नैकग्रामीणमतिथिं विप्रं व १.८.८
नैकजनन्योः पुंसो रेक व्या ३७८
नैकत्वं तु तयोरस्माद् वृ परा ७.३११
नैकयापि विना कार्य्यमाधानं कात्या ८.५
नैकवस्त्रो न न खिन्नश्च शाण्डि २.६७
नैकवस्त्रो नाऽऽर्द्रवासा बौधा २.५.२११
नैकवासास्तु भुञ्जीयान् बृ.गौ. १३.५
नैकश्चेत्स्यान्न देहे वृ परा १२.१९३
नैक समुन्नेत सीमां नारद १२.९
नैकस्य तनयास्ते आंपू ३३६
नैक स्वाप्याच्छून्यगेहे मनु ४.५७
नैकान्नाशी भवेच्चापि कण्व ५६३
नैकाश्रमे वसन् विप्रो वृ परा ४.२०५
नैकेन चक्रेन रथ प्रयाति वृ परा १२.६८
नैकोऽध्वानं व्रजेत बौधा २.३.४८
नैतत् पौत्रेण कर्त्तव्य कात्या १६.१७
नैतस्मात्परमं दानं वृ परा १०.१९०
नैतस्तमादधिकं तुल्यं कपिल ८८३
नैतस्मादधिकं दानं लोहि ६५४
नैतस्मादधिकाः कृच्छ्राः लोहि ६५५
नैतादृशमितः कर्म परंस्यात्तु कपिल ८३०
नैतानि कुर्याद्यत्नेन आंपू १०२८
नैतानुपनयेन्न अध्यापयेन्न व १.११.५५
नैता रूपं परीक्षन्ते मनु ९.१४
नैतेन तुल्यन्यत्तु दानं कपिल ९२२
नैते मन्त्रा याजमाना आंपू ८१८
नैतेषां तुल्यमपरं आंपू ४९१
नैतैरपूतैर्विधिवद् मनु २.४०
नैत्यकं तर्पणं कुर्याद् आश्व १.१०७
नैत्यकं तर्पणं कुयाद् आश्व १.१११
नैत्यके नास्त्यनध्याय औ ३.७६
नैत्यके नास्त्यनध्यायो मनु २.१०६
नैत्यं कर्म विधेयं वै शाण्डि ३.१३४
नैत्राम्यां सदृशो मंत्रो ल व्यास २.४.३
नैनं छन्दांसि वृजिनात् व १.६५
नैनं तपांसि न ब्रह्म व १.६.२

पतिं या नाभिचरति	मनु ९.२९
पतिं विहाय या नारी	वृ परा ७.३६९
पतिं हित्वा तु या नारी	वृ परा ७.३६७
पतिं हित्वापकृष्टं	मनु ५.१६३
पतिमुल्लङ्घ्य मोहात्	कात्या १९.११
पतिमृत्युः स्त्रियो	वृ परा ७.३८८
पतिरेव गुरुः स्त्रीणां	वृ.गौ. १२.७
पतिर्भार्यां संप्रविश्य	मनु ९.८
पतिर्विंशति यज्जायां	वृ परा ६.१८०
पतिलोकं न सा याति	या ३.२५५
पतिवल्याश्च दुर्भेद्य	आश्व ३.१४
पतिव्रता तु साध्वी	वृ परा ६.४९
पतिव्रतानां गृहमेधिनीनां	व १.२१.१५
पतिव्रता त्वन्यदिने	आंपू ९८८
पतिव्रता धर्मपत्नी	मनु ३.२६२
पतिव्रतानां धर्मोऽयं तत्	लोहि ६६४
पतिव्रताः पार्वतीम्बा	कण्व ७६
पतिशुश्रूषणे तासां	व २.५.४
पतिशुश्रूषयैव स्त्री	कात्या १९.१२
पतेः सूनोर्विनाशेऽपि या नारी	कपिल ५९४
पत्तो ह्यसृज्यन्तेति	बौधा १.१०.६
पत्नी दुहितरश्चैव	या २.१३८
पत्नी पाकं यदा कुर्यात्	प्रजा ५६
पत्नी पुत्रोऽथवा मौर्ख्या	आंपू ३७४
पत्नीं विना न तत्कुर्यात्	आश्व १६.६
पत्नीमन्त्रैकसंलब्ध	कण्व ३९२
पत्नीमात्रस्य सामान्या	लोहि ११०
पत्नीमूलंगृहं पुंसां	दक्ष ४.१
पत्नीयजमाना वृत्विग्भ्यो	बौधा १.७.९
पत्नीसहोदराश्वश्रूस्वसृ	कपिल ६०८
पत्नी स्नुषा स्वयं	आश्व १.१७६
पत्न्या चाप्यवियोगिन्या	कात्या १९.३
पत्न्य ।ऽ। र्दत्तवस्तु	वृ हा ५.२५१
पत्न्यादीनामालंकारः	आंपू १०९४
पत्न्या सह परासुत्वात्	वृ परा ७.३८४
पत्युः पूर्वं समुत्थाय	व्यास २.२०
पत्यौ जीवति यः स्त्रिभिः	मनु ९.२००
पत्यौ प्रव्रजिते नष्टे	नारद १३.९९
पत्रकं चन्दनंकुष्ठं	व २.६.९४
पत्रचूर्णेषु यत्तोयं	दा १६२
पत्र वाप्यथवा पुष्पं फलं	वृ.गौ. २१.२५
पत्रं सर्वं कुशहस्तं च	व २.३.७८
पत्रमोह सन्नीनि	व २.४.५०
पत्रशाकतृणानां च	मनु ७.१३२
पत्रसाकादिदानेन	आश्व २३.१०६
पत्राणि नागवल्याश्च	भार १४.५८
पत्रालाभे तु शाखाभिः	वृ.गौ. ८.७९
पत्रैः पुष्पैः फलैरर्चां	कण्व ४४८
पत्रैः पुष्पैश्च तत्	आंपू ५४७
पथि क्षेत्रे परिवृते	मनु ८.२४०
पथिक्षेत्रे वृतिः कार्या	नारद १२.३६
पथि ग्रामविवीतान्ते	या २.१६५
पथि दर्भाश्रिता दर्भा	वृ हा ४.४०
पथ्यं मितं च शुद्धं	शाण्डि ४.१४३
पदत्रयात्मकं मंत्र	वृ हा ३.५४
पदं पदं महेशस्य	भार ६.७९
पदं प्राप्य निवर्तन्ते	वृ परा १२.२६९
पदादित्यगतं तेजो	बृह ९.१८
पदानजनमंत्रस्य	भार १०.४
पदानि क्रतुतुल्यानि	या १.३२५
पदे पदे तु यज्ञस्य	वृ परा १०.४०
पदे पदे समग्रस्य	वृ हा ४.२१९
पदे प्रमूढे भग्ने वा	नारद १५.२३
पदैस्त्रिभिर्यदा त्या	बृ.या. ४.३४
पदोमहतं पक्षालयेत्	बौधा १७.४
पदौ यथाक्रमं लिंपेत	शाण्डि २.३५
पदमपि न गच्छेत	बौधा १.४.२६
पद्भ्यां स कुरुते	बौधा १.१.३४
पद्भ्यां नाभ्यां ललाटे	बृ.या. ५.१२
पद्भ्यां स्पृश्यं गवाद्यं	वृ परा ६.२६७

पुमान् पुंसोऽधिके शुक्रे	मनु ३.४९
पुमान् प्रद्युम्नवत् स	वृ परा १०.२०६
पुमान् विमुच्यते सद्यः	विष्णु म १६
पुमान् संग्रहणे ग्राह्यः	या २.२८६
पुरतः पितुरासीनो	आश्व १०.२७
पुरतःस्थे शरावे च	आश्व ९.५
पुरतो जुहुयादग्नौ	वृ हा ७.२३१
पुरतो देवता तत्र	व २.३.८०
पुरतो नात्मनः कर्षू	कात्या १७.१
पुरतो याचमानं च	व २.५.२९
पुरतो याचमानं च	व २.५.२९
पुरतो वासुदेवस्य	वृ हा ५.३४३
पुरद्वरीन्द्रकील परिघा	बौधा २.३.४०
पुरन्दरपुरं याति गीयमानो	वृ.गौ. ६.८६
पुरन्दरपुरे तत्र दिव्य	वृ.गौ. ७.३४
पुरप्रधानसम्भेद	नारद १८.२
पुरं तत् प्रेतनाथस्य	वृ.गौ. ५.८४
पुरंप्रवेश्य देवेशं	व २.७.५५
पुररेणुकुण्ठित शरीर	बौधा २.३.६०
पुरश्चरणमेतद्धि गायतर्या	भार ९.८
पुरश्चर्या च दीक्षायां	विश्वा २.५६
पुरस्तात् त्रिविकल्पं	कात्या १९.१६
पुरस्थात्प्रणवोच्चारः	भार ६.२५
पुराकल्पे समुत्पन्ना	औ ३.५०
पुराकल्पे समुद्दिष्टा	बृ.या. १.४२
पुराकालात् प्रमीतानां	व १.२०.४८
पुरा किलं पितृतृप्ति	आंपू ५०३
पुरा तु ब्रह्मसदने	कण्व ३६९
पुराचोला आज्यशेषेण	कपिल २८५
पुराणतर्कमीमांसाधर्म	बृह १२.३
पुराणधर्मशास्त्राणि	बृ.या. ४.७
पुराणन्यायमीमांसा	या १.३
पुराणंधर्म्मशास्त्र	ब्र.या. ७.५९
पुराणं श्राद्धकाले च	विश्वा २.५५
पुराणाद्यकथातर्क धर्म	भार ११.४९

पुराणेष्वितिहासेषु	वृ हा .२.४१
पुराणैर्धर्मवचनैः सत्य	नारद २.१७९
पुराणोक्तेष्वेषु सत्सु	आंपू ७
पुरा तु शौनकः श्रीमान्	कपिल १
पुरा देवो जगत्स्रष्टा	लहा १.९
पुराभवत्तथा चोत्त आर्षं	कपिल ५६६
पुरीषभूमालिरिणे निवासे	भार ३.६
पुरीषे मैथुने होमे	अत्रिस ३२१
पुरुपाख्यः स विज्ञेयो	बृह ९.१३५
पुरुपारायस्पोषमीभ	ब्र.या. २.२७
पुरुरवार्दश्चैव	लिखित ५२
पुरुरवोमाद्रवासौ क्षये	ब्र.या. ६.१८
पुरुषं मण्डलान्तस्थं	बृह ९.१०६
पुरुषं च तथा सत्यं	बृ.या. ३.४
पुरुषंव्रतं च माषं च	शंख ११.३
पुरुषव्रतं न्यासं च	व १.२८.१३
पुरुषसूक्तजपो वापि	आंसू १५६
पुरुषसूक्तं यजुषां	ब्र.या. ४.१०३
पुरुषसूक्तेन जुहुया	आंपू ९५६
पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव	मनु ९.१
पुरुषान्न परं किंचित्	बृह ९.१८६
पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव	मनु ९.१
पुरुषाणां कुलीनानां	मनु ८.३२३
पुरुषाणां देवतानां कृतं	कपिल १८३
पुरुषा संति ते लोभाद्ये	नारद १.६०
पुरुषोत्तमं वामनेत्रे	विश्वा २.१७
पुरुषो यो जगद्बीज	व २.६.१५२
पुरुषेण प्रदत्तं वा कन्या	कपिल ७८३
पुरुषोऽनृतवादी च	या ३.१३५
पुरुहूतः पुरा दैत्यं	वृ परा ८.३१९
पुरोक्तान्यन्यथाकृत्वा	आंपू ३६५
पुरोहितंच कुर्वीत	या १.३१३
पुरोहितं च कुर्वीत	मनु ७.७८
पुरोहिताचार्ययोश्च	आंपू १०४३
पुलहः स्वायम्भुवो	वृ हा ७.८२

प्रथमं प्रणवोऽव्यक्त वृ परा १२.२६७
प्रथमं भूपतेस्तस्मात्कृत्यं वृ परा १२.१११
प्रथमं महिषीसंघं वृ हा ७.७९
प्रथमं सरस्वतीनाम्नी व्या ११५
प्रथमश्राद्धमेवो चुः श्राद्ध आंपू ११०७
प्रथमातस्य अकारो बृ.या. २.२७
प्रथमा धर्मपत्नी च सुभागा आंपू ४५८
प्रथमाधर्मपत्नी च दक्ष ४.१५
प्रथमायां धर्मपत्न्या लोहि १२४
प्रथमां विन्यसेद् वामे वृ परा ४.१२५
प्रथमां विन्यसेद् वामे वृ हा ५.१९६
प्रथमे पंचके पापी कात्या २५.३
प्रथमे मासि संक्लेद्भूतो या ३.७५
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली आंगिरस ३८
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली अत्रिस ५.४९
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली परशर ७.१९
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली वृ परा ८.३१८
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली आप ७.४
प्रथमेऽह्नि चेदज्ञः किं कार्यं कपिल ९४९
प्रथमेऽह्नि षडात्र आप ७.८
प्रथमेऽह्नि तृतीये दा २२
प्रथमेऽह्नि द्वितीये वा लघुयम ८७
प्रथमेऽह्नि निमंत्रीत ब्र.या. ३.४
प्रथमेऽह्नि मन्त्रे च ब्र.या. ४.२७
प्रथमोद्वाहपर्यन्तं आश्व १५.६९
प्रथमोधान्यशैलस्तु अ ८४
प्रथितानि च पुष्पाणि व २.६.३३
प्रथिता प्रेतकृत्यैषा मनु ३.१२७
प्रथितो भव सर्वेषां आपू ५९८
प्रदक्षिणक्रियासक्तः शाण्डि १.३४
प्रदक्षिणद्वयोज्वोरानीया भार १८.६५
प्रदक्षिणन्तु त्रिः कुयार्त् बृ.गौ. २०.२८
प्रदक्षिणप्रकारेण आश्व ९.११
प्रदक्षिणं चरेत्पृथ्व्याः विश्वा ५.३१
प्रदक्षिणं नमस्कारं वृ हा ६.१३३
प्रदक्षिणं नमस्कारं वृ हा ७.१८०
प्रदक्षिणं नमस्कारं वृ हा ६.४०७
प्रदक्षिणं परामृज्य वृ.गौ. ८.४९
प्रदक्षिणप्रणामांश्च भार १३.२८
प्रदक्षिणं समावृत्या बृ.या. ७.५७
प्रदक्षिणंसमावृत्या वृ.गौ. ८.२४
प्रदक्षिणमनुव्रज्य या १.२४९
प्रदक्षिणमुपावृत्य ल हा ४.५०
प्रदक्षिणात्रयं कुर्याद् आश्व १०.५८
प्रदक्षिणानमस्कारं जप शाण्डि २.७८
प्रदक्षिणां ततः प्रत्यगूर्द्दा भार १२.१९
प्रदक्षिणीकृतातेन वृ परा ५.२६
प्रदक्षिणेन चेकैन वृ.गौ. ९.४०
प्रदक्षिणे प्रणामे च पूजायां शाण्डि २.८१
प्रदद्यात् पितृतीर्थेन शाता ६.२४
प्रदद्यादर्भकेभ्यो वै आंपू २४८
प्रदद्याद्वाथ पुष्पाणि ल व्यास २.४१
प्रदद्यान्न तु हस्तेन व १.१४.२७
प्रदर्शनार्थमेतत्तु या ३.२१६
प्रदर्शयेन्मुखे देव्याः भार ११.७५
प्रद्युम्न मनिरुद्धश्च वृ हा ५.१८८
प्रद्युन्न मनिरुद्धश्च वृ हा ६.८४
प्रद्युम्नो रक्तवर्णं वृ हा ७.११२
प्रदानशपथप्रोक्तमर्यादा लोहि ७६
प्रदानसमये स्वस्य सन्तु लोहि २७६
प्रदास्यति महाभागः कण्व ३३५
प्रदीपतापप्रकाश्यै बृह ९.१७४
प्रदीयतेऽस्मै मत्तातसंलब्धा लोहि ५४६
प्रदुष्टत्यक्तदारस्य नारद १३.६१
प्रदूरीकृत्य तज्ज्ञाती आंपू ३१०
प्रदूषयन्ति तं दृष्ट्वा कपिल ७७९
प्रदेयं शास्त्रमार्गेण लोहि ४६०
प्रदेवत्रेति सूक्तेन वृ हा ७.२६२
प्रदेशिन्यंगुष्ठयोरन्तरा व १.३.६१
प्रदोषेश्राद्धमेकं स्याद् कात्या ५.६

प्रयच्छन्ति नरा ये च	वृ.गौ. १०.८८
प्रयच्छेन्नग्निकां कन्या	व १.१७.६२
प्रयच्छेन्मध्यमं पिण्डं	आंपू ८६९
प्रयतं प्रयतो नित्यम्	वृ.गौ. ५.१००
प्रयतो वैश्वदेवान्ते	कण्व ३७४
प्रयत्न आकृतिर्वर्णः	या ३.७४
प्रयत्नाद्वापि कूपेषु	दा १०२
प्रयत्नेन हि दातव्यः	वृ.गौ. ३.५३
प्रयद्व इति सूक्ताभ्यां	वृ हा ५.४२४
प्रयोगे सेतुवन्धादि	वृ हा ६.२२६
प्रयाति तत्परं दिपैः	शाण्डि ५.२३
प्रयुक्तैरप्रयुक्तैर्वा भगवत्	शाण्डि ५.१४
प्रयुञ्जते तदोङ्कारं	शाण्डि ५.६५
प्रयुतेनाभिषेकेन शम्भो	नारा १.३४
प्रयोगकाले मंत्राणं	भार ५.५३
प्रयोगकाले मंत्राणि	भार ६.१४१
प्रयोगे चोपसंहारे प्राणायामं	विश्वा ३.३९
प्ररोहत्यग्निमादाय	का ८
प्ररोहिशाखिना शाखा	या २.२३०
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव	विश्वा ६.६३
प्रालिम्प्य मधु सर्पिर्भ्यां	वृ परा ५.८४
प्रवदन्ति महात्मान् नदीं	कपिल ९९३
प्रवदन्त्यन्यथा केचित	वृ परा १२.३०६
प्रवदिष्यन्ति तां वाचं पितृ	कपिल ७१५
प्रवदेत्तेन मनुना यज्ञ	आंपू ८९९
प्रवः पान्तमिति सूक्तेन	वृ हा ८.२३६
प्रवरः कथितः सद्	आंपू ४१४
प्रवराग्रन्थिभेदश्च	ब्र.या. ८.७७
प्रवराग्रंथिभेदश्च	ब्र.या. ८.२०
प्रव (वे) शं सर्वतीर्थानां	बृ.गौ. २०.८
प्रवासयेत् स्वराष्ट्रात्तु	वृ हा ४.१८४
प्रवासर्योच्छिक्षयेद्वा	कपिल ५८६
प्रवासस्थैः वनस्थैः वा	वृ.गौ. ५.३२
प्रवासे यजमानस्य	कण्व ३७०
प्रवाहनादिकर्माणि	आंपू ८१
प्रविशन् परदेशे च	वृ परा १२.३७
प्रविशेत् स महातेजा	वृ.गौ. ७.१२४
प्रविशेयुः समालम्भ	या ३१४
प्रविश्य पर्षदं ते वै	वृ परा ८.७८
प्रविश्य सर्वभूतानि	मनु ९.३०६
प्रविष्टपरकायेन यदि	आंपू२२४
प्रविष्टपरवर्ष्माणं	आंपू २२५
प्रविषुः अन्नः जले यः	वृ.गौ. ५.११३
प्रवृत्तचक्रताञ्चैव	या १.२६६
प्रवृत्तं कर्म संसेव्यं	मनु १२.९०
प्रवृत्तं सेवमानस्तु	बृह ११.४२
प्रवृत्ति वचनात् कुर्वन्	प्रजा १४६
प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च	बृह ११.३९
प्रव्रज्यावसितो राज्ञो	या २.१८६
प्रशंसावृत्तिको जीवेद्	औसं ८
प्रशस्तपात्रे चान्नन्तु	५.२८
प्रशस्ताचरणं नित्यम	अत्रिस ३६
प्रशस्तानीति नोचुर्हि	लोहि १७०
प्रशस्य कीदृशो विप्रो	बृ.गौ. १४.१०
प्रशासितारं सर्वेषां	मनु १२.१२२
प्रशासितारं सर्वेषां	बृह ११.५५
प्रश्ने द्वितीये देवा वै	कण्व ५२६
प्रसंस्पर्शाल्लोचनयो	औ २.२४
प्रसक्ते सति तैरेतच्छ्राद्ध	कपिल ६२
प्रसन्नांक्षीरिणो पुण्यां	वृ.गौ. ६.१६८
प्रसन्नात्माभवेत्कर्ता	आश्व ३.१३
प्रसन्नो नित्यमनेन	वृ हा ५.५६०
प्रसन्रजेति सूक्तं वै	वृ हा ८.१४
प्रसवं सूतकं प्राहुरशौचं	वृ परा ८.२
प्रसवे गृहमेधी तु न	पराशर ३.३०
प्रसवे च द्विजातीनां	वृ परा ८.४९
प्रसह्यघातिनश्चैव	या २.२७७
प्रसह्य दास्यभिगमे	या २.२९४
प्रसह्यहरणादुक्तो	नारद १३.४३
प्रसह्य हरणाद्राक्षस	बौधा १.११.८

ब्रह्मेश हरि सूर्याणां	वृ परा १०.३६२
ब्रह्मेशार्कहरीणां तु	वृ परा २.२६
ब्रह्मेनेति निहितन्नैव	वृ हा २.३७
ब्रह्मेनोज्माता वेदनिन्दा	मनु ११.५७
ब्रह्मेनौदने च श्राद्धे च	आप ९.२३
ब्रात्यताबान्धवत्यागो	मनु ११.६३
ब्रात्यात्तु जायते विप्रातन्	मनु १०.२१
ब्राह्मघ्नस्तु वनं गच्छेत	संवर्त १०९
ब्राह्मण कुले वा यल्लभेत	व १.१०.१८
ब्राह्मणः क्षत्रियं हत्वा	वृ परा ८.११७
ब्राह्मणक्षत्रियवशः	ब्र.या. ८.७४
ब्राह्मणः क्षत्रियविशां	प्रजा ४७
ब्राह्मणक्षत्त्रियविशां	बृ.य.४.३४
ब्राह्मणक्षत्रियविशां	व १.२१.१४
ब्राह्मणक्षत्रियविशां	नारद १३.४
ब्राह्मणक्षत्रियविशां	मनु ९.१५५
ब्राह्मण क्षत्रियाभ्यां तु	मनु ८.२७६
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वृद्धि	मनु १०.११७
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	वृ.गौ. १६.३
ब्राह्मणः क्षत्रियोवैश्य	व्यास १.५
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	शंख १.६
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	वृ हा ८.२९८
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	विष्णु २.१
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	पराशर ११.२५
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो	मनु १०.४
ब्राह्मणत्य परित्राणाद् गवां	या ३.२४३
ब्राह्मणत्वं कुतस्तस्य	भार १२.५१
ब्राह्मणन् स्वस्ति वाच्य	व १.१३.२
ब्राह्मणः पात्रतां याति	या ३.३३२
ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत्	औ १.२५
ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत्	मनु २.१२७
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं	शाण्डि ४.६७
ब्राह्मणं तदनुव्रज्य	ब्र.या. ३.७०
ब्राह्मणं दशवर्षं तु शतवर्षं	मनु २.१३५
ब्राह्मणं न परीक्षेत	व्या २७५
ब्राह्मणं न सगोत्रं च	वृ परा ७.११२
ब्राह्मणं भिक्षुकं वाऽपि	मनु ३.२४३
ब्राह्मणं भोज्येत्पश्चात्	व २.३.८
ब्राह्मणं स्वयमादाय	वृ.गौ. ११.२
ब्राह्मणम नृतेनाभिशंस्य	व १.२३.३३
ब्राह्मणराजन्यौ	व १.२.४४
ब्राह्मणवदात्रेय्या	बौधा २.१.१३
ब्राह्मणस्यैव कर्मैतद्	मनु २.१९०
ब्राह्मणश्चापि यस्तेषां	वृ.गौ. ९.१७
ब्राह्मणश्चेदधि गच्छेत्	व १.३.१५
ब्राह्मणश्चेद प्रेक्षापूर्व	व १.२१.१७
ब्राह्मणश्चैव राजा च	नारद १८.४०
ब्राह्मणः स भवेच्चैव	व्यास ४.४७
ब्राह्मणः सम्भवेनैव	मनु ११.८५
ब्राह्मणसुवर्णहरणे	व १.२०.४५
ब्राह्मणस्तु कृषिं कृत्वा	पराशर २.९
ब्राह्मणस्तु त्रिरात्रेण	आप ५.२
ब्राह्मणस्तु शुनः दृष्ट	औ ९.८२
ब्राह्मणस्तु शुना दष्टो	व १.२३.२६
ब्राह्मणस्तु शुना दृष्टो	वृ परा १.२
ब्राह्मणस्तु सुरापस्व	मनु ११.१५०
ब्राह्मणस्त्वनधीयान	मनु ३.१६८
ब्राह्मणस्य चतुः षष्टिः	मनु ८.३३८
ब्राह्मणस्य चतुष्षष्टिं	नारद १८.११०
ब्राह्मणस्य च यद्देयं	नारद २.९६
ब्राह्मणस्य चातुवर्णेषु	विष्णु १८
ब्राह्मणस्य तथा भुक्त्वा	शंख १७.४२
ब्राह्मणस्य तपो ज्ञानं	मनु ११.२३६
ब्राह्मणस्य तु देवस्य	बृ.गौ. १४.४२
ब्राह्मणस्य तु विक्रेयं	नारद २.६०
ब्राह्मणस्यतु सूक्तैश्च	वृ हा ५.३४८
ब्राह्मणस्य दशाहं	या ३.२२
ब्राह्मणस्य प्रवक्ष्यामि	पराशर १२.७
ब्राह्मणस्य ब्रह्महत्या	बौधा १.१०.१९
ब्राह्मणस्य मलद्वारे	यम ७

भ

भर्तुः शासनमुल्लंघ्य	वृ परा ७.१६८
भर्तुश्चित्यां समारोहे	वृ परा ७.१७७
भर्तृतो वा तदा तां तु	कपिल ५५१
भर्तृशासनमुल्लंघ्य	आंगिरस ६९
भर्तृशुश्रूषणं नार्याः परमो	लोहि ६५३
भर्तृहिते यतमाना	बौधा २.२.५४
भर्त्रा प्रीतेन यद्दत्तं	नारद २.२४
भर्त्रा सपिण्डता स्त्रीणां	वृ परा ७.१५४
भर्त्रासह मृता भार्या	वृ परा ७.१८९
भर्त्रा सह मृता या तु	वृ परा ७.१८७
भर्त्रा स्नानं नित्यमेव	लोहि ६४५
भर्मणेयं यतः साध्या	आपू ४५४
भल्लातकं कपित्थं	वृ हा ५.२४१
भल्लातकाश्वपर्णानां	वृ हा ५.२४८
भल्लेक्षणानिरत्नानि	भार ७.३७
भवतः श्रोतुमिच्छामो	व २७.१
भवति भिक्षांमे देहि	वृ परा ६.१६३
भवतीति पदं चोक्त्वा	आश्व १०.३७
भवत्कालेन निष्कर्ष	लोहि ४६५
भवत्पूर्वं चरेद् भैक्षं	औ १.५३
भवत्पूर्वं चरेद्भैक्षं	मनु २.४९
भवत्पूर्वां ब्राह्मणो भिक्षेत	बौधा १.२.१७
भवत्पूर्वां ब्राह्मणो	व १.११.५०
भवत्पूर्वां भिक्षामध्या	बौधा १.२.१६
भवत्ययं वायुसखा	लोहि १५३
भवत्यपि तथा त्यक्तपिता	आपू १०६३
भवत्येव ततो यत्ना	कण्व ३५७
भवत्येव न सन्देह	आपू १०५
भवत्येव न संदेह	कपिल २८८
भवत्येव न संदेह	कपिल ६१५
भवत्येव विशेषेण	कपिल ५३९
भवत्येव हि तत्पश्चात्	आपू १००८
भवदन्तास्तु वैश्यस्य	ब्र.या. ८.४३
भवंति कर्माण्येतानि	भार ८.१०
भवन्ति किल भूयोऽपि	लोहि २३१
भवन्ति चात्र श्लोकाः	शांख १२.१३
भवन्ति पितरस्तस्य	अत्रि ५.१८
भवन्ति पुत्रा शुभवंशा	वृ परा ११.३४७
भवन्ति वै मुक्तिरमा	कण्व ४५८
भवन्तो ह्यनुगृह्णन्तु	वृ गौ. १०.३६
भवन्त्यपि न संदेह	आपू ४१७
भवन्त्यल्पायुषस्ते वै	पराशर ५.२५
भवन्त्येवात्र सततमीः	लोहि ८०
भवत्येवावशतत्पूर्णी त्यवत	कपिल ३७०
भवन्त्येवेति सर्वत्र निर्विवादो	कपिल ११३
भवेच्चसुभगश्रीणां	वृ गौ. ७.७५
भवेजातिजातिसहस्रेषु	या ३.६४
भवेत् कर्मवशादेव	वृ या. २.१३१
भवेत्क्षीणततस्तस्मात्तत्कर्म	कपिल ६२४
भवेत् तु तत् क्षणात् उष्णम्	वृ.गौ. २.३५
भवेत्तु शैशवेऽत्यते	कपिल ६३५
भवेत्पत्युत्पत्ति कृता न	व २.५.६५
भवेत्स्वकर्ममात्रस्य भविता	नारा ८.६
भवेत् स्थण्डिलशायी वा	वृ.गौ. १६.३०
भवेदब्रह्म पत्नीक श्रोत्रिय	कपिल ६६२
भवेदपि प्रत्यवायी	आपू २५७
भवेदेव न संदेह	आपू ३१३
भवेदेव न संदेह	आपू ८२२
भवेदेव न सन्देह	कण्व ५९
भवेदेव न संदेह	कण्व १३१
भवेदेव न सन्देह	कण्व १०२
भवेदेव न संदेहो न	कण्व ७२
भवेदेव वारमेध्यो	कण्व ६७०
भवेदेवान्नाद भित्वा मुक्तोऽयं	कपिल ६१७
भवेदेवेतिनिखिला प्राहुस्ते	लोहि ४९
भवेद्दोषो नैव भवेदिति	कपिल ३८०
भवेद्विदेशगमनं संपन्नस्य	भार ९.४९
भवेन्नरस्तेन कृतेन	वृ परा ७.३७
भवेन्नित्याहिताग्निस्त्वं	कपिल ६६०
भवेयुरेव तस्मात्तु	आपू ७१८

भिक्षाप्रदानात्परतः तत्	कपिल ९४२	भुक्तवत्स्वथ विप्रेषु	मनु ३.११६
भिक्षांददाति यः साधु	आश्व १.१५२	भुक्तवान्विहरेच्चैव	मनु ९.२२१
भिक्षांदद्यात्प्रयत्नेन	व २.६.२०३	भुक्तशेषस्य भक्तस्य	वृ.गौ. ३.५४
भिक्षां वा भिक्षवे दद्यात्	शाण्डि ४.१०१	भुक्तिकाले दण्डनीयः	कपिल ८६६
भिक्षामनभिशस्तेषु	वृ परा ६.१६१	भुक्तिरेव विशुद्धिः स्यात्	नारद २.७९
भिक्षामप्युदपात्रं वा	मनु ३.९६	भुक्तेषु तेषु स्ववशो	वृ.गौ. ३.७४
भिक्षालब्धं च यद्द्रव्य	व २.३.१२१	भुक्तोच्छिष्टं समादाय	व २.६.२१६
भिक्षार्थिनं गृहस्थं च	कपिल ९३९	भुक्तोत्सृष्टं भगवता	शाण्डि ४.१५८
भिक्षार्थी च चरेद्ग्रामं	संवर्त ११०	भुक्त्युद्भवश्च तन्मध्ये	कण्व ६९५
भिक्षाव्रतं द्विजातीनां	वृ परा ६.१५९	भुक्त्वा गच्छति तत्	बृह ११.६
भिक्षुका बन्दिनश्चैव	मनु ८.३६०	भुक्त्वा चास्पृश्य	शाता ३.६
भिक्षुर्वैर्या न प्रस्थव	व १.२१.३६	भुक्त्वा चैव व्रतं तत्र	औ ९.३५
भिद्यते मुखवर्णोऽस्य	नारद २.१७४	भुक्त्वा चैव स्वयं	आश्व १.१६१
भिद्यन्ते कवचाघोरा	ब्र.या. २.१४	भुक्त्वा चैषा स्त्रियो	लघुयम ३४
भिन्दन्त्यवमता मंत्रं	मनु ७.१५०	भुक्त्वा चोभयतोदन्तं	शंख १७.२८
भिन्द्याच्चैव तडागानि	मनु ७.१९६	भुक्त्वा तु संकटे विद्यात्	कपिल ६११
भिन्नगोत्रस्य कथिता	कपिल ११८	भुक्त्वा तु सुखमास्थाय	दक्ष २.५१
भिन्नपाकादेवपूजादेश्च	कपिल २५४	भुक्त्वाऽतोऽन्यतम्	मनु ४.२२२
भिन्नभाण्डेतु योमुहूर्ते	वृ.गौ. १६.३८	भुक्त्वा त्रिरात्रं कुर्वीत	शंख १७.४८
भिन्नभावौ भवेतां तौ	वृ परा १२.३५२	भुक्त्वा नवेदहः	व्यास २.३०
भिन्नभिन्नाः प्रकर्तव्याः	आंपू ६९८	भुक्त्वान्ते दिवमासाद्य	नारा ५.१९
भिन्नभिन्नोपनयनाः वैश्य	कपिल २९८	भुक्त्वान्नं ब्राह्मणस्येह	अ १७
भिन्नं विशीर्णं तंतूर्णं	भार १६.३१	भुक्त्वा पलाण्डुं	शंख १७.२०
भिन्नवर्णास्तु सापिण्ड्य	औ ६.५५	भुक्त्वा पात्रे यतिर्नित्यं	ल हा ६.१९
भिन्नानि विकलाङ्गानि	शाण्डि ३.१००	भुक्त्वा पीत्वा च	औ २.१
भिन्ने पणे तु पंचाशत् पणे	या २.२५१	भुक्त्वा भोगान्	वृ हा ५.४०१
भिषक् मिथ्याचरन्	या २.२४५	भुक्त्वा मासञ्चरेदेत	औ ९.३०
भिषजा रोगिणा स्पृष्ट	भार १८.३६	भुक्त्वा शय्यागतः	वृ परा ८.१९९
भीतः अस्मि अहं महादेव ।	वृ.गौ. ५.६१	भुक्त्वोच्छिष्ट स्त्वना	आप ४.४
भीतमत्तोन्मत्त प्रमत्त	बौधा १.१०.११	भुक्त्वोच्छिष्टं तथा	पराशर ७.३४
भुक्तं चान्नं त्रयोदश्यां तै	ब्र.या. ९.१४	भुंक्ते सुखमास्थाय	ल व्यास २.८५
भुक्तं प्रतिगृहीतं	बौधा १.११.३१	भुंक्ते स याति नरकान्	ल व्यास २.६६
भुक्तं भगवता यद्यद्	शाण्डि ४.७२	भुजाद्यास्फालनं रज्जु	भार ८.४
भुक्तये सर्वभक्षादी (न)	कण्व ६०९	भुञ्जानो हि यदा विप्रः	पराशर ६.६३
भुक्तवत्सु च विप्रेषु	संवर्त १३४	भुज्यतेऽनागमं यत्तु न	नारद २.७७

म

मध्यमानामिकादर्भे	ब्र.या. २.३५
मध्यमेकेन होमेन देव	कपिल ६८१
मध्यमेन पलाशस्य	वृ परा ९.३०
मध्यमैः युवाभिः वालैः	वृ.गौ. ५.३०
मध्यसंध्या च कर्तव्या	कण्व २४७
मध्यस्थ स्थापितं	या २.४६
मध्यस्थ स्थापितं	वृ हा ४.२३२
मध्यांगुलेर्मध्यरेखा	भार ७.१०४
मध्याद्रिप्रस्थवाङ्मौना	भार १५.१४५
मध्यामध्यस्पृशंतोपि	ब्र.या. २.१९६
मध्याह्ने मृत्तिकास्नानं	विश्वा १.८८
मध्याह्नान्ते वैश्वदेवं	विश्वा ८.३७
मध्याह्ने च पुनः स्नायाद	आश्व १.७५
मध्याह्नचलितो भानुः	वृ परा ७.९७
मध्याह्ने चैव सावित्री	ब्र.या. २.४६
मध्याह्ने तु गते सूर्ये	वृ परा ७.९५
मध्याह्ने ब्रह्मयज्ञो वै	आश्व १.१०६
मध्याह्नो नापाराह्न स्यात्	लोहि ६४७
मध्ये तु पावनो देशो	वृ परा १.४३
मध्ये तु भास्करं स्थाप्य	ब्र.या. १०.९७
मध्ये तु मधुपर्कार्थे	व २.६.८८
मध्येतु वारुणं कुम्भं	वृ हा ५.१२०
मध्ये तु विषुवं ज्ञेयं	वृ परा ६.१००
मध्ये तेषां तुलादीनां	कपिल ९०५
मध्ये ब्रह्मसमारोप्य	ब्र.या. १०.८७
मध्ये शाकुटकादीनी	आंपू ५२९
मध्येस्कन्धभुजाभ्या	वाधू १३८
मध्ये स्थाप्य	ब्र.या. १०.१०६
मध्यक्षद्वन्निति मंत्रं	आश्व २३.६९
मध्यवाज्यतिलमिश्रेण	व २.६.३७२
मध्वाज्यं दधि संयोज्य	शाण्डि ४.३९
मध्वाज्यशर्करायुक्तं	शाता ६.१८
मध्वासव मधूच्छिष्ट	वृ परा ६.२८३
मनः प्रसादजननं	बृ.या. ७.१२६
मनः प्रसादनं कुर्यात्	शाण्डि १.१८
मनः शुद्धिरन्तः शौचम्	बौधा १.५.३
मनः शौचं कर्मशौचं	बृ.गौ. २१.९
मनश्चैतन्य युक्तोऽसौ	या ३.८१
मनः सन्तापकरणं	वृ हा ६.२९२
मनसश्च परा बुद्धि	बृह ९.१.८५
मनसश्चात्मनश्चैव	दक्ष ७.१४
मनसश्चन्द्रमा जातः	या ३.१२८
मनसः संयमः तज्ज्ञैः	शंख ७.१४
मनसा कर्मणा वाचा	वृ.गौ. १०.१३
मनसा केवलं रात्र्यां	शाण्डि ५.२६
मनसा गणनापूर्वं	विश्वा ३.४२
मनसा नैत्यकं कर्म	कात्या १९.२
मनसाऽपि जलेनापि	वृ हा ८.२७२
मनसापि न कुर्वीत	आंपू ९७
मनसापि हि दुष्टास्त्री	वृ परा ६.५१
मनसा भर्तुरतिचारे	व १.२१.७
मनसि वाऽर्चयित्वास्मिन्	वृ हा ४.१३३
मनसीन्दुं दिशः श्रोते	मनु १२.१२१
मनः सृष्टिं विकुरुते	मनु १.७५
मनसेत्यादि मंत्रेण	व २.६.५
मनसैवार्चयित्वाऽथ	वृ हा ५.२५४
मनसैवार्च्चयेद्देवं	वृ हा ३.४०
मनसैवोपचाराणि	वृ हा ३.२२८
मनस्था (खानि) स्थिरां	विश्वा ८.२०
मनिवर्ती यथा श्येनो	का १०
मनुना चैवमेकेन	पराशर १.५१
मनुः पुत्रेभ्यो दायं	बौधा २.२.२
मनुः प्रजापतिः यस्मिन्	नारद १.१
मनुः भृगुः वशिष्ठश्च	वृ हा ५.३
मनु मेकाग्रमासीनं	मनु १.१
मनुर्वा याज्ञवल्क्यस्तु	वृ परा ८.६०
मनुष्यतर्पणं चैव स्नान	वाधू ६२
मनुष्यं ब्रह्मयज्ञञ्च	ल व्यास २.५१
मनुष्यमारणे क्षिप्रं	मनु ८.२९६
मनुष्यविषशास्त्राम्बु	नारद २.१६५

मातामह्या सहेच्छंति वृ परा ७.१३४
माता मातृष्वसा श्वश्रूः नारद १३.७३
माताम्लेच्छत्व देवल ५९
माता रुद्राणा मिति व २.६.३५९
मातुः पत्नीं स्वभगिनी ब्र.या. १२.५७
मातु पारिणेयं स्त्रियो व १.१७.४३
मातुः पितृश्वसुः पुत्रा ब्र.या. ८.१४९
मातुः प्रथमतः पिडं मनु ९.१४०
मातुः प्रथमतः पिण्डं लिखित ५५
मातुः प्रथमतः पिण्डं कात्या १६.२३
मातुः प्रथमतः पिण्डं लघुशंख २१
मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मनु २.१६९
मातुरग्रे प्रमीतिः स्याद् दा १२६
मातुरेकोपविष्टस्य आश्व ९.८
मातुरित्येके तत् बौधा १.५.१२६
मातुर्मातामहीं चापि वृ.गौ. ८.६३
मातुर्निवृत्ते रजसि नारद १४.३
मातुर्यदग्रे जायन्ते या १.३९
मातुलंकारं दुहितरः बौधा २.२.४९
मातुलत्वपितृव्यत्व आंपू १२८
मातुलपितृष्वसा भगिनी बौधा २.२.७१
मातुलश्वशुरभ्रातृ औ १.२७
मातुलः श्वशुरो बन्धुरन्यो वृ परा १२.५७
मातुलस्य सुतां वाऽपि औ ९.४
मातुलस्य च पौत्रीं व २.४.१०
मातुलस्यस्नुषा कन्या कपिल ६१०
मातुलांश्च पितृव्यांश्च मनु २.१३०
मातुलांश्च पितृव्यांश्च औ १.४३
मातुलानीं सगोत्राञ्च पराशर १०.१४
मातुलानीं सनाभिञ्च संवर्त १५७
मातुलान्यान्तु गमने शाता ५.३०
मातुलिंगं नारिकेलं आश्व ३.९
मातुले पक्षिणीं रात्रिं शंख १५.१६
मातुः श्राद्धं तु पूर्वस्मात् लगुशंख ३२
मातुः श्राद्धं तु पूर्वं लिखित ४८
मातुः श्राद्धं तु पूर्वं दा ८३
मातुः श्राद्धं पृथक् आंपू ६६३
मातुः सपत्नी सार्वभौमी वृ हा ६.१८५
मातुः सपिण्डीकरणं कात्या १६.२१
मातुः सपिण्डीकरणं लघुशंख १९
मातुस्तु यौतकं यत्स्यात् मनु ९.१३१
मातृगामी भवेद्यस्तु शाता ५.१
मातॄणां च पितॄणां च वृ परा ७.३७४
मातॄणां पूजनम्पूर्वं ब्र.या. ८.३४५
मातृत्वकार्यका (क) रणे आंपू १०४०
मातृपक्षाणं तर्पणं शंख १३.११
मातृपाकं तु भुजीमात् व्या २२३
मातृ-पितृनुपाध्यायान् वृ परा ६.२५१
मातृपितृ पराश्चैव प्रजा ७१
मातृ पितृपरे चैव अत्रिस ३४०
मातृभिः पितृभिः च एव वृ.गौ. ५.२२
मातृपित्रतिथिभ्रातृ या १.१५७
मातृर्मातृष्वसृःश्वश्रू बृ.या. ७.८६
मातृवत् परदारांश्च आप १०.११
मातृवद् वृत्तिमातिष्ठेन औ ३.३३
मातृघ्नश्च पितृघ्नश्च आप ९.३०
मातृवर्गादितः कुर्यात् आश्व १८.५
मातृवर्गेण तुलितं तत्पत्नीं लोहि ३०१
मातृवर्गो यत्र पूर्वं आंपू ६६८
मातृश्राद्धं द्विजः कुर्याद् वृ परा ५.७९
मातृष्वसां तथा चापि वृ.गौ. ८.६२
मातृष्वसा मातुलानी औ ३.३१
मातृष्वसां मातुलानीं औ ९.२
मातृष्वसा मातुलानी मनु २.१३१
मातृष्वस्रभिगमने वामांगे शाता५.३१
मांत्रं पार्थेवमाग्नेयं वृ परा २.८५
मात्रा च स्वधनं दत्तं नारद १४.७
मात्रादि गमन पातक वर्णनम् विष्णु ३४
मात्रादित्रयसाम्येन तर्पणे कपिल ७२५
मात्रा द्वादशकं प्रोक्तं ब्र.या. २.४९

मृताहस्तादृशः क्लृप्तः	आंपू ६३५
मृताहस्य परित्यागे	आंपू १५०
मृताहोऽलङ्घनीयः स्याद्	आंपू ६३२
मृते जीवति या पत्यौ	या १.७५
मृतेजीवति वा पत्यौ	वृ हा ८.१९६
मृते पितरि कुयुस्तं	या २.१३७
मृते पितरि वै पुत्रः	औ ७.१९
मृते भर्त्तरि नारीणां	व २.५.८३
मृते भर्त्तरि या नारी	दक्ष ४.१९
मृते भर्त्तरि या नारी	अंगिरस २१
मृते भर्त्तरि या नारी	वृ हा ८.२०३
मृते भर्त्तरि या नारी	पराशर ४.२६
मृते भर्तरि यानारी	व २.६.४७०
मृते भर्तरि या प्राप्तान्	नारद १३.५१
मृते भर्तरि साध्वी स्त्री	मनु ५.१६०
मृते भर्तरि तूष्णीकं सर्व	लोहि ५७७
मृते भर्तरि या नारी	वृ परा ७.३६१
मृते भर्तरि या याति	वृ परा ७.३७०
मृते भर्तर्यपुत्रायाः	नारद १४.२७
मृते वा स्वाममिन पुनः	नारद १२.१८
मृतेस्तस्य परं प्रोष्य	आंपू १०६०
मृतेऽहनि तु कर्तव्यं	दा २५
मृतेऽहनि तु कर्तव्यं	औ ५.९३
मृतेऽहनितु कर्त्तव्यं	ब्र.या. ७.२
मृत्तिकयास्थाप्यवरुणं	ब्र.या. १०.१०२
मृत्तिका गोशकृत दर्भा	व्या २४
मृत्तिका गोशकृद्भानु	व्या १७०
मृत्तिका च समाविष्टा	ल व्यास २.१३
मृत्तिका पृथिवीन्यस्य	ब्र.या. १०.९०
मृत्तिकाभक्षणं चैव	दा ५६
मृत्तिकां गोशकृद्भानुपवीतं	संवर्त ८४
मृत्काष्ठोपललौहेषु	ब्र.या. ५.२६
मृत्तिकाः सप्त न ग्राह्या	अत्रिस ३१८
मृत्तिकेहनमन्त्रादि कृत्वा	कण्व १२९
मृत्तिके हरमे पापं	वृ परा २.१३०
मृत्तोयैः शुध्यते शोध्यं	मनु ५.१०८
मृत्तोयैः शुद्ध्यतेशोध्यं	बृह ११.४९
मृत्पात्रसंपुटं कृत्वा	कात्या २३.१२
मृत्यकाले मतिर्या स्यात्तां	वृ परा १२.३५५
मृत्युञ्च नाभिनन्देत	संवर्त १०५
मृत्युभीतैः पुरा देवैः	वृ परा २.४१
मृत्युं समधिगच्छेच्चेन्	शंख १५.७
मृत्युस्थानानि चैतानि	वृ परा ८.१३६
मृत्योरिति उरौन्यस्य	ब्र.या. २.१२९
मृत्स्ना तथाकांस्यं	ब्र.या. ४.५६
मृदकूले च नद्यांतु	व २.६.१५
मृदंग पटहादीनाम	वृ परा ११.९७
मृदञ्च गौमयं चैव	वृ.गौ.८.२१
मृदन्तरेण भूयश्च पूरयेत्तां	लोहि ६१२
मृदं गां दैवतं विप्रं	मनु ४.३९
मृदं यज्ञोपवीतं च	व्या २६
मृदम्बुभिः स्वहात्राणि	वृ परा २.१२२
मृदाकुं काक संसर्गं	वृ परा ११.१०३
मृदा चेलानाम्	बौधा १.५.४४
मृदा जलेन शुद्धिः स्यान्न	दक्ष ५.१०
मृदा शुभ्रेण च तथा	व २.३.४९
मृदा शुभ्रेण सततं	वृ हा २.५०
मृदुम्बुयोगजं सर्व	वृ परा ५.१४०
मृदैकया शिरक्षाल्य	ल व्यास २.१२
मृद्गोमयतिलान् दर्भान्	बृ.या. ७.३
मृद्दारुशैललोहानां	वृ हा ४.१८०
मृद्भाण्डदहनाच्छुद्धिः	पराशर ७.२८
मृद्भाण्डासनखट्वाः	नारद १५.१३
मृद्भिरद्भिरनालस्यं	वृ परा ६.२१४
मृद्भिरद्भिश्च चरणौ	बृ.या. ७.७
मृद्भिरभ्युद्धृतैरद्भिर्य	व २.३.९२
मृद्भिश्च शोधयेच्चुल्लीं	व्यास २.२४
मृषैव यावकान्नेत्रे	औ ९.८९
मृष्यन्ति ये चोपपतिं	मनु ४.२१७
मेखलाकिंकिणी माला	वृ परा ११.१३६

मौनात्सौभाग्यम्	व १.२९.५
मौनिन्मधोमुखी चक्षु	व्यास २.३९
मौलाञ्छास्त्रविदः शूरा	मनु ७.५४
म्रियते च परार्थेषु	ब्र.या. १२.४
म्रियमाणोऽप्याददीत न	मनु ७.१३३
म्लेच्छ चण्डाल पतित	वृ हा ६.२६३
म्लेच्छदेशे तथा रात्रौ	शंख १४.३०
म्लेच्छ–लूताशनास्पर्शे	वृ परा ८.३१२
म्लेच्छव्याप्तानि सर्वाणि	वृ परा १२.१०९
म्लेच्छान्त्यश्वपच	नारा ५.८
म्लेच्छान्नं म्लेच्छ	देवल ४४
म्लेच्छैर्नीतेन शूद्रैर्वा	देवल १२
म्लेच्छैः सहोषितो	देवल ५५
म्लेच्छैः हृतानां	देवल ४५
म्लैच्छं हौणं कौङ्कणं	लोहि ३९६

य

य आतृणत्यवितथेन	व १.२.१६
य आत्मत्यागिन	व १.२३.१४
य आत्मत्याग्यभिशालो	व १.२३.११
य आत्मव्यतिरेकेण	दक्ष ७.११
य आवृणोत्यवितथं	मनु २.१४४
य आहवेषु वध्यन्ते	या १.३२४
य आहूय द्विजाग्रयाय	वृ परा १०.३०
य इदं धारयिष्यन्ति	अत्रिस ३९७
य इदं धारयिष्यंति	या ३.३२९
य इदं श्रृणुयाद्वापि	वृ परा १२.३७६
य इदं श्रृणुयाद् भक्त्या	वृ हा ८.३४४
य इदं श्रावयेद् विप्रान्	या ३.३३३
य उत्पाद्येह सस्यानि	वृ परा ५.१०४
य एतावन्त एतेन	वृ परा ११.११९
य एताव्याहृतीर्हुत्वा	वृ हा ३.८९
य एते कथिताः सद्भिरन्ये	कण्व ३९
य एते तु गणा मुख्या	मनु ३.२००
य एतेऽन्ये त्वभोज्यान्नाः	मनु ४.२२१
य एतेऽभिहिता पुत्रा	मनु ९.१८१
य एतै (स्सह) संयोगी	नारा १.११
य एव धर्म्मो नृपते	या १.३४२
य एवमभ्यसेन्नित्यं	वृ परा ४.६८
य एवमेनं विन्दन्ति	या ३.१९२
य एवं कुरुते राजा	अत्रिस २७
य कण्टकैर्वितुदति	या ३.५३
यः करोति सुभामिष्टं	वृ हा ७.१३७
यः करोत्येकरात्रेण	पराशर ७.१०
यः करोत्येकरात्रेण	बृ.म. ३.१२
यः कर्म कुरुते विप्रो	वृ हा ५.२१
यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो	बृह १२.२०
यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो	मनु २.७
यः कश्चित् कुरुते धर्मं	ल हा ३.३
यः कश्चिदर्थो निष्णात	या २.८६
यः कुर्यात् तु बलात्	वृ हा ४.१९२
य कुर्यादाहुतः पञ्च	बृ.गौ. १३.११
यः कृष्णाजिनमास्तीर्य	वृ परा १०.१३९
य कोऽपि भूमिदानं तत्तेभ्य	कपिल ५१६
य कोरोति नरश्रेष्ठ	वृ.गौ. ७.६१
य क्वचिन्मानवो लोके	आश्व १.१८९
यः क्षत्रियस्तथा वैश्यः	यम ८
यक्षरक्षः पिशाचांश्च	मनु १.३७
यक्ष–रक्ष–पिशाचाद्या	वृ परा ११.१२६
यक्षरक्ष– पिशाचान्नं	मनु ११.९६
यक्षरक्षः पिशाचान्न	वृ हा ६.२७४
यक्षराक्षस भूतानामर्चनं	वृ हा ६.१७६
यज्ञराक्षसभूतानां	वृ हा ७.१९२
यज्ञराक्षसभूतानि	बृ.या. ७.१४१
यक्षराक्षसवेतालग्रह	भार ६.१६७
यः क्षिप्तोमर्षयत्यार्तै	मनु ८.३१३
यक्ष्मासान् कामयेन्	अत्रिस १६५
यक्ष्मी च पशुपालश्च	मनु ३.१५४
यक्ष्य इत्येतद्वाक्येन	आंपू २७०
यक्ष्यत्यन्योऽश्वमेधेन	वृ परा ६.१९४
यक्ष्यमाणं निवोध्वं	वृ परा ८.५

यन्विदं कारकं कुर्यात्	वृ परा ६.२५४
यं इदं धारयेद्विप्र	बृह १२.४८
यं कट्यां तारकावर्णी	वृ परा ४.८२
यं तु कर्मणि यस्मिन्	मनु १.२८
यं तु पश्येन्निधिं राजा	मनु ८.३८
यं दक्षिणस्थितं पिण्डं	आंपू ९८३
यः पठेत् स्वरहीनं	वृ परा ६.३७१
यः पठेद् विधिवत	वृ परा ६.३६९
यः पठेन्मामकं धर्म	बृ.गौ. २२.३२
यः परार्थेपहरति स्वां	नारद २.२०४
यः पश्येत् श्रृणु	वृ परा १२.१९१
यः पापात्मा येन सह प्रायश्चित	विष्णु ५४
यः पिता स च वै	वृ परा ६.२००
यः पिता स तु पुत्रः	वृ परा ६.१९१
यः प्रत्यवसितोविप्रः	यम ४८
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ६.८९
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ७.३३
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ७.३८
यः प्रवृत्ता श्रुतिं सम्यक्	वृ.गौ. ११.४
यः प्रहारं द्विजेन्द्राय	वृ.गौ. ४.४८
यं प्राप्य विन वर्नन्ते	बृ.या. २.१३५
यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायां	मनु ९.१७८
यं मातापितरौ क्लेशं	मनु २.२२७
यं यज्ञसंघैस्तपसा	पराशर ३.४४
यं यं कामयते चित्ते	वृ हा ३.२०१
यं यं कामयते चित्ते	वृ हा ३.३६३
यं यं पश्यति चक्षुर्म्यां	वृ परा ४.९८
यं वदन्ति तमोभूता	मनु १२.११५
यं वाय्वात्मने गन्धान्	विश्वा ३.१८
यं हि व्रतानां वेदानां	बृ.या. ७.३२
यं हे त्वाहतिसूक्तेन	वृ हा ७.१३०
यमगीतं चात्र श्लोकं	व १.११.३३
यमदीपं त्रयोदश्यां देतावित्र्य	ब्र.या. ९.५५
यम द्वारे पथे क्षेत्रे	ब्र.या. ११.२७
यमर्थं प्रतिभूर्दद्याद्	नारद २.१०४
यमर्थमभियुंजीत न तं	नारद १.४९
यमश्च धर्मराजश्च	वृ परा २.१९६
यमसूक्तं यमीं गाथां	या ३.२
यमसूक्तेन कुर्वीत	शाता ६.२२
यमः स्कन्दो नैर्ऋतश्च	वृ हा ४.१७१
यमान् सेवेत सततं	अत्रिस ४७
यमान्सेवेत सततं न	मनु ४.२०४
यमायः सानुगायाथ	वृ परा ७.३१५
यमाय सोमेति यमनैर्ऋतं	वृ हा ८.६७
यमायाथ च चित्राय	आश्व १.१५६
यमिद्धो न दहत्यग्निरापो	मनु ८.११५
यमेन पूजिता यान्ति	वृ.गौ. ५.८५
यमेव तु शुचिं विद्यान्नियतं	मनु २.११५
यमेव विधा शुचिमप्रबलं	व १.२.१५
यमेव ह्यतिवर्तेरन्नेते	नारद १६.१२
यमैश्च नियमैश्चैव	बृह ९.३५
यमोपि महिषारूढो	शाता २.१८
यमोवैस्वतो देवो	मनु ८.९२
यया कया च विधया	आंपू ६५
यया कया संख्याया	आंपू ६९२
यया रामेश्वरी तारा	ब्र.या. १०.७७
ययिच्चेत्पीटकंशत्रो	बार ९.४४
यरैभ्युपायैरेनांसि	मनु ११.२११
यवगोधूमजाः सर्वे	शंख १७.३४
यव पिष्टेन निर्वाप्य	वृ परा ११.९८
यवस[illegible]तावदूढव्यो	दा १००
यवसन्नाववोटव्यो	लघुशंख ५१
यव सिद्धार्थकाश्चैव	ब्र.या. ८.१९५
यवाग्वाः पयसो वापि	आंसू २८५
य वाद्य संस्कृतान्नेन	वृ परा ७.७४
यवान् विधि तोपनोपयुंजान	व १.२७.१५
यवासंगुड़मेधाज्यनार्द्रकं	व २.६.३०२
यवीयाञ्ज्येष्ठभार्यायां	मनु ९.१२०
यवैर न्ववकीर्याथ भाजने	या १.२३०
यवैरमन्त्रकं नित्यं	लोहि १७

यस्य संवत्सरार्वाक्	दा ३२
यस्य संवत्सरादर्वाक्स	लिखित २३
यस्य संवत्सरादर्वाक्	ब्र.या. ७.४
यस्य संवत्सरादर्वाक्	वृ परा ७.३४४
यस्य स्तेनः पुरे नास्ति	मनु ८.३८६
यस्य स्मृत्या च	आश्व २३.१०८
यस्याकाशमयं कौष्ठ	बृह ९.१७
यस्याग्नावन्यहोमः	कात्या १८.१८
यस्माद् अद्भुतानि	वृ परा ११.८९
यस्यान्नं तस्यते पुत्रा	अत्रिस ५.१२
यस्या म्रियेत कन्याया	मनु ९.६९
यस्यां दिशि बलिं दद्यात्	कात्या २८.६
यस्याः शिरसि ब्रह्माऽऽस्ते	वृ परा ५.११
यस्यास्ति भीति पुरुषस्य	वृ परा ९.४२
यस्यास्तु न भवेद् भ्राता	मनु ३.११
यस्यास्तु न भवेद् भ्राता	लिखित ५३
यस्यास्ते कुम्भितागऽजस्रं	वृ परा १२.२१९
यस्याः स्यात्कांक्षित	लोहि ५९३
यस्यास्येन सदाऽश्नंति	मनु १.९५
यस्येदमायुधं नास्ति	बृ.या. ७.१६०
यस्यैतल्लक्षणं नास्ति	दक्ष १.१४
स्यैताः कपिला सन्ति	वृ.गौ. १०.१८
यस्यैतानि न कुर्वीत	दा २६
यस्यैतानि न कुर्वीत	लघुशंख १३
यस्यैतानि न कुर्वीत	शंख १६
यस्यैतानि सुगुप्तानि	ल हा ३.११
यस्यैते निखिलादिव्या	लोहि ५७४
यस्योचुः साक्षिणः	या २.८१
यः स्वकर्म परित्यज्य	दक्ष २.३
यः स्वधर्मपरोनित्यं	औ ७.२३
यः स्वधर्मे स्थितो राजा	वृ परा १२.८७
यः स्वयं नियतो भूत्वा	औ ३.९५
यः स्वयं साधयेदर्थं	मनु ८.५०
यः स्वाध्यामधीतगऽब्दं	मनु २.१०७
यः स्वामिनाऽननुज्ञातं	मनु ८.१५०
यस्सन्ध्यां कालतः प्राप्तां	विश्वा १.३०
यांस्तत्र चोरान् गृह्णीयात्	नारद १८.६५
या अन्या देवताः काश्चित्	वृ परा ५.१२
या आहृता एकवर्णे	या १.२८०
या ओषधी सर्वौषधी	ब्र.या. ८.१९३
या करोति शिरःस्नानं	लोहि ६५१
याकारस्तु शिरः प्रोक्तं	वृ परा ४.९७
या काश्चिद्देवता श्राद्धे	वृ परा ७.२७७
या कौमारं भर्तारं	व १.१७.२०
यागं दानं च योगं च	व्या १९८
या गर्तादौ विपद्येत	वृ परा ८.१४५
या गर्भिणी संस्कियते	बौधा २.२.२९
या गर्भिणी संस्क्रियते	मनु ९.१७३
यागस्थक्षत्रविड्घाती	या ३.२५०
यागस्थं क्षत्रियं हत्वा	शंख १७.४
याचकानां दरिद्राणामपि	कण्व ५८०
याचकान्नं नवश्रद्धमपि	आंगिरस ६५
या च क्लीबं पतितं	व १.१७.२१
याचनेनापि वर्त्तेत दैन्यं	शाण्डि ३.२०
याचयेत् प्रथमां भिक्षा	आश्व १०.३६
या च सप्रधनैव स्त्री	नारद २.१८
याचिता तत्र या भिक्षा	आश्व १०.३९
याचितो यः तु वै	वृ.गौ. ३.४८
याचेद्दण्डप्रमाणेन	शाता १.२४
या चैषा कपिला देया	वृ.या. ९.२
याच्चिद्धित्यादिपंच	भार ६.१३९
याच्यमानस्तु यो दात्रा	नारद ३.४
याजकान्नं नवश्राद्ध	आप ९.२२
याजनं योनिसम्बन्धं	औ ८.३
याजनं योनिसंबंधं	देवल ३४
याजनाध्ययने राज्ञो	पु १०
याजनाध्यापनाद्यौनात्	अत्रिस ३.८
याजनाध्यापनाद्यौनात्	व १.२७.९
याजनाध्यापने दाने	वृ हा ६.४३५
याजनाध्यापने नित्यं	मनु १०.११०

योनिवक्त्रद्वयोपेतं वृ परा ११.२७४
यो निवेदयते मोहाद्देवाय आंपू २४२
योनिषु च गुर्वी सखी व १.२०.१८
योनिसंकरसंकीर्णा व्यास ४.७०
योनौ श्रियः श्री परमस्तेन वृ हा ३.१०७
योन्नं वादर्धुषिकस्याद् वृ परा ६.२८७
योन्यतः कुरुते यत्नं व्यास १.२९
योन्यत्र कुरुते यत्नं औ ३.८०
योन्यथा संतमात्मान् मनु ४.२५५
योपचस्य कदर्यस्य वृ परा ६.१८६
योप्यन्तिके दवीयांश्च वृ परा १२.२९५
यो बन्धनवधक्लेशान् मनु ५.४६
यो ब्रह्मचर्य व्रतचारिभेदो वृ परा १२.१७४
यो ब्रह्मचारी विधिना ल हा ३.१५
यो ब्रह्मचारी स्त्रियमुपेयात् बौधा २.१.३५
यो ब्रह्मघाती गुरुदारगामीवृ परा ११.२९५
ये ब्रह्ममेधानध्यायी कण्व ३९१
योभार्यः सम्बलं चेतः प्रजा ७५
योभियुक्तः परेतः या २.२९
यो भुङ्क्ते अन्यथा वृ.गौ. १६.४१
यो भुङ्क्तेनुपनीतेन यो बृ.गौ. १६.४०
यो भुंक्ते हि च शूद्रान्नं अंगिरस ४८
यो भुञ्जानोशुचिर्वापि लघुयम २
यो भ्रातरं पितृसमं औ १.४०
यो मन्येताजितोस्मीति कपिल ८२३
यो मन्येताजितोस्मीति या २.३०९
यो मामदत्वा पितृदेवताभ्यो बौधा २.३.२२
यो मूर्खो विशादाचार ६.२२३
यो मोहादथवालस्या वाधू २२२
यो यजेत तैर्वृथा पूजा भार १४.२६
यो यज्ञे वर्तमाने तु वृ परा ६.५
यो यत्तु वैष्णवं लिंग वृ हा ५.२८
यो यत्र यत्र वा रेतः वृ. गौ. ४.११
यो यत्रावाहिता श्राद्धे ब्र.या. ४.७३
यो यथा निक्षिपेद्धस्ते मनु ८.१८०

यो यदैषां गुणो देहे मनु १२.२५
यो यस्य धर्म्यो वर्णस्य मनु ३.२२
यो यस्य प्रतिभूस्तिष्ठेद् मनु ८.१५८
योय स्यभिहितो धर्मः ल हा ७.१७
यो यस्यहरते भूमिं वृ परा ८.२६८
यो यस्यैषां विवाहानां मनु ३.३६
यो यस्यविहितो धर्म व्या ३०
यो यावत् कुरुते या २.१९९
यो यावन्निहनुवीतार्थं मनु ८.५९
यो येन पतितेनैव लिखित ७४
यो येन पतितेनैषां मनु ११.१८२
यो येन सम्वसेत्तेषां वृ हा ६.२११
यो यो वर्णोपहीयेत यो नारद १८.६
योरक्षन्बलिमादत्ते मनु ८.३०७
यो रथं हयसंयुक्तं वृ परा १०.१५१
योरयीत्यनुवाकेन वृ हा ५.३८२
यो राज्ञः प्रतिगृह्णाति मनु ४.८७
यो राज्ञः प्रतिगृह्यैव वाधू १६३
यो रुप्यं उत्तमं दद्याद् वृ परा १०.२१४
योर्चितं प्रतिगृह्णाति मनु ४.२३५
योर्थं श्रावयितव्य स्यात् नारद २.१४१
योलक्षकोटिंविदधाति वृ परा ११.२९४
यो लक्षहोमं यदि वृ परा ११.३४६
यो लोभादधमो जात्या मनु १०.९६
योलोभादसवर्णानामाद्य प्रजा ९१
योवमन्येत् ते तूभे बृह १२.२९
योवमन्येत ते मूले मनु २.११
यो वर्जयेदनध्यायान् वृ परा ६.३६७
यो वः शिवतमोरसस्तस्मा ब्र.या.८.१११
यो वा प्रथममुपगतः बौधा २.३.१६
यो वित्त प्रतिगृह्णीते वृ.गौ. ११.२९
यो विप्रो धनलोभेन नारा १.३९
यो विष्णुशेषमात्मानमन्यशेष व २.१.१०
यो वैश्यः स्याद् बहु मनु ११.१२
यो वै समाचरेद् विप्रः पराशर ४.७

ललाटादि शुभाङ्गेषु	व २.७.१७
ललाटादिषु चांगेषु	वृ हा ८.२३३
ललाटे कर्णयोरक्ष्णोः	ब्र.या. १०.१५
ललाटे केशवं ध्यायेन्	व २.३.५१
ललाटेग्रे स्थित देवी	वृ परा ५.३६
ललाटदेशाद् रुधिरं	पराश ३.४३
ललाटे पृष्ठयो कण्ठे	वृ हा २.७३
ललाटै यैः कृतं नित्यं	व्या ३८
लवणं क्षीर संयुक्तं	ब्र.या. २.१८६
लवणं च कटुद्रव्यं	विश्वा ८.२
लवणं चोदकं हित्वा	शाण्डि ४.८९
लवणं तिलकार्पासं	वृ हा ४.१५३
लवणं मधु तैलञ्च	पराशर १.६३
लवणं मधु तैलं च	वृ परा ४.२२३
लवणं मधु मांसश्च	कात्या २७.६
लवणानां गुडानां च	शंख १७.१८
लवणेक्षुसुरासर्पिद	ब्र.या. १०.१२८
लवणोदकं ततः क्षीरोदं	शंख १.३.७
लशुनपलाण्डुकेमुकगृंजन	व १.१४.२८
लशुनं गृंजनं चैव	मनु ५.५
लाक्षाकृष्णागरु सर्पिः	भार १४.३१
लाक्षालवणमांसानि	या ३.४०
लाक्षालवणसंमिश्रं कुसुम्भं	अत्रिस ३७७
लांगलं प्रवीर वद्वीर	व १.२.४०
लांगुलं संम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ५.६०
लांगूले कृच्छ्रपादन्तु	पराशर ९.१८
लाजाहुतीदशाप्रोक्ता	ब्र.या. ८.२३०
लाजैः हरिद्राचूर्णेश्च	वृ हा ५.४९७
लाभपूजानिमित्तं हिं	दक्ष ७.३८
लाभार्थो वणिजां सर्वे	नारद ९.११
लाभालाभौ च सततं	लोहि ५.८६
लालनीया सदा भार्य्या	शंख ४.१५
लालास्वेदसमाकीर्णः	वाधू ६८
लावण्य तित्तिरिशकुन्त	प्रजा १३७
लिखितं साक्षिणश्चात्र	नारद १.३
लिखितं बलवान्नित्यं	नारद २.६६
लिखितं लिखितेनैव	नारद २.१२२
लिखितं साक्षिणो भुक्ति	नारद २.६५
लिखितं साक्षिणो भुक्ति	व १.१६.७
लिंगं वा सवृषणं	बौधा २.१.१६
लिंगस्यच्छेदने मृत्यै	या २.२२९
लिङ्गानां वचनानां	कण्व २०५
लिंगेप्यत्र समाख्याता	दक्ष ५.८
लिप्यते न स पापेन	वृ परा ४.३१
लुठन्नमहीतले तूष्णी	कण्व४३१
लुप्तं सूर्यं समालोक्य	विश्वा ७.१९
लूता विप्लव शीतलोश्च	ब्र.या. ७.५४
लूताहि सरटानां च	मनु १२.५७
लेखं यच्चान्यनामांकं	नारद २.१२१
लेखयित्वा च संपूज्य ध्याना	कपिल ३२५
लेखयेद् वर्णकैः स्वैः स्वैः	वृ परा ११.५८
लेखितः स्मारितश्चैव	नारद २.१२७
लेखे देशान्तरन्यस्ते	नारद २.११९
लेख्यं तु द्विविधं ज्ञेयं	नारद २.११२
लेख्यं देयं दद्यादृणे शुद्धे	नारद २.९९
लेख्यस्य पृष्ठेभिलिखेद्	या २.९५
लेपगन्धापकर्षणे	व १.३.४७
लेपभागश्चतुर्थाद्या	व्या१ ७६
लेपयदयतीरस्थ	ल व्यास २.१४
लोकत्रयहितार्थाय	विष्णु म २४
लोकनिस्तारणार्थन्तु सा	वृ.गौ. १०.४३
लोकपालांस्तथावाहा	कण्व ६२७
लोकप्रकाशकश्चैव	भार ११.५८
लोक संव्यवहारार्थं या	मनु ८.१३१
लोक संग्रहणार्थं यथा	बौधा १.१०.२९
लोक संग्रहणार्थं हि	बोधा १.५.१११
लोकात्मन् लोकनाथेश	वृ.गौ. १८.३७
लोका द्वीपार्णवाश्चैव	वृ.गौ. १०.५५
लोकानन्त्यं दिव्यं प्राप्ति	या १.७८
लोकानन्यान् सृजेयुर्ये	मनु ९.३१५

व

वस्तुतोत्र पुनर्वाच्मि	आंपू १०३९
वस्तुभोगतया विष्णो	वृ हा ८.१६४
वस्त्र अलंकार रत्नानि	व्यास २.२६
वस्त्रगोभूमिदानेन धन	शाण्डि १.९१
वस्त्र गोमिथुने दत्वा	नारद १३.४१
वस्त्र चतुर्गुणीकृत्य	वाधू ६१
वस्त्र तु मलिनं त्यक्त्वा	अत्रि ५.६९
वस्त्रञ्चैवोपवीतञ्च	वृ हा ४.८५
वस्त्रदाता सुवेशः स्याद्	संवर्त ५२
वस्त्रनिष्पीडनं तोयं	बृ.या. ७.४४
वस्त्रनिष्पीडनाम्भो	व्यास ३.२०
वस्त्र पुष्प मणि स्वर्ण	वृ हा ६.२६
वस्त्रभूषणयोर्दाने समनुच्चारणे	कपिल ८५
वस्त्र पत्रमलंकारं	मनु ९.२१९
वस्त्रयुग्मं ततोदद्यात्	व्या १५०
वस्त्र संस्पर्शेन तस्य	वृ परा ८.३१३
वस्त्रहारी भवेत कुष्ठी	शाता ४.२३
वस्त्रहीनेन यः	ब्र.या. ८.२५०
वस्त्रादीनि तथा अन्यत्र	आश्व ११.६
वस्त्राद्युत् त्रासते गौश्च	वृ परा ८.१५६
वस्त्रालङ्कारपुष्पादिधूप	व २.४.६९
वस्त्राङ्कारभूषाद्यैः	व २.४.१२४
वस्त्रालङ्कारयुक्तेन	व २.७.१०१
वस्त्रैराभरणैर्दिव्यैर	व २.७.८७
वहि कलाभ्यां दृक्पालं	भार ६.९४
वहिद्यासाद्धार्य परिस्तीर्या	व २.६.२८३
वहि प्रदक्षिणं कुर्यात्	ब्र.या. ३.६८
वहि प्रदक्षिणं कृत्वा	ब्र.या. ४.१४१
वहिर्मुखानि सर्व्वाणि	दक्ष ७.१९
वहिष्कृतश्च संत्यक्त	आंपू १०६४
वहि सन्ध्यामुपासीत	वृ परा ६.१४५
वहि सन्ध्याः शतगुणं	वृ हा ५.२८८
वहूनां तु प्रोक्षणम्	बौधा १.६.२६
वह्नि जिह्वा भगवतो	वृ हा ७.१४
वह्नि गार्हस्थ्यदं दिव्यं	लोहि १४०
वह्नि सीतामखंचापि	वृ परा १.५२
वह्नौ च स्थाण्डिले	वृ हा ३.१२६
वह्वच भोजयेच्छ्राद्धे	व्या १८४
वह्वचं तु परित्यज्य	व्या १८५
वह्वः तु न जानन्ति	वृ.गौ. ४.४१
वह्वर्चं भोजयेच्छ्राद्धे	व्या १८३
वह्वर्चेन विना श्राद्ध	व्या १८६
वह्वृचस्तर्पणं कुर्य्याज्जले	आश्व १.१०४
वह्वृचो ब्रह्मचारी	आश्व २४.८
वाके प्रेणी ततोजप्त्वा	ब्र.या. ८.३१९
वाकोवाक्यं पुराणञ्च	या १.४५
वाक्यापारुष्यं तथैवोक्तं	नारद १.१९
वाक्संबन्ध एतदेव	व १.२१.८
वागक्षीकर्णनासादि सर्वा	कपिल ८०७
वागदंडोथ मनोदंड	मनु १२.१०
वाग्दण्डं प्रथमं कुर्याद्	मनु ८.१२९
वाग्दुष्टः बालदमकौ	वृ परा ७.१३
वाग्दुष्टात्तरस्कराच्चैव	मनु ८.३४५
वाग्दूषितामविज्ञातं	व्यास ३.६०
वाग्दैवत्यैश्च चरुभिः	मनु ८.१०५
वाग्भवं शक्तिबीजं च	विश्वा ६.४५
वाग्यतः परिस्तीर्य्य	ब्र.या. ८.२४९
वाग्यतः शेषमश्नीयाद्	बृह ९.१४२
वाग्यतः शेषमश्नीयाद	ब्र.या. २.१७८
वाग्यतो न्यस्तपात्रस्त्रीन्	वृ परा ६.१३३
वाङ्मआस्येनसोश्चक्षु	ब्र.या. ८.२११
वाङ्मनो जलशौचानि	वृ परा ६.२१६
वाङ्मयस्य तु सर्वस्य	बृ.या. २.१२५
वाचं वा को विजानाति	या ३.१५०
वाचं विसृजतेवाद्यः	ब्र.या. ८.४७
वाचयेज्जलमादाय	वृ परा १०.३३५
वाचयेत् परिपूर्णी	वृ परा ७.२०२
वाचा दत्ता मनोदत्ता	का ६
वाचाऽभिघुष्टं गणान्नं	व १.१४.४
वाचाऽभिशक्तो गोसेवा	व १.२२.२

विगुणोऽपि स्त्रीणां	नारद १८.२२
विघसाशी भवन्नित्यं	मनु ३.२८५
विघातयोगेन विप्रोद्धरण	ब्र.या. ११.५
विघ्नकर्तुः श्राद्धकाल	कण्व २८२
विघ्नमाचरते यस्तु	आश्व १५.७९
विघुष्य तु हृतं चौरैर्न	मनु ८.२३३
विचरन्ति महीमेतां	वृ.गौ. १०.४४
विचित्रशुभ पर्यङ्के	वृ हा ३.३०५
विचित्राणि च भक्ष्याणि	वृ हा ५.५०१
विजिह्व जाठरायाऽग्ने	वृ परा ६.११६
विज्ञातं हन्ति तत्पापं	वृ परा ४८०
विज्ञातव्यास्त्रयोऽप्येते	शंख २.८
विज्ञाते परिपूर्णं तु	बृ.या. १.३५
विज्ञानस्य तु विप्रस्य	औ ९.७९
विज्ञाय चार्थमेतेषां	ल व्यास २.७३
विज्ञायते हि त्रिभि	व १.११.४२
विज्ञायते हि त्वागिन	व १.७.६
विज्ञायते हि व	व १.२०.३७
विज्ञायते हीन्द्रस्त्रि	व १.५.८
विज्ञायते ह्यागस्त्यो	व १.१४.११
विज्ञायते ह्येकेन	व १.१५.८
विज्ञाय तत्त्वं एतेषां	औ ३.१०४
विज्ञेयानि च भक्ष्याणि	वृ हा ४.११५
विट्क्कं शिबिरं वेश्म	भार २.६९
विट् चास्य प्लवते नाप्सु	नारद १३.१०
विट्छौचं प्रथमं कूर्यान्	वाधू १३
विट्शूद्रयोरेवमेव	मनु ८.२७७
विटस्व अध्ययन	बौधा १.१०.४
विडालकाकाद्युच्छिष्टं	मनु ११.१६०
विडालकाकद्युच्छिष्टं	अत्रिस २९३
विडालमूषकोच्छिष्टे	संवर्त १९०
विड्वराहखरोष्ट्राणां	मनु ११.१५५
विणान् वा निंद्य नाशार	कपिल ३९
विण्मा (मू) त्रोत्सर्जना	भार ३.१
विण्मूत्रकरणात्पूर्वमाद	वाधू १७
विण्मूत्रभक्षणे चैव प्राजापत्यं	संवर्त १८९
विण्मूत्रभक्षणे विप्र·	आप ५.१०
विण्मूत्रांगारकेशास्थि	भार १५.७१
विण्मूत्रोत्सर्गशुद्ध्यर्थं	मनु ५.१३४
वितत्य च कुशानेता	भार १८.३१
वितानपुष्पमालाद्य	वृ हा ५.३२७
वितानादि सुशोभासं	व २.४.७६
वितानादि सुशोभाख्यां	व २.७.५६
विताने चन्द्रसूर्यो च	वृ हा ७.२८७
वित्त बन्धुर्वयः कर्म	मनु २.१३६
वित्त वार्धुषिकामां तु	वृ परा १२.६२
वित्तापेक्ष भवेदिष्टं	लघुयम ६९
वित्ते सति कृतं कर्म	आश्व १०.४४
विदध्याद्धौत्र मन्यश्च	कात्या १५.३
विदर्धितोपवीतानितद्	भार १५.५३
विदित्वा मुच्यते क्षिप्रं	बृ.या. २.१५६
विदित्वैव सदा स्नायात्	बृ.या. ७.९०
विदिशां देवपत्नीनां	लोहि ६४९
विदुर्यस्यैव देवत्वं	नारद १८.५०
विदुषा ब्राह्मणेनेदं	मनु १.१०३
विदेशगमनं चैव न	व्या ३३३
विदेश मरणेऽस्थीनि	कात्या २३.२
विदेशस्थे श्रुताहस्तु	वृ परा ७.१४५
विद्धप्रजननः श्वित्रि	वृ परा ७.६
विद्धौजामप्यकर्मण्यं	शाण्डि ३.१२५
विद्यन्ते च सुतृप्तानि	वृ परा २.९४
विद्यमानत्रयाणां स्यात्	वृ परा ७.५२
विद्यमानधनैः यैः तु	वृ.गौ. ५.५४
विद्यमानः पिता यस्य	वृ परा ७.१४२
विद्यमानं मन्त्रमुखात्	लोहि १३५
विद्यमाने तु पितरि श्राद्ध	वृ परा ७.५३
विद्यमानेऽपि लिखिते	नारद २.६८
विद्यमाने स्वहस्ते	व २.६.२११
विद्यमानो मन्यमानः	कपिल ८२७
विद्यया याति विप्रत्वं	अत्रि १४१

विप्रश्च सम्माताचार	वृ परा ८.३०३
विप्रश्चैव स्वयं कुर्याद्	आश्व १.१६५
विप्रसंध्याकारकोऽपि	कण्व २८०
विप्रसंध्यारोधनस्य	कण्व २८१
विप्रसंध्याविधातस्य	कण्व २८५
विप्रसेवैव शूद्रस्य	मनु १०.१२३
विप्रस्तु ब्राह्मणी गत्वा	संवर्त १५४
विप्रः स्पृष्टोनिशायाञ्च	यम ६३
विप्रः स्पृष्टो निशायां	बृ.य. ३.६९
विप्रस्य करणं लक्ष्मी	कण्व ५८४
विप्रस्य जातमात्रस्य	कण्व ५०२
विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु	मनु १०.१०
विप्रस्य दक्षिणे कर्णे	पराशर ७.४०
विप्रस्य दक्षिणे कर्णे	वृ परा ८.२९९
विप्रस्य दंड पालाशः	भार १५.१२२
विप्रस्य पादग्रहणं	और ३.३०
विप्रस्य पीतमित्युक्तं	भार १५.११६
विप्रस्य वा पृथक् पंक्ति	कपिल ३३९
विप्रः स्वामपरे द्वे तु	वृ परा ६.३७
विप्रहस्तच्युतैस्तोयै	बृ.गौ. १८.९
विप्रहस्ते तथा काष्ठे	ब्र.या. ४.८४
विप्रहस्तेन मंत्रेण स्पर्शीन	कपिल २११
विप्रांश्च भोजयेद्	व २.३.१५
विप्राणामात्मनश्चापि	ब्र.या. ४.१०४
विप्राणां अग्निं होत्रस्य	वृ परा ६.१२९
विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यं	व्या ३५९
विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्	मनु २.१५५
विप्राणां भोक्तुकामाना	बृ.गौ. १४.२६
विप्राणां भोजनात्पूर्व	आंपू १०७२
विप्राणां वेदविदुषां	मनु ९.३३४
विप्रातिथ्यसहस्रे तु	बृ.गौ. १७.१८
विप्रातिथ्ये कृते राजन्	वृ.गौ. ६.५४
विप्रा निन्दन्ति यज्ञान् च	वृ.गौ. ३.३१
विप्रानुज्ञायतिरपि	आंपू १४५
विप्रानेवार्चयेद्भक्तया	बृ.गौ. २१.२६

विप्रान् निमंत्रयेतच्छ्राद्ध	आश्व २४.१५
विप्रान् मूर्द्धाभिषिक्तो	या १.९१
विप्राभावे धनाभावे	लोहि ३३८
विप्राभ्यनुज्ञया कुर्यात्	आंपू १४४
विप्रायद द्याच्च	वृहस्पति १०
विप्रायाऽऽचमनार्थं	व १.२९.१८
विप्राहिक्षत्रियात्मानो	या १.१५३
विप्रुषोष्टौ क्षिपेदूर्ध्व	वाधू ११८
विप्रेणामंत्रितोऽविप्रः	वृ परा ८.१८६
विप्रे प्रीणाति तद्वत्स	अ ९
विप्रेभ्यः कलशान्	आश्व १०.६१
विप्रे मैथुनिनि स्नानं	वृ परा ८.२७९
विप्रे संस्थे व्रतादर्वाक्	वृ परा ८.२१
विप्रैश्चतुः षष्ठिसंख्यैः	कपिल ८८९
विप्रो गर्भाष्टमे वर्षे	व्यास १.१९
विप्रो दशाहमासीत	संवर्त ३८
विप्रोद्वासनतः पश्चाद	कपिल २४७
विप्रो विप्रेण संस्पृष्ट	अंगिरस ८
विप्रोविप्रेण संस्पृष्ट	आप ५.१४
विप्रोष्य पादग्रहणमन्वहं	मनु २.२१७
विप्रोष्य स्वजनीं	वृ परा ८.२४१
विफलं मन्त्रतेजस्स्यात्सत्यं	विश्वा १.१०२
विभक्तदायानपि	बौधा १.५.११४
विभक्तं भ्रातरं दीनं दरिद्र	कपिल ६९५
विभक्तष्वनुज जातो	वृ हा ४.२५१
विभक्ताः पुत्रतज्ज्ञातिधन	कपिल ७४२
विभक्ता भ्रातरः सर्वे	वाधू २१०
विभक्ताः सह जीवन्तो	मनु ९.२१०
विभक्तास्ते खलु तदा	लोहि २२८
विभक्तेषु सुतो जात	या २.१२५
विभक्त्यैव प्रथमया	कण्व ११२
विभजरेन् सुता पित्रोः	या २.११९
विभर्ति सर्वभूतानि	मनु १२.९९
विभागधर्मसन्देहे	नारद १४.३६
विभागनिह्नवे ज्ञाति	या २.१५२

वृषलानामपि तथा तत्रत्यानां कपिल ३८५
वृषलीपति दुष्कर्म्मा ब्र.या. ४.२१
वृषलीफेनपीतस्य बृ.या. ३.१५
वृषलीफेनपीत्सय मनु ३.१९
वृषलीफेनपीतस्य यम २८
वृषलीं यस्त गृह्णाति बृ.या. ३.१४
वृषवद्गोद्वयं नर्देत वृ परा ११.९६
वृषादियुक्तं सीरं च वृ परा १०.६
वृषान्तकप्रेक्षणयोः कात्या २८.८
वृषेण निहते दद्याद् शातां ६.३१
वृषोत्सर्गस्य कर्तारं प्रजा ८९
वृषोत्सर्गस्य कर्तारो प्रजा ८५
वृषो धर्मो हि विज्ञेय बृ.गौ. २१.१३
वृषो हि भगवान् धर्म मनु ८.१६
वृष्टिं दिवीशः तद्धारेति वृ हा ८.५७
वृष्ट्यम्बलेपनाश्चैव ब्र.या. १०.३९
वृष्ट्यायुः पुत्रकामो वा ब्र.या. १०.२५
वृ सिवनीनस्य अक्ष्णो ब्र.या. ८.१२०
वृहता वृहणाजेय सर्वं विष्णु १.५५
वृह तेच्छदिरसिकन्नं ब्र.या. ८.१२१
वृहत्तनुं वृहदग्रीवं वृ हा ३.३३३
वृहत्पत्रक्षुद्रपशु कात्या ५.८
वृहस्पति मतं पुण्यं वृहस्पति ८१
वृहस्पतिं समाहूय ब्र.या. १०.६०
वृहस्पते अति अदर्य्य या १.३०१
वेणुपत्र दलाकारं ब्र.या. २.३१
वेणुवैदलभाण्डानां मनु ८.३२७
वेणुश्चतिन्तिडीप्लाक्षा विश्वा १.६२
वेतनस्यानपाकर्म नारद १.१७
वेतनस्यैव चादानं मनु ८.५
वेत्ति यो वेदतत्त्वार्थं ब्र.या. ४.८
वेत्रचर्मकृतं चैव ताल शाण्डि ४.११४
वेत्रासनस्थे पात्रे च शाण्डि ४.११८
वेदः कृषिविनाशाय बौधा १.५.१०१
वेदज्ञातो द्विजातीनां व्या ७१

वेदञ्चैवाभ्यसेन्नित्यं ल हा १.२२
वेदतत्वार्थत्त्वज्ञा यन्मां व्या ४
वेदतत्वार्थवेतृणां वृ परा ८.७
वेदते भूमि हृदयं दिवि ब्र.या. ८.३२२
वेदधर्म पुराणाश्च औ ९.७३
वेदनिन्दारतश्चैव औ ४.३४
वेदपादो यूपदष्ट्राः विष्णु १.३
वेदपारायेणनैव मासमेकं वृ हा ५.५४०
वेदपूर्ण मुख विप्र व्या १६१
वेदपूर्णमुखं विप्रं व्यास ४.५२
वेद प्रदानात् पितेत् व १.२.५
वेद प्रदानादाचार्य पितरं मनु २.१७१
वेदप्रोक्तां क्रियास्सर्वा स्थानं कपिल ३६१
वेदमध्यापयेच्छिष्यान् ल व्यास २.७
वेदमध्यापयेदेनं ब्र.या. ८.४९
वेदमंत्र विना नान्य कण्व ४७७
वेदमात्रानुक्तितस्तु आंपू ८०१
वेदमादित आरभ्य कात्या ११.१७
वेदमेव सदाभ्यस्येत मनु २.१६६
वेदमेव समभ्यस्ये वृह १२.४१
वेदमेवाभ्यासे जपेन्नित्यं मनु ४.१४७
वेदं गृहीत्वा य कश्चित् अत्रिस ११
वेदं धर्मं पुराणञ्च औ ३.३४
वेदं वेदौ तथा वेदा औ ३.८६
वेदं समुच्चरन्तं तच्छूद्र कपिल ४५
वेदयज्ञादिहीनानां औ १.५५
वेदयज्ञैरहीनानां मनु २.१८३
वेदलांगलकृष्टेषु व्यास ४.५७
वेदवादौ समारभ्य वृ.गौ. ८.६८
वेद विक्रयिणं यूपं बौधा १.५.१४०
वेदविक्रयिणश्चैते औ ४.२२
वेद विक्रयिणे चैव वृ परा १०.३२०
वेद विच्चापि विप्रोऽस्य मनु ३.१७९
वेदविद्यावितानानि वृ परा ६.२६४
वेदविद्याव्रतस्नातः पराशर ५.३

श

शंख चक्रगदाखड्ग	वृ हा ३.१३५
शंखचक्र धनुर्वाण	वृ हा ३.२८३
शंखचक्रधनुर्वाण	वृ हा ३.२६०
शंखचक्रांक न कुर्याद्	व २.१.३५
शंखचक्रेस्फुटं कुर्य्यात्	व २.१.३७
शंखचक्रोर्ध्व पुंड्रादि	वृ हा १.२४
शंख चक्रोर्ध्व पुण्ड्रादि	वृ हा ५.७७
शङ्खचक्रोर्ध्व पुण्ड्रादि	व २.७.२३
शंखचक्रोर्ध्वं पुण्ड्रादि	वृ हा ८.२८२
शंखचक्रोर्ध्व पुण्ड्राद्यौ	वृ हा ८.२८५
शंख पद्म गदा चक्र	वृ हा ३.२४
शंख पुष्पीलतामूलं	पराशर १०.२१
शंख प्रोक्तमिदं शास्त्र	शंख १८.१६
शंखमस्तकसंक्काश	भार ७.३१
शंखादिनिधिभी राजकुलैरपि	वृ हा ३.३२४
शंखाभः शंखचक्रे कर	वृ हा ३.३८२
शंखे नैवभिषिच्याथ	वृ हा ६.४२२
शठं च ब्राह्मणं हंत्वा	अत्रिस २९०
शणसूत्रा तु वैश्यस्य	ब्र.या. ८.१९
शण्डामर्क्क उपवीरः	ब्र.या. ८.३२९
शतकोटिसमा राजन्	वृ.गौ. ७.१०८
शतजन्मसु तं विद्यात्साक्षद्	कपिल ४०
शतजन्मसु विप्रत्वं प्राप्तस्य	कपिल ३४
शतत्रयं तु श्लोकानाम	बृ.या. ८.५६
शतद्वयं तु पिंडानां	वृ परा ९.५
शत धारेण विन्यस्य	ब्र.या. १०.११०
शतपत्रैश्च जातीभि	वृ हा ५.५३७
शतंजप्तवा तु सा देवी	शंख १२.१५
शतं तु विरजाहोमं	नारा ८.१२
शतं त्रिलोकं त्रिशतं	विश्वा ३.७६
शतं ब्राह्मणामाकुश्य	मनु ८.२६७
शतं ब्राह्मणमाक्रुश्य	नारद १६.१४
शतं वैश्ये दशशूद्र	बौधा १.१०.२४
शतं सहस्रं गोप्यं वा	लोहि ६६१
शतं स्त्री दूषणे दद्याद्	या २.२९२

शतमश्वानृते हंति	बौधा १.१०.३६
शतमश्वानृते हंति	वृहस्पति ४४
शतमष्टोत्तरं तत्र यथा	व २.४.७९
शतमानस्तु दशभि	या १.३६५
शतरुद्र धर्मशिरं	अत्रि ३.३१२
शतरुद्रियं अथर्वशिरः	व १.२८.१४
शतरुदीयं अथर्व शिरः	शंक ११.४
शतवर्षसहस्राणि	वृ.गौ. ६.४४
शतवल्ली महावल्ली	आंपू ५२१
शतवारं सहस्रं वा	वृद्धहा ४.५०
शतवारं सहस्रं वा	वृ हा ५.१६२
शताक्षरा समावर्त्य	बृ.या. ४.४६
शतानामपि मूढानां वचनं	कपिल ८४८
शतानि पंच तु वरो	नारद १८.८९
शतुकरो तु वैतस्यां	व २.४.११९
शते दश पला वृद्धिरौर्णे	या २.१८२
शतेन जन्मजनितं	वृ परा ४.६१
शत्रवोऽप्यत्र (पूज्या)	कण्व ५८६
शत्रुंमित्र तथानुष्णमुष्णं	लोहि ५८४
शत्रुमित्रोदासीमध्येमेषु	विष्णु ३
शत्रुसेविनि मित्रे च	मनु ७.१८६
शत्रौ मित्रै समस्वान्त	वृ परा १२.१०८
शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः	मनु १०.४३
शनैः कालेन महता धरा	कपिल ८३६
शनैनासापुटैर्वायुमुत्	बृ.या. ८.४५
शनैरुच्चारयन्मंत्र	ल हा ४.४३
शनैः शनैः क्रिया साध्वी	शाण्डि ४.१४१
शनैः शनैश्च कालेन	आंपू ३३५
शनैश्चर कला; दिव्या	ब्र.या. १०.८१
शनैश्चरन्तु संस्थाप्य	ब्र. या. १०.६५
शनैः सम्मार्ज्जनं	ब्र.या. २.२२
शन्न इत्यादि सूक्तैश्च	वृ हा ५.४९०
शन्न आपस्तु द्रुपदा	वृ.या. ६.२८
शन्नोदेवी क्षिपेद्वारि	व २.६.२९४
शन्नो देवीति चेत्यत्र	वृ परा ११.३२१

शरीरं धर्मसर्वस्वं शंख १७.६५
शरीरं पीड्यते येन शुभेन अत्रिस ३७
शरीरं बलामायुश्च बौधा १.१.१६
शरीरं यत् च तत् वृ.गौ. ५.१७
शरीरं शोषयेन्नित्यं शाण्डि ४.२२३
शरीरमाग्निना संयोज्यान व १.४.११
शरीरमापः सोमश्च बृ.या. २.९८
शरीर शुद्धि विज्ञेया शंख ८.१०
शरीरसंक्षये यस्य मन या ३.१६१
शरीरस्यात्यये प्राप्ते पराशर ६.५४
शरीरात् धार्यते जीवो वृ.गौ. ५.१६
शरीरान्निसृते प्राणे वृ परा १२.२२२
शर्कराः गुणखंडादि वृ परा ७.२३८
शर्कराज्यसमोपेतं व २.३.१०
शर्कराज्येन संयुक्तं व २.३.२१
शर्कराज्येन संयुक्तां व २.३.१७३
शर्करादधिमध्वाज्य व २.६.९७
शर्करासूप लवणं व २.६.३४४
शर्मवद् ब्राह्मणस्य मनु २.३२
शलटुं पानसं पत्र आंपू ५५१
शल्मल्येरंद्धकार्पासा भार ५.५
शल्लकीशशकागोधा पराशर ६.१०
शव इति मृताख्या व १.१८.८
शवं च वैश्यमज्ञानाद् पराशर ३.५०
शवं वीथ्यां निपतितं आंपू २७
शवसूतकमुत्पन्नं दा १२४
शवसूति समुत्पन्नो ब्र.या. १३.४
शवसूति समुत्पन्ने ब्र.या. १३.५
शवस्पर्शी (दाहसंस्कारा)वर्णनम् विष्णु १९
शवस्पृष्ट तृतीयस्तु अत्रि स ९०
शवानुगमने चैवम् व १.२३.२२
शवेक्षणं स्वधाकारं आश्व १९.२
शवे निपतिते गेहे कण्व २९६
शशश्च मत्स्येष्वपि या १.१७८
शशास पूर्ववत् पृथ्वी नारा ७.२७
शशास पृथिवीं सर्वां नारा ७.७
शशिब्रह्ममहीजात भार १४.२०
शशिव्रतं त्रयः कृच्छ्राः भार ११.३
शश्वद्धधत्यतो दस्त भार १५.१०२
शश्वन्नांदिस्तदा कार्यो कपिल ७४
शस्तं स्नानं यथोद्दिष्ट बृ.या. ७.१६६
शस्त्रघाते त्रिकृच्छ्राणि यम ७०
शस्त्र द्विजातिभिर्ग्राह्य मनु ८.३४८
शस्त्र वस्त्राश्म मृत्पिंड वृ परा ८.१३४
शस्त्रवाहनरक्षोघ्नं विश्वा ५.३०
शस्त्र विषं सुरा च व १.१३.२३
शस्त्रवेकाकिनं हंति वृहस्पति ४९
शस्त्रावपाते गर्भस्य या २.२८०
शस्त्रासवं मधूच्छिष्टं या ३.३७
शस्त्रास्त्रभृत्वं क्षत्रस्य मनु १०.७९
शस्त्रेण त्रीणि कृच्छ्राणि वृ परा ८.१३८
शस्यादि दाहयेत्सर्वां वृ परा १२.३८
शस्येण निहतस्यैवं कपिल १२७
शाककन्दफलोपेतै शाण्डि ४.४२
शाकपाकादिकं निन्द्यं आश्व १.१७७
शाकपुष्पफलमूलौषधीनां बौधा १.५.७८
शाकभक्ष्यफलोपेतं आंपू २४४
शाकं च फाल्गुनाष्टम्यां कात्या १७.२३
शाकं मांसं मृणालानि आप ८.१९
शाकं वाऽपि तृणं वापि वृ परा ४.१९१
शाकमूलफलादिनि वृ हा ५.२६९
शाकमूलफलाशीस्याद् वृ हा ५.५२
शाकमूलफलैर्वापिजीवे व २.६.१२७
शाकयावकभैक्ष्याणि बृ.या. ७.१४४
शाकवस्त्रक्षालानाय भवेद्वागो कपिल ६२२
शाकाभावे विशेषेण लोहि ३६२
शाकाहारी च पुरुषो शाता ४.१८
शाके पत्रे फूले मूले अत्रिस ३७३
शाके राजसमे युक्तं व २.३.१४४
शाकैर्मूलैः फलैः पत्रैः आंपू १७५

ष

स

सर्वधान्य समायुक्तं	ब्र.या. ११.५८
सर्वन्तु राजवृत्तस्य	औसं ३०
सर्वपण्यैर्व्यवहरणम्	बौधा २.१.५४
सर्वपापक्षयकरी वरदा	शंख १२.२०
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःख	शाण्डि ४.६०
सर्वपापप्रशमनी प्रायश्चित	नारा १.३
सर्वपापप्रसक्तोऽपि	अत्रि ४.१०
सर्वपापविनिर्मुक्तः	अत्रि स ३६५
सर्वपापविनिर्मुक्त	वृ परा २.९३
सर्वपापविनिर्मुक्त	विश्वा ४.२८
सर्वपापविनिर्मुक्तः	वृ परा ११.२९०
सर्वपापविनिर्मुक्तो	वृ हा ३.१५६
सर्वपाप विनिर्मुक्तो	वृ हा ५.३७२
सर्वपापविशुद्धात्मा	संवर्त ७१
सर्वपापविशुद्धात्मा	व २.१.२१
सर्वपापसमायुक्तो	वृ परा १०.५१
सर्वपापहरं दिव्यं सर्व	व्या ६
सर्वपापहरं नित्यं सर्व	अत्रिस ५
सर्वपापापनोदाय	वृ परा ४.१९३
सर्वपापापनोदार्थं	वृ परा २.१३५
सर्वपापानिर्मुक्तो	वृ हा ८.३४५
सर्वपापै विनिर्मुक्त	वृ परा १०.६१
सर्वपीडाविनिर्मुक्त	कण्व ६२९
सर्वप्रकाराल्लोकेषु त्रिषु	भार १२.४३
सर्वप्राणेन कुर्याद्वै	लोहि ३५०
सर्वबन्ध्वागमाश्चापि	कण्व ३४६
सर्वमात्मानि संपश्येत्	मनु १२.११८
सर्वभावविनिमुक्तः क्षेत्रज्ञ	दक्ष ९.२०
सर्वभूतम् अयं च एव	वृ.गौ. ६.२१
सर्वभूतहितः शान्त त्रिदंडी	या ३.५८
सर्वभूतहिते श्रीमन्	वृ.गौ. १७.२
सर्वभूतहितौ मैत्र	शंख ७.८
सर्वभूतात्मभूतात्मा	वृ परा १२.२९७
सर्वभूताधिपो राजन्	वृ.गौ. १५.१७
सर्वभूतेषु चात्मानं	मनु १२.९१
सर्वभूम्यनृते हंति	वृहस्पति ४५
सर्वमंगलवाद्यैश्च	कण्व ५६१
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं	बृ.या. २.१५५
सर्वमंत्र पवित्रस्तु	वृ परा ८.१२
सर्वमन्त्राधिराजेन	बृ.या. २.१५२
सर्वमन्नमुपादाय	व्या २०९
सर्वमेतज्जगद्धातुर्वासुदेव	शाण्डि १.४६
सर्वं अन्नं उपादाय	या १.२४१
सर्वं कारयितव्यं स्यात्	आंपू ४७१
सर्वं कृत्वाथ भूज्जीत	भार ९.१३
सर्वं कृत्वा विधानेन	वृ हा ६.१३९
सर्वं गंगासमं तोयं	पराशर १२.२७
सर्वं गङ्गासमं तोयं	वाधू ५४
सर्वं गवादिकं दानं	वृ परा ६.२२७
सर्वं च तान्तवं रक्तं	मनु १०.८७
सर्वं च तिलसम्बद्धं	मनु ४.७५
सर्वं च तिलसंबंध	शाण्डि ५.८
सर्वं ज्ञात्वा विधास्यानि	आंपू ५८३
सर्वं तत्प्रीतये कुर्यात्त	कण्व ४५६
सर्वं परवशं दुःखं	मनु ४.१६०
सर्वं प्रागुक्तमेवास्य	वृ परा १२.२४६
सर्वं व कारयिष्यामीत्युक्ति	लोहि ६३३
सर्वं वापि चरेद् ग्रामं	औ १.५७
सर्वं वापि हरेद् राजा	नारद १८.१००
सर्वं वा रिक्थजातं	मनु ९.१५२
सर्वं व्याहृतिभिर्दद्यात्	आंपू ८०२
सर्वं शरीरक्लेशाय येषु	शाण्डि ५.३३
सर्वं सम्पूर्णतामेति	वृ हा ६.५०
सर्वं सम्यक्परित्याज्यं	आंपू ८५०
सर्वं स्वं ब्राह्मणस्येदं	मनु १.१००
सर्वयज्ञतपोदानतीर्थवेदेषु	भार ११.११९
सर्वयज्ञमयं ध्यायेद	वृ हा ५.९१
सर्वयज्ञमहातीर्थ	आंपू ४९९
सर्वरत्नानि राजा तु	मनु ११.४
सर्वलक्षणसम्पन्नं	व २.६.७४

सभान्तः साक्षिणः प्राप्तानर्थि	मनु ८.७९
सभाप्रपापूयशाला	नारद १८.५९
सभा प्रापापूयशालां	मनु ९.२६४
सभाभ्यनुज्ञा च परावश्यकी	कण्व ६१
सभामेव प्रविश्याग्रयां	मनु ८.११
सभां वा न प्रवेष्टव्या	मनु ८.१३
सभायां निर्भयं चोरः प्रसिद्ध	कपिल ७६६
सभायां पक्षपाती च	शाता ३.२२
सभायां व्यवहारेषु	लोहि २७८
सभायां स्पर्शने चैव	देवल ५८
सभा वा न प्रवेष्टव्या	नारद १.७३
सभा विप्रगृहाश्चापि	बृ.गौ. १३.२३
सभाः समवायांश्च	व १.१२.३६
सभासु वै प्रलपतो सद्यो	लोहि २९५
सभिक कारयेद् द्यूतं	नारद १७२
स भूमिस्तेयपायेन	वृ परा ५.१२७
समकालमिषु मुक्तमानयेत	या २.१११
समक्षदर्शनात् साक्षी	नारद २.१२५
समक्षर्शनात्साक्ष्यं	मनु ८.७४
समगोपुच्छलोमानि	आंपू ५७
समघ योऽन्नमादाय	प्रजा ८८
समजानुद्वयो ब्रह्मा	व्यास ३.१४
समज्ञान्वितित चाऽऽरम्य	आश्व १५.५८
समंत्वेतया प्राश्य	आश्व १५.५३
समत्वमागतस्यापि	दा ७५
समत्वं परमं ब्रह्म	वृ परा १२.२११
समत्वेन दयां कुर्यान्	बृ.गौ. २२.१८
समदृष्टया प्रपश्यन्ती	लोहि ५८५
समद्विगुणसाहस्रं	दक्ष ३.२५
समनुष्ठयेमेवेति सर्वशास्त्र	कपिल १०४
समनुष्ठाय तत्पश्चात्त	कण्व ४१०
समनुष्ठेय एवेति	कण्व ४४६
समन्तस्य फलं प्राह	वृ.गौ. ९.४४
समंताद्धरितः स्निग्धः	भार १८.१४
मन्ताद्धूसरोगाधः	भार १८.१३

स मंत्रिण प्रकुर्वीत	या १.३१२
समभागः सदा प्रोक्त	आंपू ३७७
समभागो ग्रहीतव्य	बृ.या. ५.२२
समभूमिस्तले दण्ड	भार २.२२
समभ्यर्च्य ततः पिण्डान्	ब्र.या. ४.१२९
सममब्राह्मणे दानं	दक्ष ३.२६
सममब्राह्मणे दानं	मनु ७.८५
सममब्राह्मणे दानं	व्यास ४.४०
सममितरे विभजेरन्	बौधा २.२.७
सममेव लभन्तेऽशमौर	आंपू ४१३
समं सर्वाश्रमस्थस्य	भार १६.५६
समय क्रिया वर्णनम्	विष्णु ९
समयस्यानपाकर्म विवादः	नारद १.१८
समये वाप्यधिश्रित्य	कपिल २२८
समरीचानि कार्याणि	शाण्डि ३.११७
समर्घं धनमुत्सृज्य	बृ.या. ३.२३
समर्घं धान्यमुदधृत्य	व १.२.४६
समर्चनं प्रकुरुते दैहित्रोऽयं	लोहि ३१९
समर्थो यस्य यस्तु	वृ परा ६.३२९
समर्पणं यत्र कुत्र त्यक्त्वा	लोहि ४७५
समवर्णाद्विजादीनां	नारद १६.१६
समवर्णासु ये (वा) जाताः	मनु ९.१५६
समवर्णे द्विजातीनां	मनु ८.२६९
समवसाय धर्माश्चारे	बौधा २.१.६७
समवायेन वणिजां	या २.२६२
समवाये निर्धनानां सर्व	कपिल ४९६
समशः सर्वेषामविशेषात	बौधा २.२.३
समष्ट्या बहवो भूयः एकं	कपिल ८४०
समष्वेवं परस्त्री	या २.२१७
समः सर्वेषु भूतेषु	व १.१६.५
समस्त कर्मणामादि	भार ४.१
समस्त दक्षिणायुक्तान्	वृ परा १२.१२४
समस्त भुवनाभार	वृ परा ११.१३८
समस्तयज्ञभोक्तारं	वृ हा ८.१७३
समस्तयाऽथव्याहृत्या	भार ११.९३

संमार्जितान् कुशान्	आश्व २.४५
सम्यक् कारयितुं	आंपू ४६१
सम्यक् त्रिपूर्वपर्यन्त	कण्व ७२२
सम्यक् पितृत्व माप्नोति	आंपू ४६७
सम्यक् पूर्ण फलप्राप्त्यै	आश्व २.६७
सम्यक् प्रजा पालयित्वा	वृ.गौ. २.२२
सम्यक् प्रवाहारयेद्वा	कण्व ५४०
सम्यक्श्लक्ष्णतरे	व २.६.२२८
सम्यगाचम्य ता देवं	विश्वा ५.२३
सम्यगाचारवक्तारं	औ १.३९
सम्यगालोच्य संकल्प्ये	कण्व ५०
सम्यगालोचनीयोऽतो	आंपू ८४६
सम्यगुक्तप्रकारेणन्या	भार ६.६६
सम्यगुक्तं मया तेऽद्य	वृ हा ८.७४
सम्यगुच्चारणाच्चैव	कण्व २२३
सम्यक् षोडशसंख्याकं	कण्व ५३३
सम्यग्जप्त्वा ब्रह्म	कण्व २३८
सम्यग्ज्ञानमिदं प्राज्ञा	शाण्डि ४.२०६
सम्यग्दर्शनसम्पन्न	मनु ६.७४
सम्यग्धर्मार्थकामेषु	व्यास २.१८
सम्यग्भवति नास्त्यत्र	लोहि ३४५
सम्यङ् निविष्ट देशस्तु	मनु ९.२५२
सम्यङ्ग लवणशाकानि	कण्व ५८९
सम्बत्ससरकृतं पापं	विश्वा ४.२२
सम्बत्सरकृतं पापं	वृ.गौ. ९.४३
सम्बत्सरञ्चरेत कृच्छ्रं	औ ९.६८
सम्बत्सरात्परं यत्नात्कृत	लोहि ७००
सम्बत्सरे च षण्मासे	ब्र.या. ८.३२
सम्बत्सरेण पतति	औ ८.२
सम्बत्सरे ततः पूर्णे	बृ.गौ. १८.८
सम्बन्धिने च यत् दानम्	वृ.गौ. ३.४०
सम्बर्त मेकमासीनमात्म	सम्वर्त १
सम्बर्तेत यथा भार्या	अत्रिस् १८३
सम्बर्धयन्ति चाव्याग्राः	वृ.गौ. ५.८८
स यज्ञ दान तप सामखिलं	व्यास ३.११
स यदाऽगति स्यात	बौधा २.१.३२
स यदि प्रतिपद्येत	मनु ८.१८३
स याति कामगं लोकं	बृ.गौ. १९.१४
य याति मम लोकं वै	वृ.गौ. ७.१००
स याति मामकं लोकं	वृ.गौ. ७.६४
स याति रथमुख्येन	वृ.गौ. ७.७६
स याति वारुणं लोकं	वृ.गौ. ७.६९
स योगी परमेकान्तं	वृ हा ५.५८
स रण्डानां स्वकीयानां	कपिला ६१६
सरःसु देवखातेषु	शंख ८.११
सरस्वती च हुंकारे	वृ परा ५.३८
सरस्वती चेत्या	भार ७.७५
सरस्वती दृषद्वत्योर्देव	मनु २.१७
स राजसो मनुष्येषु	वृ हा ६.१५९
स राजा पुरुषोदण्ड	मनु ७.१७
सरित्समुद्रतोयैक्ये	प्रजा ५३
सरित् सरसि वापीषु	व्यास ३.६
सरित सरसीश्चैव	बृ.या. ७.६३
सरित्सु देवखातेषु	शंख ८.७
सरिदद्भिस्तटाकेषु	भार १६.४९
सरिद्वरं नदी स्नानं	लहा ४.२६
सरोग विकलक्लीबही	ब्र.या. ४.१२
सरोजबीजगाग्गेय	भार ७.९
सरोभूनूतनांस्निग्धं	भार १५.१०८
सरोमं प्रथमे पादे	आप १.३३
सरोषम् अवधूतं च	वृ.गौ. ३.४२
सर्कव्यता जालि भ्रंशाकरण	विष्णु ३८
सर्गप्रलयकाले तु न	बृह ११.७
सर्गादि कारणात्वाच्च	वृ हा ३.१७२
सर्गादौ ब्राह्मणा श्रेष्ठा	व २.१.५
सर्गादौ लोककर्ताऽसौ	वृ हा ५.२
सर्गादौ स यथाकाशं	या ३.७०
सर्पदंशे नागवलिर्देय	शाता ६.२९
सर्पराजो मुनिस्तत्र	वृ परा ११.३३८
सर्पवात नखाग्रान्त	लघुशंख ६९

सर्वधान्य समायुक्तं	ब्र.या. ११.५८
सर्वन्तु राजवृत्तस्य	औसं ३०
सर्वपण्यैर्व्यवहरणम्	बौधा २.१.५४
सर्वपापक्षयकरी वरदा	शंख १२.२०
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःख	शाण्डि ४.६०
सर्वपापप्रशमनी प्रायश्चित	नारा १.३
सर्वपापप्रसक्तोऽपि	अत्रि ४.१०
सर्वपापविनिर्मुक्तः	अत्रि स ३६५
सर्वपापविनिर्मुक्त	वृ परा २.९३
सर्वपापविनिर्मुक्त	विश्वा ४.२८
सर्वपापविनिर्मुक्तः	वृ परा ११.२९०
सर्वपापविनिर्मुक्तो	वृ हा ३.१५६
सर्वपाप विनिर्मुक्तो	वृ हा ५.३७२
सर्वपापविशुद्धात्मा	संवर्त ७१
सर्वपापविशुद्धात्मा	व २.१.२१
सर्वपापसमायुक्तो	वृ परा १०.५१
सर्वपापहरं दिव्यं सर्व	व्या ६
सर्वपापहरं नित्यं सर्व	अत्रिस ५
सर्वपापापनोदाय	वृ परा ४.१९३
सर्वपापापनोदार्थे	वृ परा २.१३५
सर्वपापानिर्मुक्तो	वृ हा ८.३४५
सर्वपापै विनिर्मुक्त	वृ परा १०.६१
सर्वपीडाविनिर्मुक्त	कण्व ६२९
सर्वप्रकाराल्लोकेषु त्रिषु	भार १२.४३
सर्वप्राणेन कुर्याद्वै	लोहि ३५०
सर्वबन्ध्वागमाश्चापि	कण्व ३४६
सर्वमात्मानि संपश्येत्	मनु १२.११८
सर्वभावविनिमुक्तः क्षेत्रज्ञ	दक्ष ९.२०
सर्वभूतम् अयं च एव	वृ.गौ. ६.२१
सर्वभूतहितः शान्त त्रिदंडी	या ३.५८
सर्वभूतहिते श्रीमन्	बृ.गौ. १७.२
सर्वभूतहितौ मैत्र	शंख ७.८
सर्वभूतात्मभूतात्मा	वृ परा १२.२९७
सर्वभूताधिपो राजन्	बृ.गौ. १५.१७
सर्वभूतेषु चात्मानं	मनु १२.९१
सर्वभूम्यनृते हंति	वृहस्पति ४५
सर्वमंगलवाद्यैश्च	कण्व ५६१
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं	बृ.या. २.१५५
सर्वमंत्र पवित्रस्तु	वृ परा ८.१२
सर्वमन्त्राधिराजेन	बृ.या. २.१५२
सर्वमन्नमुपादाय	व्या २०९
सर्वमेतज्जगद्धातुर्वासुदेव	शाण्डि १.४६
सर्वं अन्नं उपादाय	या १.२४१
सर्वं कारयितव्यं स्यात्	आंपू ४७१
सर्वं कृत्वाधभूज्जीत	भार ९.१३
सर्वं कृत्वा विधानेन	वृ हा ६.१३९
सर्वं गंगासमं तोयं	पराशर १२.२७
सर्वं गङ्गासमं तोयं	वाधू ५४
सर्वं गवादिकं दानं	वृ परा ६.२२७
सर्वं च तान्तवं रक्तं	मनु १०.८७
सर्वं च तिलसम्बद्धं	मनु ४.७५
सर्वं च तिलसंबंध	शाण्डि ५.८
सर्वं ज्ञात्वा विधास्यानि	आंपू ५८३
सर्वं तत्प्रीतये कुर्यात्त	कण्व ४५६
सर्वं परवशं दुःखं	मनु ४.१६०
सर्वं प्रागुक्तमेवास्य	वृ परा १२.२४६
सर्वं व कारयिष्यामीत्युक्ति	लोहि ६३३
सर्वं वापि चरेद् ग्रामं	औ १.५७
सर्वं वापि हरेद् राजा	नारद १८.१००
सर्वं वा रिक्थजातं	मनु ९.१५२
सर्वं व्याहृतिभिर्दद्यात्	आंपू ८०२
सर्वं शरीरक्लेशाय येषु	शाण्डि ५.३३
सर्वं सम्पूर्णतामेति	वृ हा ६.५०
सर्वं सम्यक्परित्याज्यं	आंपू ८५०
सर्वं स्वं ब्राह्मणस्येदं	मनु १.१००
सर्वयज्ञतपोदानतीर्थवेदेषु	भार ११.११९
सर्वयज्ञमयं ध्यायेद	वृ हा ५.९१
सर्वयज्ञमहातीर्थ	आंपू ४९९
सर्वरत्नानि राजा तु	मनु ११.४
सर्वलक्षणसम्पन्नं	व २.६.७४

स्नात शुचिर्धौतवास	संवर्त २०७
स्नातः संतर्पणं कृत्वा	शंख १३.१७
स्नातः स्नाताय विप्राय	वृ परा १०.२५२
स्नातस्नानं वा कुर्वीत	कण्व १६१
स्नातस्य भोत्युत्ते	ब्र.या. ८.१२४
स्नातस्य सार्षपं तैलं	या १.२८४
स्नाता रजस्वला या	पराशर ७.१७
स्नातुं प्रयान्तं विबुधा	कण्व १५३
स्नातृसंचिन्तितं सर्वे	वृ परा २.१०१
स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत	ब्र.या. २.१९९
स्नात्वाऽक्षततिलै	ल हा ४.३२
स्नात्वाग्निहोत्रजेनैव	भार ५.४३
स्नात्वाचम्य ततः	औ ९.९३
स्नात्वा च विधिवत्तत्र	संवर्त २११
स्नात्वा तिलोदकं	व २.६.३४८
स्नात्वातीरं समागत्य	व्या ६८
स्नात्वा तु सूर्यमर्च्चिष्य	ब्र.या. ८.८३
स्नात्वा तेनैव विधिना	आंपू ४८७
स्नात्वा त्रिषवणं नित्यं	आप ९.३९
स्नात्वा नद्यांतडागे	वृ हा ५.५५०
स्नात्वा नद्यां विधानेन	वृ हा ७.३०६
स्नात्वा नद्युकैश्चैव	अत्रिस १८४
स्नात्वा नित्यक्रियां	आश्व १२.५
स्नात्वानुपहतः प्यादौ	भार ६.१४
स्नात्वाऽपरेह्नि कुर्वीत	व २.३.२०
स्नात्वा परेऽह्नि विधिना	वृ हा ७.१४१
स्नात्वा पीत्वा क्षुते	पराशर १२.१७
स्नात्वा पीत्वा क्षुते	या १.१९६
स्नात्वा पीत्वा च भुक्त्वा	वृ परा ६.३४४
स्नात्वा पीत्वा जलं	वृ हा ६.३७९
स्नात्वा पीत्वा तथा भुक्त्वा	संवर्त २०
स्नात्वापीत्वा शतं	भार ९.१५
स्नात्वा पूर्ववदभ्यर्च्य	वृ हा ७.२६४
स्नात्वा मध्याह्नसमये	वृ हा ५.४२७
स्नात्वा मंत्रवदाचम्य	ल हा ४.१२
स्नात्वाऽऽमलक्या नद्यां	वृ हा ५.३४१
स्नात्वा यथोक्तं	औ ४.१
स्नात्वा रजस्वला चैव	अंगिरस ३५
स्नात्वा विधायार्चनं	वृ परा ११.३२
स्नात्वा विष्णु समभ्यर्च्य	व २.३.१७२
स्नात्वा वै संस्पृशेल्लिङ्गं	ब्र.या. १२.५४
स्नात्वा शुक्लांबरधरः	भार ११.५
स्नात्वा शुक्लाम्बरधर	वृ हा ३.४१
स्नात्वा शुचिर्द्विजोवात्र	भार १८.९३
स्नात्वा शुद्ध प्रसन्नात्मा	वृ हा ८.२२०
स्नात्वा शुद्धः शुचौ देशे	भार १३.४
स्नात्वाश्वमेधावभृथे	औ ८.२१
स्नात्वा संकल्प्य विधिना	कण्व १४७
स्नात्वा सन्तर्प्य	ल व्यास १.२१
स्नात्वा सन्तर्प्य	वृ हा ५.३४४
स्नात्वा सन्तर्प्य	वृ हा ६.४४
स्नात्वा संध्यासपर्यादि	भार १८.२२
स्नात्वा संपूज्य देवेशं	वृ हा २.९३
स्नात्वा सम्प्राश्य	औ ६.४४
स्नात्वा संप्रोक्ष्य पतितां	शाण्डि २.६१
स्नात्वा स्नात्वा पुनः	अत्रि ५.६२
स्नात्वा स्नात्वा स्पृशेदेनं	अत्रि ५.७०
स्नात्वा स्वस्त्ययनं	व २.३.१९१
स्नात्वैव वाससी	बृ. या. ७.३८
स्नात्वैवं सर्वभूतानि	बृ.या. ७.११५
स्नापनं तस्य कर्तव्यं	या १.२७७
स्नामब्दैवतैर्मन्त्रै	बृह १०.२
स्नान आर्द्र धरणीश्चैव	वृ हा ६.३५२
स्नानकर्मव्यशक्तस्तुधौतं	व २.६.५३
स्नानकाले तु संप्राप्ते	वृ हा ५.८६
स्नानतः सर्वकर्माणि	आंपू १६५
स्नान द्वये नित्यमेव	कण्व ५२
स्नानद्रव्याणि च तथा	भार ११.२४
स्नानपानक्षुतस्वाप	भार ४.३८
स्नानमन्येषु कुर्वीत	वृ परा ८.२०५

स्वकर्म्मणा च वृषभै	आप ८.१६
स्वकार्याय पुरा प्रोक्तां	आंपू ३७१
स्वकाले सायमाहुत्या	कात्या २७.७
स्वकीयशाखिनो मुख्य	प्रजा ७२
स्वकीयदेवताध्यानं पूजा	कपिल ६७०
स्व कुलं नरकं याति	ब्र.या. ८.१६४
स्वगुरु पूजयत्येवमुप	विश्वा १.३७
स्वगृह्योक्तविधानेन	वृ हा ६.१०३
स्वगृह्यक्तविधानेन	वृ हा ६.११६
स्वगोत्रनाम शर्माहं	भार ६.१११
स्वगोत्रनामशर्म्मेति	ब्र.या. ४.७६
स्वगोत्रं भोजयेद्यस्तु	वृ परा ७.११३
स्वगोत्रम्मुख्यतो ज्ञेयं	कपिल ५०३
स्वगोत्रागतपुत्रस्य	कण्व ७३१
स्वगोत्राद्ग्रश्यते नारी	लिखित २६
स्वगोत्राद् भ्रश्यते नारी	कपिल ४१०
स्वगोत्रा सुभगानारी	प्रजा ५७
स्वगोत्रिणां सपिण्डानां	कपिल ४८४
स्वगोत्रिणो स्वान्यभ्रात्रे	कपिल ४१५
स्वगोत्री स्वसुताश्चैव	ब्र.या. १२.५६
स्वगोत्रे प्रवरेभिन्ने	व्या १६२
स्वगोत्रैककृतं भूमिदानं	लोहि ५१८
स्वगोत्रो वान्यगोत्रो	दा १४१
स्वग्रामज्ञातिसामन्तादाया	कपिल ५००
स्वर्ग्यञ्च दशभिर्युक्तं	वृपरा २.११७
स्वच्छन्दतः प्रदेयानि	आंपू १०८८
स्वच्छन्दं विधवागामि	या २.२३७
स्वच्छं सुशीतलं	भार १४.४३
स्वजनस्यार्थे यदि	वा .१.१६.३२
स्वजनैः ज्ञातिभिस्सद्भिः	लोहि ६०३
स्वजनै र्दूषितःसद्भि	कपिल ८६२
स्वजातवृत्तमो दण्ड	या २.२८९
स्वजातिजायागमने	शाता ५.३६
स्वजातिमुद्वहेत् कन्यां	वृ परा ६.३३
स्वजातीपुरुषा जाता	भार १६.३७
स्वजात्याति क्रमे पुंसामुक्तं	नारद १३.७०
स्वजीवनप्रकारं यो बाल्ये	आंपू १०५२
स्वज्ञानं हृदि सर्वेषां	पु २३
स्वत आत्मनि देवेश	शाण्डि ४.८०
स्वतन्त्रोंवातिहासा	व लोहि ६७१
स्वतंत्रा सर्व एवैते	नारद २.३४
स्वतंत्रोऽपि हि यत्कार्य	नारद २.३६
स्वदक्षिणश्रुतिन्यस्य ब्रह्म	शाण्डि २.९
स्वदत्तांपरदन्तां वा	अ ९२
स्वदत्तांपरदत्तां वा	वृ.गौ. ६.१२६
स्वदारे यस्य संतोष	व्यास ४.४
स्वदासमिच्छेद् यं	नारद ६.४०
स्वदितमिति पित्र्येषु	व १.३.६३
स्वदेशघातिनो ये स्युस्तथा	नारद १८.६७
स्वदेश पण्याच्च	विष्णु ३
स्वदेशपण्ये तु शतं	या २.२५५
स्वदेहमरणिं कृत्वा	बृ.या. २.५५
स्वदेहमरणि कृत्वा	शंख ७.१७
स्वद्रव्यं यत्र विस्रम्भान्	नारद ३.१
स्वधरात्यन्तिके देशे	वृ परा १२.४३
स्वधर्मेण अर्जितायान्नम्	वृ.गौ. ६.३३
स्वधर्मेण यथा नृणां	ल हा ७.१९
स्वधर्मो राज्ञ पालनं	व १.१९.१
स्वधर्मो विजयस्तस्य	मनु १०.११९
स्वधाकारेण निनयेत्	कात्या १३.१३
स्वधानिनयनादेव मन्त्र	लोहि ४२८
स्वधा पितृभ्य इत्यन्नं	आश्व १.१२९
स्वधा वर्जन्यभानेवमेक	व्यास ३.१८
स्वधावाचन लोपोऽस्ति	ब्र.या. ५.८
स्वधाशब्दं पितृस्थाने	आंपू ७८८
स्वधाऽस्त्वित्येव तं	मनु ३.२५२
स्वधोच्यतामिति ब्रूयादृस्तु	वृ परा ७.२७६
स्वनाभिसदृशं ज्ञेयं	भार १५.९१
स्वनामग्रहणेशिष्य	ब्र.या. ८.२३
स्वपत्न्यानीतसद्दीत	कपलि २४१

हीनाङ्ग (स्यात्) स्वयं	भार १८.१८
हीनांगं व्याधिसंयुक्तं	वृ परा ५.३
हीनांगानतिरिक्तांगान्	मनु ४.१४१
हीनातिरक्तं कर्तव्यं	वृ परा ५.७५
हीयते सातियाज्ञानि	शाण्डि ५.३५
हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा	पराशर ११.४९
हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा	मनु ११.२०५
हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा	शंख १७.६०
हुत भुक् पवनो जीव	वृ परा १२.२६१
हुतं दत्त तथाजप्तं	ब्र.या. २.२९
हुतशेषमशेषाणां पात्रे	वृ परा ७.२१४
हुतशेषं न दातव्यं	व्या २९९
हुतशेषं प्रदद्यातु	या १.२३६
हुतशेषं स्वयं भुक्त्वा	वृ हा ५.४६०
हुतशेषं हवि प्राश्य	वृ हा ५.१७५
हुतशेषं हविश्चाऽऽज्यं	आश्व २.७७
हुताग्निहोत्र कृतवैश्वदेव	बौधा २.३.२३
हुताग्निहोत्रमसीनं	अत्रिसं १
हुताग्निहोत्रमासीन	अत्रि १.२
हुताग्निहोत्र विधिवत्	व्या २
हुतायां सायमा हुत्यां	कात्या २१.२
हुताशतप्तं लोहस्य	नारद १९.१५
हुताशनवदास्यानि सुस्थि	भार १२.२०
हुताशनेन संस्पृष्टं	पराशर ६.७१
हुतेन शाम्यते पापं	बौधा २.३.६९
हुत्वाऽऽक्ष्यं जुहुयात्	वृ हा ८.२४७
हुत्वाऽग्नीन् सूर्य देवत्यान्	या १.९९
हुत्वाग्नौ विधिवतमंत्री	ल व्यास २.८८
हुत्वाग्नौ विधिवद्धो	मनु ११.१२०
हुत्वा चरु धृतयुतं	वृ हा ७.१५४
हुत्वा जप्त्वा तथा स्तुत्वा	शाण्डि ५.५
हुत्वाऽऽज्यं विधिवत्	वृ परा ११.३०७
हुत्वा ततः समभ्यर्च्य	व २.३.१९२
हुत्वा तु मंत्ररत्नेन	वृ हा ७.३११
हुत्वाऽथ कृष्णवर्त्मानं	वृ परा ४.१८६
हुत्वांऽथ पौरुषंसूक्तं	वृ हा ५.४५९
हुत्वा मार्जयित्वाद्यैर	व २.४.८५
हुत्वाऽथमूलमंत्रेण	वृ हा २.५२
हुत्वाऽथ वैष्णवै मंत्रै	वृ हा ६.१२६
हुत्वा दत्वा च भुक्त्वा	विश्वा ८.८१
हुत्वानुमंत्रणं कुर्यात्	औ ३.१०८
हुत्वानुमंत्रणं कुर्यात्	ल व्यास २.७६
हुत्वा पुष्पांजलि	वृ हा ५.३३६
हुत्वा पुष्पाणि दत्वा च	वृ हा ७.३०३
हुत्वा प्रयताञ्जलि	बौधा २.१.४२
हुत्वाभिषेचनं कुर्य्यान्	शाता १.२०
हुत्वा मन्त्रेण जुहुयाद्दश	व २.६.३३५
हुत्वा मंत्रेण साहस्रं	वृ हा ७.२३२
हुत्वा लाजांस्तथा होमं	आशव १५.४१
हुत्वा वैष्णवेनैव	वृ हा ७.२०२
हुत्वा व्याहृतिभि	२.३.१८०
हुत्वा सुगन्धि पुष्पाणि	वृ हा ५.४८०
हुत्वा स्त्रिया मुखंतत्र	ब्र.या. ८.२८२
हुवेत्तदाहुतिस्सर्वास्तद्गोत्रा	कपिल ३९६
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां	विष्णु म ३५
हृतं प्रणष्टं यो द्रव्यं	या २.१७५
हृताधिकारां मलिनां	या १.७०
हृत्कण्ठतालुकाभिश्च	व्या ४९
हृतापः कीतिमरण	वृ परा २.११८
हृत्वा धनानि दीनानां	आंपू २६१
हृदयं गमाभिरद्भिः	व १.३.३३
हृदयंगमभिरद्भिः	व २.३.१०२
हृदय धर्मशास्त्राणि	भार १३.१७
हृदयं सर्वलोकानां	बृ.या. ३.१९
हृदयस्थस्य योगे न	शंख ७.१५
हृदयस्थे जगन्नाथे	शाण्डि ४.१९८
हृदयादि चतुर्वर्णं क्रमेणैव	विश्वा ६.५७
हृदयादिषडंगेषु	वृ हा ३.१८८
हृदयादि षडङ्गेषु	व २.६.७०
हृदये दक्षिणाग्निश्च	वृ परा ६.११०